श्रीगोकुलनाथ कृत

अष्टछाप

संकलनकर्ता

धीरेन्द्र वर्म्मा एम० ए०
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
विश्वविद्यालय, प्रयाग,

प्रकाशक
रामनरायन लाल
पब्लिशर और बुकसेलर
इलाहाबाद
१९२९

प्रथम संस्करण १०००] [मूल्य १)

सूची

वक्तव्य

गोकुलनाथ जी ने 'अष्टछाप' नाम से कोई पुस्तक नहीं लिखी है। प्रस्तुत पुस्तक गोकुलनाथ जी के नाम से प्रचलित "८४ वैष्णवन की वार्ता" तथा "२५२ वैष्णवन की वार्ता" शीर्षक ग्रंथों से अष्टछाप कवियो की जीवनियो का सग्रहमात्र है। ८४ वार्ता में महाप्रभु वल्लभाचार्य के सेवको का वर्णन है। सूरदास, कृष्ण दास, परमानन्ददास, तथा कुभनदास महाप्रभु वल्लभाचार्य के सेवको में प्रमुख थे। इनकी जीवनियाँ ८४ वार्ता के अन्त मे एक स्थान पर मिलती हैं और यह वहाँ से ही ली गई हैं। महाप्रभु वल्लभाचार्य के पुत्र तथा उत्तराधिकारी गुसाई विट्ठलनाथ के सेवको का वर्णन २५२ वार्ता मे मिलता है। गुसाईं जी के सेवको में नददास, चतुर्भुजदास, छीत स्वामी तथा गोविद स्वामी ने विशेष प्रसिद्धि प्राप्त की थी और इनकी जीवनियाँ २५२ वार्ता में सबसे प्रथम दी गई हैं। कहा जाता है कि गुसाईं विट्ठल नाथ ने ही अपने तथा अपने पिता के इन चार चार प्रमुख सेवको को लेकर "अष्टछाप" नाम दिया था। अत प्रस्तुत सग्रह के इस नाम के पीछे कुछ ऐतिहासिक तथा साम्प्रदायिक परम्परा है।

इस सग्रह को हिन्दी जनता के सम्मुख रखने में मेरे दो मुख्य उद्देश हैं। भाषा सबधी उद्देश तो है सत्रहवीं सदी के ब्रजभाषा गद्य को सर्व साधारण के लिये सुलभ करना तथा साहित्यिक उद्देश है सूरदास आदि कुछ प्रसिद्ध हिन्दी कवियो की जीवनियों

के इन प्राय समकालीन जीते जागते वर्णनों से हिन्दी प्रेमियों का घनिष्ट परिचय कराना। ८४ तथा २५२ वार्ताओं के अच्छे सस्करण न होने तथा इन ग्रथो के बहुत बड़े होने के कारण उपर्युक्त उद्देशो की पूर्त्ति नहीं हो पा रही थी। इसके अतिरिक्त यह जीवनियां देश की तत्कालीन धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक स्थिति पर भी अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रकाश डालती हैं। राष्ट्रीय जीवन के इन आवश्यक अगो का सच्चा इतिहास लिखने के लिये हिन्दी साहित्य मे कितना भंडार भरा पड़ा है इसका दिग्दर्शन इस छोटे से सग्रह को आद्योपान्त पढ़ने से भली प्रकार हो सकेगा। इस दृष्टि से हिन्दी साहित्य का अध्ययन अभी किया ही नहीं गया है।

इस सग्रह के मूल का आधार डाकोर से प्रकाशित ८४ तथा २५२ वार्ताओं के सवत् १९६० के सस्करण हैं। ८४ वार्ता का डाकोर से एक नया सस्करण निकला है किन्तु इसके तथा पुराने सस्करण के मूल मे विशेष अन्तर नहीं है। ८४ वार्ता का मथुरा से प्रकाशित सवत् १९४० का लिथो का छपा एक दूसरा सस्करण देखने को मिल गया था। इस सस्करण से कुछ महत्वपूर्ण पाठ-भेद फुटनोट मे दे दिये हैं। २५२ वार्ता का न कोई अन्य सस्करण ही मिल सका और न हस्तलिखित प्रति ही अत अन्तिम चार जीवनियो में पाठान्तर नहीं दिये जा सके हैं। पर्याप्त हस्त लिखित प्रतियों अथवा छपे हुये सस्करणो के विना किसी ग्रथ के मूल को

महाप्रभून ने कही जो सूर कछू भगवद् जस वर्णन करो। तब सूरदास जी ने कही जो आज्ञा[1]। सो सूरदास जी ने श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगे एक पद गायैा॥ सो पद॥

राग धनाश्री

हो हरि सब पतितन कैा नायक।
कैा करि सकै बराबर मेरी इतने मान कैा लायक॥ १॥
जो तुम अजामेलि सो कीनी जो पाती लिख पाऊँ।
होय विश्वास[2] भलौ जिय अपने और[3] पतित बुलाऊँ॥ २॥
सिमिटे[4] जहाँ तहाँते सब कोऊ आयजुरे इक ठैार।
अब के इतने आन मिलाऊँ वेर दूसरी और॥ ३॥
होडाहोडी मन हुलास करि करे पाप भरि पेट।
सबहिन ले पायन तरिपरि हैाँ यही हमारी भेट॥ ४॥
ऐसी कितनी कव नाऊँ[5]प्रानपति सुमरन है भयो आडौ।
अबकी वेर निवार लेउ प्रभू सूर पतित कैा ठाडैा॥ ५॥

और पद गायैा।

राग धनाश्री

प्रभु मे सब पतितन कैा टीकैा।
और पतित सब धोस चारिके में तैा जन्मत ही कैा॥ १॥
बधिक अजामिलि गनिका त्यारी और पूतना ही कैा।
मोहि छाडि तुम और उधारे मिटे शूल केसें जीकैा॥ २॥

१ आज्ञा। २ विश्वास। ३ औरहु। ४ सिमिट। ५ कितनीक गनाऊँ।

कोउ न समरथ सेवकरनकौ खेचि कहत हौं लोकौ।
मरियत लाज सूरपतितन मे कहत सघन मे नीकौ॥ ३॥

ऐसौ पद श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगे सूरदास जी ने गायौ सो सुनि के श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने कह्यौ जो सूर है कें ऐसो घिघियात काहे को है कछू भगवल्लीला वर्णन करि। तब सूरदास नें कह्यौ जो महाराज हों तो समझत नाहीं। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो जा स्नान करि आउ हम तोको समझावेंगे[1]। तब सूरदास जी स्नान करि आये तब श्री-महाप्रभू जी नें प्रथम सूरदास जी को नाम सुनायौ पाछें समर्पण करवायौ श्रौर फिर दशम स्कंध की अनुक्रमणिका कही सो तातें सब दोष दूर भये। तातें सूरदास जी कौ नवधा भक्ति सिद्ध भयी। तब सूरदास जी ने भगवल्लीला वर्णन करी। अनु-क्रमणिका तें सपूर्ण लीला फुरी सो क्यों जानियें सो दसमस्कध की सुवोधिनी मे मगलाचरण कौ प्रथम कारिका कीये हैं सो यह श्लोक सूरदास जी नें कह्यौ। सो श्लोक।

नमामि हृदये शेपे लीलाक्षराब्धि सायनम्[2]।
लक्ष्मी सहस्र लीलाभि सेव्यमान कलानिधिम्॥ १॥

श्रौर ताही समय श्रीमहाप्रभून के सन्निधान पद कीये। सो पद। रागबिलावल "चकई री चलि चरण सरोवर जहाँ न प्रेम वियोग।" यह पद सपूर्ण करिकें सूरदास जी ने गायौ। सो यह पद

१ समझावेंगे। २ लीलाक्षराब्धि शायिन।

दशमस्कध के मगलाचरण की कारिका के अनुसार कीयै। सो यामें कह्यौ है जो तहाँ श्रीसहस्त्र सहित नित क्रीडत शोभित। सूरदास या भाँति पद कीये ताते जानी जो सूरदास कें सम्पूर्ण सुबोधिनी स्फुरी। सो श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने जान्यैा जो लीला को अभ्यास भयैा। पाछें सूरदास जी ने नदमहोत्सव कीयैा। सो श्रीआचार्य महाप्रभून के आगे गायैा। राग देवगन्धार। 'ब्रज भयैा महर के पूत। जब यह बात सुनी।" सो यह श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगे गायैा। सो सुनि के श्रीआचार्य जी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये और अपने श्रीमुख ते कहें जो सूरदास मानो निकट ही हुते।

पाछें सूरदास जी ने अपने सेवक कीयै हुते तिन सबन को नाम दिवायैा। पाछे सूरदास जी ने बहुत पद कीये। पाछे श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने सूरदास जी को पुरुषोत्तम सहस्त्रनाम सुनायैा तब सूरदास जी को सम्पूरण भागवत स्फुर्नना भई। पाछें जो पद कीयै सो श्रीभागवत प्रथम स्कधते द्वादश स्कधताई कीये। ताते वे सूरदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा-पात्र भगवदीय हैं। पाछें श्रीआचार्य जी महाप्रभू गऊघाट ऊपर दिन दोय तीन विराजे। पाछें फेरि व्रज को पाव धारे तब सूरदास जी हू श्रीआचार्य जी महाप्रभून के साथ व्रज को आये।

प्रसग २

अब जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू व्रजको पधारे सो प्रथम

श्रीगोकुल पधारे। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून के साथ सूरदास जी हू आये। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने अपने श्रीमुखसों कह्यौ जो सूरदास श्रीगोकुल को दर्शन करौ। सो सूरदास जी ने श्रीगोकुल कों दंडवत करी। सो दंडवतमात्र श्रीगोकुल की वाल लीला सूरदास जी के हृदय में फुरी श्रौर सूरदास जी के हृदय में प्रथम श्रीमहाप्रभून ने सकल लीला श्रीभागवत की स्थापी हैं, ताते दर्शन करत मात्र सूरदास जी कों श्रीगोकुल की वाललीला स्फुर्दना भई। तव सूरदास जी ने विचारयौ मन मे जो श्रीगोकुल की वाललीला को वर्णन करिकैं श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगें सुनाइयै। जन्म लीला को पद तो प्रथम सुनायो है अब श्रीगोकुल की वाललीला को पद गायो। सो पद।

रागविलावल

सो नित करन पुनीत लियै।[१]
घुटुरुवन चलत, रेणुतन मेडूत,[२] सुरत वेप कियै[३] ॥ १ ॥
चारु कपोल लोल लोचन छवि गोरोचन कौ तिलक दियें।
लार लटकन मानो मत[४] मधुपगन माधुरी मधुर पियै ॥ २ ॥
कठुला कंठ वजत, कैहरि नख राजत हैं सखी रुचिर हियें।
धन्य सूर एको पल यह सुख कहा भयो जीयें ॥ ३ ॥

यह पद सूरदास जी ने गायौ। सो सुनि के आप वहुत प्रसन्न भये। पाछें श्रौरहू पद गायौ।

---

१ सोभित कर नवनीत लिये। २ मंडित। ३ मुख लेप किये। ४ मत्त।

तब श्रीमहाप्रभू जी आपने मन मे विचारे जो श्रीनाथ जी के यहाँ और तो सब सेवा कौ मडान भयौ और कीर्तन को मडान नाही कियौ है ताते अब सूरदास जी को दीजियै। तब आप श्री जी द्वार पधारे। सो सूरदास जी कौ साथ लीये ही सो श्रीनाथ जी द्वार जाय पहुँचे। तब आप स्नान करिकें मदिर मे पधारे। तब सूरदास जी सो कह्यौ जो सूरदास ऊपर आउ स्नान करिकें श्रीनाथ जी कौ दर्शन करि। तब सूरदास जी पर्वत ऊपर जायकै श्रीनाथ जी कौ दर्शन कीयौ। तब आपने कह्यौ जो सूरदास कछू श्रीनाथ जी को सुनावो। तब सूरदास जी ने प्रथम विग्यप्त[1] को पद गायौ। सो पद। राग धनाश्री। "अब हौं नाच्यौ वहुत गोपाल।" यह पद सम्पूर्ण करिकें श्रीनाथ जी के आगें गायो। तब श्रीमहाप्रभून जी ने कह्यौ जो अब तौ सूरदास तुममें कछू अविद्या रही नाहीं तुम्हारी अविद्या तो प्रभून ने दूर कीनी ताते कछू भगवयश वर्णन करो। तब सूरदास जी ने महात्म्य और लीला ऐसो जस करिकें गाय सुनायौ। सो पद। राग गौरी। "कौन सुकृत इन ब्रजवासिन कौ।" यह पद सम्पूर्ण करिकै गायो। सो सुनिकें श्रीमहाप्रभू जी वहुत प्रसन्न भये।

सो जेसो श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें मार्ग प्रकाश कीयौ है ताके अनुसार सूरदास जी ने पद कीये। श्रीआचार्य जी महाप्रभून के मार्ग को कहा स्वरूप है महात्म्य ग्यान पूर्वक सुदृढ़ स्नेह कौ यो[2] परमकाष्ठा हैं और स्नेह आगे भगवान को महात्म्य रहत नाहीं

१ विज्ञप्ति। २ तौ।

ताते भगवान वेर वेर महात्म्य जनावत हैं। नाम प्रकरन मे पूतना करि, सकट तृनावर्तकरि, गर्गाचार्य करि, यमलार्जुन करि, वैकुण्ठ दर्शन करी[1], ऐसें करिकें भगवान ने वहुत महात्म्य जनायौ। परि नइ व्रजभक्तिन को स्नेह परमकाष्ठापन्न है ताते ताही समय तौ महात्म्य रहै पाछें विस्मृत हो जाय।

प्रसग ३

और सूरदास जी ने सहस्रावधि[2] पद कीये हैं ताको सागर कहियै सो सब जगत में प्रसिद्ध भये। सो सूरदास जी के पद देशाधिपति ने सुने सो सुनिकें यह विचारौ जो सूरदास जी काहू विधि सो मिले तो भलौ। सो भगवदिच्छा ते सूरदास जी मिले। सो सूरदास जी सों कह्यो देशाधिपति ने जो सूरदास जी मे सुन्यो है जो तुमने बिसनपद वहु[3] कीये हैं जो मोको परमेश्वर[4] नें राज्य दीयौ है सो सब गुनीजन मेरो जस गावत हैं ताते तुमहूं कछू गावौ। तब सूरदास जी ने देशाधिपति के आगे कीर्तन गायौ। सो पद। रागविलावल। "मना रे तू करि माधौ सो प्रीति।" यहपद देशाधिपति के आगे सपूर्ण करिके सूरदास जी नें गायौ। सो यह पद कैसो है जो यह पद को अहर्निश ध्यान रहे तौ भगवद्-नुग्रह की सादा सार्ति रहै, और ससार ते सदा वैराग्य रहै, और कुसग को सदा भय रहै, और भगवदीय के सग की सदा चाह रहै और श्रीठाकुर जी के चरणार्विंद ऊपर सदा स्नेह रहै, देशादि के ऊपर आसक्ति न होय, ऐसो पद देशाधिपति को सुनायौ।

---

१ करि। २ सहस्र विधि। ३ बहुत। ४ परमेश्वर।

सो सुनि के देशाधिपति बहुत प्रसन्न भयो और कह्यौ जो सूरदास जी मोको परमेश्वर[1] ने राज दीनो है सो सब गुनीजन मेरो जस गावत हैं ताते मेरो जस कछू गावैा। तब सूरदास जी ने यह पद गायो। सो पद। राग केदारैा। "नाहिन रह्यौ मनमें ठैार।" यह पद सपूर्ण करि कें सूरदास जी ने गायैा। सो सुनि कें देशाधिपति अकबर बादशाह[2] अपने मन में विचार्यौ जो ये मेरैा जस काहे को गावेंगे जो इनको कछू मेरी बात कैा लालच होय तैा गावैं ये तो परमेश्वर के जन हैं। और सूरदास जी ते (ने) या पद के समात मे गायैा। "हो जो सूर ऐसें दर्श को इमरत[3] लोचन प्यास।" यह गायैा हैा। देशाधिपति ने पूछैा जो सूरदास जी तुम्हारे लोचन तो देखियत नाहीं सो प्यासे कैसें मरत हैं और विन देखें तुम उपमा कैा देत हैा सो तुम कैसें देत हैा। तब सूरदास जी कछू बोले नाहीं। तब फेरि देशाधिपति बोलैा जो इनके लोचन हैं सो तो परमेश्वर के पास हैं सो उहां देखत हैं सो वर्णन करत हैं। तब देशाधिपति नें सूरदास जी के समाधान की मन मे विचारी जो इनको कछू दीयैा चाहिये परि यह तो भगवदीय हैं इनको कछू काइ बात की इच्छा नाहीं। पाछें सूरदास जी देशाधिपति सो विदा होयके श्रीनाथ जी द्वार आये। •

प्रसग ४

एक समय[4] सूरदास जी मार्ग में चले जाते हैं[5] सो कोई[6]

---

१ परमेश्वर। २ पातशाह। ३ ए मरत। ४ समें। ५ जात है। ६ कोऊ।

चौपड़ खेलत हुते। सो या चौपड़ खेल में ऐसे लीन है[1] जो कोऊ आवते जाते की सुधि नाहीं। ऐसे खेल मे मग्न हैं। सो देख सूरदास जी के सग के भगवदीय हैं तिनसो सूरदास जी नें कह्यौ जो देखौ यह प्राणी कैसो अपनौ जनमारो[2] खोवत हैं। भगवान ने तौ मनुष्य देह दीनी है सो तौ अपनी सेवा भज्न के लिये दीनी है सो ये तौ या देह सो हाड कूटत हैं। या मे यह लोकिक सिद्धि नाहीं सो काहे ते जो या लोक में तो अपजस और परलोक मे भगवान ते वहिर्मुख। तातें श्रीठाकुर जी ने इनकों मनुष्य देह दीनी है तिनकों चौपड़ ऐसी खेलनी चाहियै। सो ता समय एक पद सूरदास जी ने अपने सगकेन सो कह्यौ। सोपद।

राग केदारौ

मन तू समझि सोच विचार।
भक्ति बिन भगवान दुर्लभ कहत निगम पुकार॥ १॥
साध सगति डारि फासा फेरि रसना सारि।
दाव अबकें पर्यौ पूरौ उतरि पहिलो पार॥ २॥
षाकसत्रे सुनि अठारे पच[3]ही कें मारि।
दूर ते तजि तीन कौन[4] चमकि चौक विचार॥ ३॥
काम क्रोध जजाल भूल्यौ ठग्यो ठगनी नारि।
सूर हरि कें पद भजन बिन चल्यैा दोउ कर झार॥ ४॥

यह पद सूरदास जी ने अपने सग के भगवदीयन सों कह्यौ।

---

१ हे। २ जमारो। ३ पच। ४ काने।

सो या पद में सूरदास जी ने कहा कह्यौ 'मन तू समझि सोच विचार।' ये तीन्यो वस्तु चैापड़ में चाहियें सोई तीनो वस्तु भगवान के भजन में चाहिये। काहे ते जो समझि न होय तो श्रवण कहा करेगो ताते पहिले तो समझ चहिये। श्रैार सोच कहिये चिंता, सो भगवान के प्राप्त[1] की चिंता न होय तो संसार ऊपर वैराग्य केसे आवै ताते सोच कहिये। श्रैार विचार, जो या जीव को विचार होँ नाहीं तो संग कुसंग में कहा करेगो ताते विचार चाहिये। सो ये तीनो वस्तु हाय तो भगवदीय होय ताते ये तीनो वस्तु भगवदीय को अवश्य चाहिये। श्रैार चैापड में हूं ये तीनो वस्तु चाहिये। समझ कहै गिनवो न आवतो गोट केसे चलै, श्रैार सोच आगम जो मेरे यह दाव पडै तो यह गोट चलूँ, विचार जो वाही में तन मन। जो यह वस्तु होय तो चैापड़ खेली जाय। सो वे सूरदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं[2]।

प्रसंग ५

बहुर सूरदास जी श्रीनाथ जी द्वार आयकें बहुत दिन ताईं श्रीनाथ जी की सेवा कीनी। बीच बीच में श्रीगोकुल श्रीनवनीतप्रिया जी के दर्शन को आवते। सो एक समय श्रीसूरदास जी श्रीगोकुल आये श्रीनवनीतप्रिया जी के दर्शन कीये श्रैार बाललीला के पद बहुत सुनाये। सो श्रीगुसाईं जी सुनिकें बहुत प्रसन्न भये।

---

१ माप्ति। २ हे।

पाछे श्रीगुसाईं जी ने एक पालना संस्कृत में कीयो सो पालना सूरदास जी कों सिखायो। सो पालना सूरदास जी ने श्रीनवनीत प्रिया जी झूलत हुते ता समय गायो। सो पद। राग रामकली। "प्रेम[1] पर्यंक शयन" यह पद सूरदास जी ने सम्पूर्ण करिकें गाय सुनायो श्रीनवनीतप्रिया जी कों। पाछें या पद के भाव के अनुसार बहुत पद किये सो सुनि कें श्रीगुसाईं जी बहुत प्रसन्न भये। पालना के भाव अनुसार पद गायो। सो पद।

राग बिलावल

बाल विनोद आँगन में की डोलनि।
मणिमय भूमि सुभग नदालय बलिबलि गई तोतरी बोलनि ॥१॥
कठुलाकंठ रुचिर केहरि नख ब्रजमाल बहुतई अमोलनि।
वदन सरोज तिलक गोरोचन लरलटिकन मधुगनि लोलनि ॥२॥
लोन्यैा कर परसत आनन पर कछू खाय कछू लग्यौ कपोलनि।
कहें जन सूर कहाँ लो बरनो धन्य नंद जीवन जग तोलनि ॥३॥

गोपाल दुरे हैं माखन खात।
देखि सखी सोभा जो बढ़ी अति स्याम मनोहरि गति ॥१॥
उठि अवलोकि ओट ठाढ़ो है जिह विधि नहीं लखि लेत।
चकित नेन चहूँ दिस चितवत औार सखन को देत ॥२॥
सुन्दर कर आनन समीप हरि राजत यह आकार।
जनु जलरुह तजि वेर विधि सो लाये मिलत उपहार ॥३॥

१ मेघ।

गिरि गिरि परत वदनते ऊपर है दधिसुत के बिंदु ।
मानहु सुधाकन खीरवत पिय जिय दु द[1] ॥४॥
बालविनोद विलोक सूर प्रभू वित भई ब्रज की नारि ।
फुरत न वचन वरजिवे को मनराही[2] विचार विचार ॥५॥

राग जैतश्री

कहाँ लग वरनो सुन्दरताई ।
खेलत कुमर कतिक आँगन मे नेन निरखि सुखभाई ॥१॥
कुलहै[3] लसत श्याम सुदर के बहु विधि रग चिवनाई ।
मानउ नवघन ऊपर राजत मघुवा मनुप्य[4] चढ़ाई ॥२॥
सेतपीत अरु असितलाल सणि[5] लटकनि भाल सराई ।
मानहुँ असुर देव गुरु सो मिलि भूमि जसो[6] समुदाई ॥३॥
अति सुदेश मृदु चिहुर[7] हरत मन मोहन सुख वगराई ।
मानहु मञ्जुल कज[8] ऊपर वरअलि अवलि फिर आई ॥४॥
दूधदत छवि कही न जात कछू अलि पल लय झलकाई ।
किलकत हसन दुरति प्रगटत मानो विंधु[9] मे विपुलताई ॥५॥
खंडत वचन देत पूरन सुख अद्भुत यह उपमाई ।
घुटुरुन चलत उठत प्रमुदित मन सूरदास बलि जाई ॥६॥

राग रामकली

देखो सखी एक अद्भुत रूप ।
एक अम्बुजमध्य देखियत वीस दधिसुत जूप ॥१॥

---

१ चनदिंदु । २ रहि । ३ कुल्है । ४ धनुष । ५ मणि । ६ भूमिज सो ।
७ चिहुर । ८ कमल । ९ विंदु ।

एक अवली दोय जलचर उभे अर्क अनूप ।
पचवार चढ़ि गहि देखियत कहाँ कहा स्वरूप ॥२॥
सिखुगन में भई सोभा कोउ करौ विचार ।
सूर श्रीगोपाल की छवि राखो यह निरधार ॥३॥

ऐसे पद सूरदास जी ने गाये पाछें फेरि श्रीनाथ जी द्वार आये ॥

प्रसंग ६

अब सूरदास जी नें श्रीनाथ जी को सेवा बहुत कीनी बहुत दिन ताई । ता उपरात भगवद् इच्छा जानी जो अब प्रभून की इच्छा बुलायवे की है । यह विचारिकें जो नित्य लीला फलात्मक रासलीला जो जहाँ करे हैं ऐसी परासोली तहाँ सूरदास जी आये । श्रीनाथ जी की ध्वजा कौ दृष्टांत करिकें ध्वजा के साम्है सन्मुख करिकें सूरदास जी सोयै परि अंत करन यह जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू दर्शन देयगे । अब यह देह तौ थकी ताते अब या देह सो श्रीनाथ जी को दर्शन होय तौ जानिये परम भाग्य है । श्रीगुसाईं जी को नाम कृपासिंधु है भक्तन के मनोरथ पूरन कर्त्ता हैं। ऐसे विचार के सूरदास जी श्रीगुसाईं जी कौ चिंतवन करत हैं। श्रौर श्रीगुसाईं जी कैसे कृपासिंधु हैं जैसे सूरदास जी उहाँ स्मरण करत हैं तैसे ही श्रीगुसाईं जी इनको छिनहूँ नहि भूलत है ।

श्रीनाथ जी को सिंगार होतो ता समय सूरदास जी मणि कोठा मे ठाडे ठाडे कीर्तन करते । सो तादिन श्रीगुसाईं जी श्री

नाथ जी कौ सिंगार करत हुते और सूरदास जी कौ कीर्तन करत न देखे तब श्रीगुसाईं जी ने पूछी सूरदास जी नाहीं देखियत सो काहे ते। तब काहू वैष्णवन ने[1] कह्यौ जो महाराज सूरदास जी ताे आज परासोली की ओडी[2] जात देखे है। तब श्रीगुसाईं जी जान्यो जो भगवदि इच्छाते अवसान समे हैं ताते सूरदास जी परासोली गये हैं। तब श्रीगुसाईं जी ने अपने सेवकन सो कह्यौ जो पुष्टमार्ग को जिहाज[3] जात हैं जाको कछू लेनो होय तौ लेउ और जो भगवद् इच्छा ते राजभोग आरती पाछे रहत हैं ताे मे हू आवत हो। पाछे श्रीगुसाईं जी बेर बेर सूरदास जी की खबरि मँगायो करें जो आवै सोई कहै जो महाराज सूरदास ताे अचेत हैं कछू बोलत नाहीं। ऐसे करत श्रीनाथ जी के राजभोग को समय भयो।

सो राजभोग आरती करिकें श्रीगुसाईं जी श्रीगिरिराजते नीचे उतरे सो आप परासोली पधारे। भीतरिया सेवक रामदास जी प्रभृत और कुंभनदास जी और श्रीगुसाईं जी के सेवक गोविंद-स्वामी चत्रभुजदास प्रभृत और सब श्रीगुसाईं जी के साथ आये। सो आवत ही सूरदास जी सो श्रीगुसाईं जी ने पूछी जो सूरदास जी कैसे हैा। तब सूरदास जी ने श्रीगुसाईं जी को दंडोत करिकें कह्यौ जो महाराज आये हो महाराज की वाट देखत हुतो। यह कहिकें सूरदास जी ने एक पद गायो। सो पद।

---

१ वैष्णव ने। २ ओरी। ३ जहाज।

राग सारंग

देखो देखौ हरि जू को एक सुभाव ।
अति गंभीर उदार उदधि प्रभू जान सिरोमनराय ॥१॥
राई जितनी सेवा को फल मानत मेरु समान ।
समझि दास अपराध सिंधु सम बूंद न एकौ जानि ॥२॥

बदन प्रसन्न कमलपद सन्मुख दीखत ही है ऐसें ।
ऐसें बिमुखहू भये कृपा या मुख की[1] तब देखौ तब तैसे ॥३॥
भक्त विरह करत करुणामय डोलत पाछें लागे ।
सूरदास ऐसे प्रभू को कत दीजै पीठ अभागे ॥४॥

यह पद सूरदास जी ने कह्यौ । सो सुनिकें श्रीगुसाईं जी बहुत प्रसन्न भये श्रौर कह्यौ जो ऐसो दैन्य प्रभू अपने सेवकन को देहि या दैन्य के पात्र एही है। तब था बेर श्रीगुसाईं जी पास ठाडे हुते श्रौर चत्रभुजदास हू ठाडे हुते। तब चत्रभुजदास ने कह्यौ जो सूरदास जी ने भगवद् जस वर्णन कीयो परि श्रीआचार्य जी महाप्रभून को जस वर्णन ना कीयो। तब यह वचन सुनिकें सूरदास जी बोले जो मे तो सब श्रीआचार्य जी महाप्रभून को ही जस वर्णन कीयौ है कछू न्यारौ देखूं तो न्यारौ करूं परि तेरे साथ कहत हैा या भांति कहिकें सूरदास जी ने एक पद कह्यौ। सो पद।

---

१ कृपाया मुख की ।

राग विहागरो

भरोसो दृढ़ इन चरनन केरो ।
श्रीवल्लभ नखचद्र छटा विनु सब जगमांझि अंधेरो ॥१॥
साधन और नहीं या कलिमे जासो होत निवेरो ।
सूर कहा कहि दुविधि आंधिरो[1] विना मोल कौ चेरो ॥२॥

यह पद कह्यो । पाछे सूरदास जी को मूर्छा आई । तव श्री गुसाईं जी कहें जो सूरदास जी चित्त की वृत्ति कहां है । तव सूरदास जी ने एक पद और कह्यौ । सो पद ।

राग विहागरो

बलि बलि बलि हो कुमर राधिका नंदसुवन जासो रति मानी ।
वे अति चतुर तुम चतुर सिरोमन प्रीति करी कैसें होत है छानी ॥१॥
वे जु धरत तन कनक पीत पट सो तो सब तेरी गति ठानी ।
ते पुनि श्याम सहेज वे शोभा अंबर मिस अपने उर आनी ॥२॥
पुलकित अंग अब ही है आयो निरखि देखि निज देह सयानी ।
सूर सुजान सखी के बूझे प्रेम प्रकाश भयो विहसानी ॥३॥

यह पद कह्यौ इतनो कहिकें सूरदास जी को चित श्रीठाकुर जी को श्रीमुख तामें करुणारस के भरे नेत्र देखे । तव श्रीगुसाईं जी ने पूछो जो सूरदास जी नेत्र की वृत्ति कहां है । तव सूरदास जी ने एक पद और कह्यौ । सो पद ।

---

१ आंधेरो ।

राग बिहागरो

खजन नैन रूपरस माते।

अतिसे चारु चपल अनियारे पल पिंजरा न समाते।

चलि चलि जात निकट श्रवन[1] के उलटि पुलटि ताटक[2] फँदाते।

सूरदास अंजल[3] गुण अटके नातर अब उडि जाते ॥१॥

इतनो कहत ही सूरदास जी ने या शरीर को त्याग कीयो। सो भगवल्लीला में प्राप्त भये। पाछें श्रीगुसाईं जी सब सेवकन सहित श्रीगोवर्द्धन आये। ताते सूरदास जो श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं सो इनकी वार्ता कहाँ ताईं लिखिये। प्रसग ॥ ६ ॥ वैष्णव ॥ ८८ ॥

---

१ श्रवण। २ ताटक। ३ अंजन।

अथ कृष्णदास अधिकारी तिनकी वार्ता

— ० —

प्रसंग १

सो वे कृष्णदास शूद्र एक बेर द्वारिका गये हुते। सो श्रीरण छोर जी के दर्शन करिकें तहाँ ते चले । सो आपन[1] मीराबाई के गाँव आये। सो वे कृष्णदास मीराबाई के घर गये । तहाँ हरिवंश व्यास आदि दै विशेष सह वैष्णव हुते। सो काहू को आये आठ दिन, काहू को आये दश दिन, काहू को आये पन्द्रह दिन भये हुते। तिनकी विदा न भई हुती। और कृष्णदास नें तौ आवत ही कही जो हूँ तो चलूँगो। तब मीराबाई ने कही जो बैठो। तब कितनेक मोहोर श्रीनाथ जी को देन लागी। सो कृष्णदास नें न लीनी और कह्यौ जो तू श्रीआचार्य जी महाप्रभून की सेवक नाहीं होत ताते तेरी भेट हम हाथ ते छूवेंगे नाहीं। सो ऐसे कहि कें कृष्णदास उहाँ ते उठि चले। सो जब आगे आये तब एक वैष्णवन नें कह्यौ जो तुमने श्रीनाथ की भेट नाहीं लीनी। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो भेट की कहा[2] है परि मीराबाई के यहाँ जितने सेवक बैठे हुते तिन सबन की नाक नीचे करिकें भेट फेरी है इतने इकठौर कहाँ मिलतें। यह हू जानेंगे जो एक बेर शूद्र श्री-

१ आपन। २ वैष्णव। ३ कहा।

आचार्य जी महाप्रभून कौ सेवक आयो हुतो ताने भेट न लीनी तो तिनके गुरु की कहा बात होयगी ॥

प्रसंग २

और प्रथम सेवा श्रीनाथ जी की बंगाली करते। सो श्री आचार्य जी महाप्रभून नें मकुट[1] काछनी हीरा के आभरन भराय दीने हैं[2] सो नित्य करते[3]। सो भेट आवतीं सो खरच होती, कछू संग्रह न राखते, सब खरच होय जातौ, और बंगाली सेवा करते। पाछें श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने कृष्णदास कौं आज्ञा दीनी जो तुम श्रीगोवर्द्धन रहौ सेवा टहल करौ तब कृष्णदास अधिकारी भये, अधिकार करन लागे।

पाछे एक दिन मथुरा कौ चलन लागे सो अडींगलों पहुँचे तब पेंडे में अवधूतदास मिले। महापुरुष हुते ब्रज में फिरयौ करते सो कृष्णदास कौ मिले। तब अवधूतदास ने कह्यौ जो कृष्णदास तुम कहाँ चले। तब कृष्णदास ने कही जो मथुरा जात हौं कछू काम है। तब अवधूतदास ने पूछी जो श्रीनाथ जी की सेवा कौन करत है। तब कृष्णदास ने कही जो बंगाली करत हैं। तब अवधूतदास ने कही जो श्रीनाथ जी कौ अपनौ वैभव वढ़ावनो है ताते तुम बंगालीन को दूर क्यो नाहीं करत। सो अवधूतदास सों श्रीनाथ जी ने कह्यो जो मोकों बंगाली बहुत दुःख देत हैं। सो तब बंगाली श्रीनाथ जी को भोग धरते सो उनकी चुटि[4] में छोटो सो स्वरूप हुतौ

१ मुकट। २ दे। ३ धरते। ४ चुटिया।

देवी को सो सामने बैठावने जब भोग सरावते। वा देवी कौ अपनी कुटिया में धर लेते ऐसे सदा करते। सो बात अवधूतदास कौ श्रीनाथ जी ने जनाई ताते अवधूतदास ने कृष्णदास सो कह्यौ जो तुम बगालीन को दूर करो। तब कृष्णदास ने कह्यो जो श्रीगुसाई जी की आज्ञा विना कैसे काढ़ें। तब अवधूतदास ने कह्यौ जो तुम अडेल में जायके श्रीगुसांई जी की आज्ञा ले आवो। जैसे बने तैसे इन बगालीन को काढो।

तब कृष्णदास अर्डींगते फिरे। सो श्रीगोवर्द्धन आये। तब बंगालीन सो कह्यौ जो हूँ तौ श्रीगुसाई जी के पास आडेल जात हों तुम श्रीनाथ जी की सेवा सावधानी सो किरयो[1]। और सब सेवक हुते तिनसो कृष्णदास ने कह्यौ जो हूँ तो श्रीगुसाई जी के पास कछू काम है सो अडेल को जात हो तुम सावधान रहियो। ता पाछें श्रीनाथ जी सो विदा होय के अडेल को चले। सो दिन १५ में श्रीगुसाई जी के पास आप पहुँचे सो आयके श्रीगुसाई को दडौत कीये। तब श्रीगुसाई जी ने पूछो जो कृष्णदास तुम क्यो आयो। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो श्रीनाथ जी को अपनो वैभव वढ़ावनो है और बगालीन ने बहुत माथौ उठायौ है जो भेट आवत है सो ले जात हैं सो सब अपने गुरुन को देत हैं।

तब श्रीगुसाई जी कहें जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू असुर व्यामोह लीला दिखाई। ता पाछें श्रीगोपीनाथ जी पूरब को परदेश कीयो सो एक लक्ष की भेटभई। पाछें अडेल आये। तब श्रीगोपी-

[1] करियो।

नाथ जी ने कही जो यह पहलो परदेश है ताते यामें आयौ सो सब श्रीनाथ जी कौ है श्रीनाथ जी कों विनियोग कियो चाहिये। ता पाछें श्रीगोपीनाथ जी दिन दश बारह रहके पाछें श्रीनाथ जी द्वार पधारे। सो जाय पहुँचे। तब श्री गोपीनाथ जी ने दर्शन कीयो। पाछें जो लाये हुते सो सब भेट कियो। आभूखन सब जड़ाव के समराये। थार कटोरा डबरा चमचा तष्टी प्रभृत सब सोना रूपा के किये। सब करिकै श्रीनाथ जी सो विदा होयकें श्रीगोपीनाथ जी अडेल आये। ता पाछें बगाली बरस एक कें भीतर सब ले गये। अपने गुरु के यहाँ जाय के दीयो। यह बात श्रीगुसाँई जी ने कृष्णदास सों कही और कह्यौ जो बगालीन ने माथौ उठायो परि वे श्रीआचार्य जी महाप्रभून के राखे हैं सो कैसे निकलेंगे।

तब कृष्णदास ने श्रीगुसाई जी सो कह्यौ जो महाराज श्रीनाथ जी की आज्ञा है जो बगालीन कों निकासो ताते आप या बात मे कछू मति बोलौ। मोको आप आज्ञा करो तो अपनो आप कर लेउगो। जेसे बगाली निकसेंगे तेसे काढूँगो। तब श्रीगुसाई जी ने कह्यौ जो अवश्य। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो महाराज दोय पत्र लिखये, एक राजा टोडरमल्ल के नाम कौ एक बीरबल के नाम कौ। तब श्रीगुसाई जी ने दोय पत्र लिख दीने राजा टोडर मल्ल कौ और बीरबल को। लिखो जो कृष्णदास को श्रीनाथ जी द्वार भेजे हैं जो तुमसो कृष्ण दास कहैं सो करि देउगे[1]। सो पत्र लेके श्रीनाथ

[1] देउगे।

द्वारिका[1] को चले। सो आगरे आये। तहाँ टोडरमल्ल राजा बीर बल सो मिले। पत्र श्रीगुसाईं जी के हुते सो दीये। सो उन पत्र बाँचि के कृष्णदास सो कह्यौ जो तुम कहो तैसें करें। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो अब तो में मथुरा जात हैा बगालीन को काढिवे को।

ता पाछें कृष्णदास राजा टोडरमल्ल सो विदा होय कें श्रीनाथ जी द्वार को चले। सो मथुरा आये। तब मार्ग मे अवधूतदास मिले। तब कृष्णदास सो अवधूतदास ने कही जो कृष्णदास जी ढील कहा करि राखी है बगालीन को काढो, श्रीनाथ जी की ऐसी इच्छा है, श्रीनाथ जी को अपनो वैभव फैलावनो हैं। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो श्रीगुसाईं जी की आज्ञा लेके आयो हो अब जाय कें बगालीन कैा काढत हो। इतनो कहिकें कृष्णदास चले। सो श्रीनाथ जी द्वार आये। सो वे बगाली सब रुद्रकुंड ऊपर रहते सो उहाँ उनकी झोपरी हुती। सो कृष्णदास ने जराय दीनी। तब सोर भयैा। तब बगाली सेवा छोड के पर्वत के नीचे आये। तब कृष्णदास ने पर्वत ऊपर अपने मनुष्य पठाय दिये। तब बगाली देखे तो कृष्णदास नें झोपरी मे आग लगाय दीनी है। तब सब बगाली कृष्णदास सो लरन लागे। तब कृष्णदास ने द्वै द्वै चार चार लाठी सबन में दीनी।

तब वे बगाली तहाँ ते भाजे सो मथुरा आये। तब रूपसनातन के पास आयकै सब बात कही। तब इतने मे कृष्णदास

1 श्रीनाथ जी द्वार।

हू आय ठाडे भये । तब रूपसनातन ने कृष्णदास के ऊपर खीज कें कह्यौ जो क्यों रे शूद्र तू कौन जो इन ब्राह्मणन को मारे। तब कृष्णदास ने कही जो हूँ शूद्र हौं परि तुम हू तौ अग्निहोत्री नाहीं, तुमहू तो कायस्थ हौ। तब सनातन ने कह्यौ जो यह बात पातसाह सुनेगौ तौ तू कहा जवाब देयगो। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो हाँ तो नीके जवाब देउंगो परि तुमको जुवाब देत में दुःख होयगो, और तुमकों जुवाब आवेगो[1] जो तुम कायस्थ होयकै इन ब्राह्मणन सों दडौत करावत हौ। तब रूप सनातन तौ चुप ह्वै रहे और वगालीन सो कह्यौ जो तुम जानो ये जानों।

तब बगाली मथुरा के हाकिम पास गये। तब कृष्णदास जाय ठाडे भये। तब हाकिम ने कह्यौ जो भयौ सो तो भयौ परि अब इनकौ राखौ। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो अब तौ इनका[2] न राखेगें। ये तौ हमारे चाकर हुते सो हमने इनकों सेवा सोपी हुती सो ये सेवा छोड़ कें क्यों आये। जो इनकी झोपरी जर गई हुती तौ हम नई छुवाय देते ताते अब हम तौ न राखेंगे। ताऊपर तुम कहत हौ जो हम श्रीगुसांई जी को लिखेंगे। वे कहेंगे तेसे करेंगे। तुम श्रीगुसांई जी को लिखौ।

पाछें कृष्णदास श्रीनाथ जी द्वार आये और बगाली सब अपने श्रीकुड आये। तब कृष्णदास ने श्रीगुसाई जी को पत्र लिखौ तामें बगाली काढे सो सब समाचार विस्तार करिकै लिखे और लिख्यौ

१ म आवेगो। २ इनको।

जो अब पधारिये तो भलो है। सो पत्र श्रीगुसाईं जी के पास अडेल आयो। ता पाछे श्रीगुसाईं जी अडेल ते चले सो श्रीनाथ जी द्वार आये। तब वे बगाली सब आये। तब श्रीगुसाईं जी सों कह्यौ जो हमकों श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने सेवा में राखे हुते सो कृष्णदास ने हमको काढे। तब श्रीगुसाईं जी ने कह्यौ जो तुम सेवा छोड़ के क्यो गये दोष तुम्हारो है ताते अब तो सेवा में न राखेंगे।

तब वा[1] बगाली बहुत बीनती करन लागे जो महाराज अब हम खांयगे कहा। तब श्री गुसाईं जी ने इनको श्री नाथ जी के बदले श्री मदन मोहन जी की सेवा दीनी और कह्यो जो इनकी सेवा तुम करियो जो आवै सो खाइयो। तब वे बगाली श्री मदन मोहन जी की सेवा करन लागे ताते उन बगालीन ने श्री गोवर्द्धन पहिचौं छोड़ दीयौ। ता पाछें श्रीनाथ जी की सेवा में गुजराती ब्राह्मण भीतरिया राखे। श्रीनाथ जी कैा अपनो वेभव बढ़ावनो हा सो सब भीतरियान कैा नेग और सब सेवकन को नेग जो जा भांति श्रीनाथ जी ने कह्या ता भांति श्रीगुसाईं जी ने बांधे। तब तो श्रीनाथ जी की सेवा प्रनालिका ते होन लागी और कृष्णदास अधिकार करन लागे।

प्रसग ३

बहिर[2] श्रीनाथ जी ने कृष्णदास को आज्ञा दीनि[3] जो श्याम तिं[4] को लेकें ताल पखावज ले कें तू परासोली में आईयौ।

१ वे। २ बहुरि। ३ दीनी। ४ फुनरि।

सो श्यामकुमर आछै मृदग बजावते । सो श्रीनाथ जी की सैन आरती उपरात अनोसर भयो तब कृष्णदास श्यामकुमर के घर गये । तब कृष्णदास ने श्यामकुमर सो कही जो श्री नाथ जी ने आज्ञाकरी है सो मृदग ले के परासोली चलैा । तब श्यामकुमर ने कह्यौ जो मोहू को श्रीनाथ जी ने आज्ञाकरी है ताते चलिये । तब श्यामकुमर मृदग ले के आयौ ।

तब कृष्णदास श्रोर श्यामकुमर ये दोऊ जने परासोली सो देखे तैा श्रीनाथ जी स्वामिनी जी सहित बिराजे हैं । तब श्री नाथ जी ने श्यामकुमर सो कह्यो जो तू तैा मृदग बजाय, श्रोर कृष्णदास सो कह्यौ जो तू कीर्तन करि श्रोर श्रीनाथ जी श्रोर श्रीस्वामिनी जी नृत्य कीयौ । तहाँ कृष्णदास ने पद गायौ । सो पद ।

राग केदारौ ।

श्री वृषभानुनन्दनी नाचत गिरधर सग
लाग डाट उरपतिरपरास सग राखैा ।
झपताल मिल्यौ राग केदारो
सप्तसुरन अब घर तान रग राख्यौ ॥
पाई सुरा सिद्धि भरतकाम विविध रिद्धि
अभिनव दल लसत सुहाग हुलास रग राख्यौ ।
वनिता सत जूथ सग लिये निरखत क्यो सघस[1]
चद वलिहारी कृष्णदास सुधर[2] रग राखौ ॥

१ सघन । २ सुघर ।

यह पद कृष्णदास ने गायो । श्यामकुमर ने मृदंग बजायौ। श्रीनाथ जी और स्वामिनी जी नृत्य कीयौ। तातें श्रीमहाप्रभू जी की कानि ते श्रीनाथजी कृष्णदास के ऊपर ऐसी कृपा करत हुते।

प्रसंग ४

और कृष्णदास नें बहुत पद कीये। तब एक समय सूरदास जी नें कृष्णदास सो पूछी जो तुम पद करत हो ता में मेरी छाया है। तब कृष्णदास ने सूरदास जी सो कह्यौ जो अब के ऐसो पद करूँ जो जामें तुम्हारी छाया न आवे। तब कृष्णदास एकांत में बेठिकें एकाग्रचित्त करिकें नयौ पद करन लागे जो जामें तीन तुक को[1] कीयो और चौथी तुक बने नाहीं। तब घडी दोयलो विचारे जो आगें तुक चलत नाही तो भलो फेरि प्रसाद लेकें विचारेंगे। सो जा पत्र में लिखत हुते सो पत्र तथा द्वाति लेखनी उहाँई धरि कै प्रसाद लेवे को उठे।

जब कृष्णदास प्रसाद लेवे को बैठे तब श्रीनाथ जी ने आप तीन तुक था पत्र मे अपने श्रीहस्त सो लिख दीये। कृष्णदास ने आधो पद कियो हुतो ताको आप श्रीनाथ जी पूरो करिकै आप तो पधारे। ता पाछें कृष्णदास प्रसाद लेकें आये तब देखो तो श्रीनाथ जी पूरो पद करिकै श्रीहस्त सो लिखि गयै हैं। सो देख के कृष्णदास बहुत प्रसन्न भयो और कहें जो सूरदास जी आवें तो पद सुनाऊँ। तब उत्थापन के समय सूरदास जी दर्शन को

१ तो।

आये तब कृष्णदास ने कह्यौ जो सूरदास जी नयो पद एक मेने कीयो है तामे तुम्हारी छाया नाहीं धरी। तब सूरदास जी ने कह्यौ जो कहो सुनो तो जानो। तब पद कह्यौ। सो पद।

राग गौरी

आवत बने कान्ह गोपबालक संग
नेंचुकी खुर रेणु छुरतु[1] अलकावली॥
भौहें मनमथ चाप वक्र लोचन बान
सीस सोभित मत्त मयूर चन्द्रावली॥
उदित उडुराज सुन्दर सिरोमणि वदन
निरखि फूली नवल जुवती कुमुदावली॥
अरुण सकुच अधर बिंबफल हसात
कहत कछुक प्रकटित होत कुंद रसनावली।
श्रवण कुंडल भाल तिलक बेसरि नाक
कंठ कौस्तुभ मणि सुभग त्रिबलावली॥
रत्न हाटक खचित पुरसि पदिक निपाति
बीच राजत सुभ पुलक मुक्तावली॥

अथ श्रीनाथ जी कृत।

बलय कंकण बाजूबंद आजानुभुज
मुद्रिका कर दल बिराजत नखावली॥
कण[2]तर मुरलिका मोहित अखिल विश्व
गोपिका जनमसि ग्रसथित प्रेमावली॥

---

१ छुरित। २ कुच।

कटि क्षुद्र घटिका जटित हीरामयी
नाभि अम्बुज वलित भृगरोमावली।
धायक वहुक चलत भक्त हित जानि पिय
गड मण्डल रुचिर श्रमजल कणावली॥
पीत कौसय परिधाने सुन्दर अग चरण
नुपुरवाद्य गीत सवदावली॥
हृदय कृष्णदास गिरवर धरण लाल की
चरण नख चन्द्रिका हरति तिमिरावली॥

यह पद कृष्णदास नें सूरदास जी के आगे कह्यौ। सो सूर-
ास जी तीन तुक तांहि तो बोले नाहीं। और तीन तुक के आगे
हन लागे तब सूरदास जी ने कृष्णदास सो कह्यो जो कृष्ण-
ास मेरे तुमसो वाद है और प्रभून सो वाद नाहीं में प्रभून की
ानीं पहिचानत हों। तब कृष्णदास चुप कर रहे। ताते कृष्णदास
ेसे भगवदीय हैं।

प्रसग ५

और एक समय श्रीनाथ जी के भंडार में कछू सामग्री चाहि-
त हुती। सो कृष्णदास गाडा लेकें आगरे कैा आये। सो आगरे
े बाजार में एक वेश्या नृत्य करत हुती। ख्याल टप्पा गावत हुती
ोर भीर हुती। सब लोग तमासो देखत हुते। सो कृष्णदास
ाजार में तमासे में जाय ठाडे भये। तब भीर सरक गई तब
ह वेश्या कृष्णदास के आगें नृत्य करन लागी। सो यह वेश्या

वहुत सुन्दर, और गावै बहुत आछौ, नृत्य तैसोई करे। सो कृष्ण दास वा वेश्या के ऊपर रीझे और मन में कहें जो यह तो श्रीनाथ जी के लायक है। ता पाछे वा वेश्या को दशमुद्रा तो यहाँ ही दिये और कही जो रात्रि को समाज सहित आइयो। ता पाछे कृष्णदास उहाँ हवेली मे उतरे। सो सामग्री चाहियत हुती सो सब लेके गाडा लदाय सिद्धि करवायो।

ता पाछे रात्रि पहर गई। तब वेश्या समाजसहित आई। ता पाछे नृत्य भयो गान भायो। वापे कृष्णदास बहुत रीझें सो रुपैया सत एक दिये। तब वा वेश्या सो कह्यो जो तेरो गान हू आछो और नृत्य हू आछो परि हमारो सेठ है सो तेरे ख्याल टप्पा ऊपर रीझेगो नाहीं ताते हों कहो सो गाइयो। ता पाछे कृष्णदास ने एक पूरबी राग में पद करि कें सिखायो। ता पाछें दूसरे दिन वा वेश्या को साथ ले के चले सो आगरे ते आये। पाछे तीसरे दिन श्रीनाथ जी द्वार आये। सामग्री सब भडार मे धराई। ता पाछे जव उत्थापन को समय भयो तब कीर्तनियाँ काहू को बागे[1] न दीये। तब वा वेश्या को समाज सहित ले गये। श्री गुसाँई जी मदिर मे ठाड़े श्रीनाथ जी को मूढा[2] करत है और मणि कोठा में वेश्या नृत्य करन लागी और यह पद गायो ॥ सो पद ॥

राग पूरबी ॥

मोमन गिरधर छवि पर अटक्यो।
ललित त्रभगी अगन परि चलि गयो तहाई ठटक्यो ॥ १ ॥

१ बागे सैनाम । २ मूढा ।

सजल श्यामघन चरण नीलहै फिर चित अनित न आनि तन भटक्यौ।
कृष्णदास कियौ प्राण न्योछावरि यह तन जग सिर पटक्यौ ॥२॥

यह पद वा वेश्या ने गायौ। सो जब गावत गावत पिछली तुक आई जो "कृष्णदास कियौ प्राण न्यौछावर यह तन जगसिर पटक्यो" इतनो कहत मात्र वा वेश्या के प्रान ततकाल निकसि गये और दिव्य स्वरूप धरि के श्रीनाथ जी की लीला मे प्राप्त भई। और वा वेश्या के समाजी हुते सो मरन लागे जो हमारी तौ या तं जीविका हुती अब हम कहा खायगे। तब कृष्णदास नें कह्यो जो तुम क्यो रोवत हो चलो नीचे खायवे को देऊॅ। तब उन समाजिन को नीचे लायकें कृष्णदास नें सहस्र रुपया द विदा किये।

कृष्णदास ने अपने मनते समर्पी ताते श्रीनाथ जी ने वा वेश्या को अगीकार करी। ताते श्रीआचार्य जी महाप्रभून की कानि तें सेवक की समर्पी वस्तु या भाति सो अगीकार करत हैं।

प्रसग ५

और कृष्णदास को गगावाई सो बहुत स्नेह हुतो सो श्रीगुसाँई जी को न सुहावतो। सो एक दिन श्रीगुसाँई जी श्रीनाथ जी कों भोग समर्पित हुते सो सामग्री ऊपर गगाबाई की दृष्टी परी ताते श्रीनाथ जी आरोगे नाहीं। परि भोग तो समर्प्यौ। ता पाछे समय भयौ तब भोग सरायो। तब आरती करि अनोसरि करि कें श्रीगुसाँई जी आप नीचे पधारे। तब सेवक आदि

भीतरिया सब ने प्रसाद लीयौ। तब श्रीगुसांईं जी आप तौ भोजन करिकें पोढे। तब श्रीनाथ जी नें भीतरिया कों लात मारि कें जगायौ और वासूं कहें जो हूं तौ भूखो हूं। तब वा[1] भीतरिया ने कह्यौ जो महाराज श्रीगुसांईं जी नें भोग समर्प्यौ है और तुम भूखे क्यो रहे। तब श्रीनाथ जी ने कही जो राजभोग में तो गगाबाई की दृष्टि परी हुती तातें राजभोग आरोग्यौ नाहीं।

तब वा भीतरिया उठि श्रीगुसांईं जी के पास आयौ। सो श्री गुसांईं जी भोजन करिकें पोढे हुते। तब भीतरिया ने आयकें श्रीगुसांईं जी के चरण दाबे। तब श्रीगुसांईं जी चौंकि उठे तब देखें तौ श्रीनाथ जी को भीतरिया है। तब वा भीतरिया सों पूछी जो यहां इतनी बेर कहां आयौ है। तब वा भीतरिया ने कह्यौ जो महाराज आज श्रीनाथ जी भूखे हैं मोको लात मारिके जगायौ और कह्यौ जो आज तौ मैं भूखोहौं। तब मेंने श्रीनाथ जी सो कह्यौ जो महाराज भोग तो श्रीगुसांईं जी ने समर्प्यौ है तुम भूखे क्यो रहे। तब श्रीनाथ जी ने कही जो सामग्री पर तो गगाबाई की दृष्टि परी तातें मे नाहीं आरोग्यौ।

तब श्रीगुसांईं जी सुनत ही ततकाल स्नान करिकें श्रीगुसांईं जी के साथ ही आयौ। तब श्रीगुसांईं जी नें वा भीतरिया सो कही जो भात और बड़ी करो जो तत्काल सिद्ध होय आवे। तब भात और बडी करी सो तत्काल सिद्ध भयो। तब श्रीनाथ जी कौं भोग समर्प्यौं। पाछें भीतरिया रसोई करिकें स्नान करिकें पर्वत

[1] वह।

ऊपर आये। तब श्रीगुसाईं जी की आज्ञा भई जो राज भोग की सामग्री तो भई सिद्धि ता पाछें राज भोग सेन भोग इकठौरो समर्प्यो। ता पाछें समय भयो। तब भोग सराय सेन आरती करी। तब श्रीनाथ जी को पोढाये भोग सरयो हो सो प्रसाद एक डवरा में उढ़ाई रह गयो। तब रामदास भीतरिया ने कही जे पहले भोग समर्प्यो हुतो सो उहा ही रह गयो। तब श्रीगुसाँई जी डवरा में ते ठलाय के लेत उतरे। पाछें सब सेवकन कौं वह वडी भात को महाप्रसाद रचक रचक बाँटि दीनो। ता पाछे श्री गुसाँई जी आप हू आरोगे। सो यह वडी भात को प्रसाद अति अद्भुत भयो। अति अलौकिक स्वाद भयो। सो श्री गुसाँई जी आप सरायो। तब कृष्णदास ठाडे हुते। तब कृष्णदास ने कही जो महाराज आप ही करन हारे आप ही आरोगन हारे तो क्यो न उत्तम होय। तब श्रीगुसाईं जी ने हस के कही जो यह तुम्हारे ही कीये भोगत हैं।

प्रसंग ७

अब जो यह वात श्रीगुसाईं जी ने कही जो यह तुम्हारे ही कीये फल भोगत हैं सो यह वात सुनिकें कृष्णदास ने श्रीगुसाईं जी सो बिगाडी। तब श्रीगुसाईं जी सो श्रीकृष्णदास ने कही जो तुम पर्वत ऊपर मति चढो। तब श्रीगुसाईं जी आप तौ तहाँ ते फिरे सो परासोली मे आय रहे। तब मन मे विचारो जो कृष्णदास कहा मने करेगो परि श्रीनाथ जी की इच्छा ऐसी है

सो श्रीनाथ जी की इच्छा जानि कें कछू वोले नाहीं। सो आप परासोली मे रहै। सो परासोली में ध्वजा के साम्है वेठि कै विज्ञप्ति कियौ। और श्रीगुसाईं जी तीन दिन तो श्रीगोवर्द्धन रहते और तीन दिन श्रीगोकुल रहते। तव ते परासोली आय रहै। तब श्रीगुसाईं जी के मदिर की खिरकी परासोली की और पडती ताके साम्है वेठिते। तव श्रीनाथ जी आप खिरकी में आय दर्शन देते। तव यह जानि कै कृष्णदास नें परासोली की और की खिरकी वनवाय दीनी तव ते श्रीगुसाईं जी गोकुल ते जव परासोली आवते तव रामदास जी सव सेवक आदि दे श्रीनाथ जो के राजभोग आरती करिकै अनोसरि करिकै श्री-गुसाईं जी के दर्शन को परासोली आवते। सो आय कें चर णोदक लेय पाछें प्रसाद लेते। सो कृष्णदास को सुहावतो नाहीं। और सव सेवक श्रीगुसाईं जी के दर्शन विना महाप्रसाद कैसे लेंय। परि सेवकन सो कृष्णदास की चले नाहीं।

और श्रीगुसाईं जी एक पत्र लिखिकें रामदास भीतरिया को देते और कहते जो श्रीनाथ जी को दे दीजे। सो पत्र श्रीनाथ जी को देते। श्रीनाथ जी विज्ञप्त उत्तर लिखिकें रामदास को देते। सो रामदास श्रीगुसाईं जी को देते। तव श्रीगुसाईं जी या पत्र को वांचि कै पानी मे पी जाते। या भांति सो छै महीना वीते परि श्रीगुसाईं जी नें श्रीनाथ जी को अधिकारी वैष्णव जानि कै और श्रीआचार्य जी महाप्रभून को सेवक जानि कछु न कह्यौ। परि श्री नाथ जी के विरह को स्नेह बहुत करते। या भांति छै महीना भयै।

तब एक दिन राजा बीरबल आय निकसे। तब ता दिन तो श्रीगुसाईं जी परासोली हुते। श्रीगिरधर जी घर हुते। तब राजा बीरबल ने श्रीगुसाईं जी कौ खबर कराई। तब पोरियान नें कही जो श्रीगुसाईं जी तौ परासोली है श्रीगिरधर जी घर है। तब राजा श्रीगिरधर जी के दर्शन को आये। तब बीरबल सो श्रीगिरधर जी ने कही जो कृष्णदास अधिकारी काका जी कौ श्रीनाथ जी के दर्शन नाहीं करन देत, सो काका जी को खेद बहुत होत है, काका जी परासोली मे जाय दर्शन करत है। तब बीरबल ने श्रीगिरधर जी सो कह्यो जो अब हूँ जाय कै कृष्णदास को काढूँगो। यो कहि कें राजा बीरबल श्रीगिरधर जी सो विदा होय कें मथुरा आयै और श्रीगुसाईं जी परासोली ते श्रीगोकुल आये। और बीरबल ने पाच सो मनुष्य भेजे और कह्यौ जो कृष्णदास को पकरि लावौ। सो वे मनुष्य श्रीगोवर्द्धन आय कें कृष्णदास को पकरि लायें। सो वे बीरबल ने कृष्णदास को बदीखाने में दीनो। तब श्रीगिरधर जी सो कहवाय पठाई जो कृष्णदास को बदीखाने में दीनो।

तब श्रीगिरधर जी ने श्रीगुसाईं जी सो कही जो कृष्णदास को बदीखाने मे दीने हैं। तब श्रीगुसाईं जी ने कह्यो जो हाय हाय श्रीआचार्य महाप्रभून के सेवकन को ऐसो कए। तब श्रीगुसाईं जी सो कह्यौ जो तुमनें कह्यौ होयगो। तब श्रीगिरधर जी ने कह्यो जो हमने तो बीरबल सो सहज ही कह्यौ हुतौ जो काका जी को दर्शन

नाहीं करन देते सो काका जी के बहुत खेद होत हैं। तब श्रीगुसाईं जी ने कह्यौ जो भोजन जब करैंगे तब कृष्णदास आवेगो। तब श्रीगिरधर जी ततकाल घोड़ा मँगाय असवार होय कें मथुरा को आये। तब बीरबल सो कह्यौ जो काका जी भोजन नाहीं करत ताते कृष्णदास को छोड़ देउ। तब राजा बीरबल नें कृष्णदास श्रीगिरधर जी के हवाले कर दियो। तब श्रीगिरधर जी ततकाल सग ले श्रीगोकुल आये। तब श्रीगुसाईं जी ने सुनी जो गिरधर जी कृष्णदास को साथ लेके आवत हैं सो श्रीगुसाईं जी ठकुरानी घाट ऊपर पहुँचे। और या ओर ते कृष्णदास आये सो श्रीगुसाईं जी को दर्शन कियो, और दडोत करी, और एक नयो पद करिकें गायो। सो पद॥

राग केदारो

श्री विट्ठल जू के चरण की बलि॥
हमसे पतित उधारन कारन परम कृपाल आये आपन चलि॥
उज्जल अरुण दया रग रजित दश नख चद्र विहरत मन निरदलि॥
सुभगकर सुखकर शोभन पावन भक्ति मुदित ललित कर अजलि॥
अति सोमदुलि सुगध सुशीतल परत त्रिविधि ताप डारत मल॥
भजि कृष्णदास बार एक सुधि करि तेरो कहा करेगो रिपुकल॥

यह पद श्रीगुसाईं जी के आगे गायो। पाछें श्रीगुसाईं जी कृष्णदास को अपने घर ले आये। पाछे कृष्णदास सो श्रीगुसाईं जी ने कह्यौ जो उठो भोजन करो। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो

महाराज आप भोजन करिये पाछें में झूठन लेउगो। तब श्री-गुसाईं जी भोजन को बैठे। तब कृष्णदास नें एक पद और गायो ॥ सो पद ॥

राग कान्हरौ

ताही को सिर नाइये जो श्रीवल्लभसुत पदरज रति होय ॥
कोउ कहा आन ऊंचे पद तिनसों कहा सगाई मोय ॥
सार सार विचार मनो करि श्रुति वचन[1] गोरस लियो निचोय ॥
तहां नवनीत प्रगट पुरुषोत्तम सहजई गोरस लियो विलोय ॥
जाके मन में उग्र भरम है श्रीविट्ठल श्रीगिरधर दोय ॥
ताको सग विषम विष हू ते भूलिहू चातुर कर है जिन कोय ॥
जिन प्रताप देखि अपने चख असन सार जोभिदेन तोहि ॥
कृष्णदास ते सुरते असुर भये असुरते सुर भये चरणन छोह[2] ॥४॥

यह पद सुनिकै श्रीगुसाईं जी बहुत प्रसन्न भये। पाछें श्री-गुसाईं जी भोजन करिकै पधारे तब कृष्णदास सो कह्यौ जो अब जाउ भोजन करो। तब कृष्णदास भीतर गये। तब श्रीगिर धर जी नें श्रीगुसाईं जी की झूठन को पातर कृष्णदास के आगे धरी। तब कृष्णदास नें महाप्रसाद लीनो। पाछें बीडा दोय दिये। रात्रि को कृष्णदास वहाँई सोय रहे।

ता पाछें पिछली रात्रि घड़ी दोय रही तब श्रीगुसाईं जी उठे। देहकृत करि कें स्नान कियो। श्रीनवनीत प्रिया जी के मगला के

१ वच। २ छोहि।

दर्शन करि कें बाहिर पधारे। तब श्रीनाथ जी द्वार पधारवे की तैयारी किये। तब घोडा दोय मगाये एक घोडा ऊपर श्रीगुसाईं असवार भये एक घोड़ा ऊपर कृष्णदास असवारी कीयें और श्रीगोकुल ते चले। सों श्रीनाथ जी द्वार दिन पहर सवा एक चढ़े जाय पहुँचे। सो वहाँ श्रीनाथ जी कें राजभोग आयो हुतो सो श्रीगुसाईं जी ततकाल स्नान करिकै ऊपर पधारे। और श्रीगुसाईं जी विज्ञप्ति पत्र परासोली ते लिखते सो रामदास भीतरिया के हाथ पठावते। ताको प्रति उत्तर श्रीनाथ जी पत्र मे लिखि कें श्रीगुसाईं जी को पठावते। सो श्रीगुसाईं जी जल मे बोर पिजाते। सो पिछले दिन को पत्र श्रीनाथ जी के हस्ताक्षर को सो श्रीगुसाईं जी राखे हुते। सो पत्र साथ ही ले आये हुते।

पाछें श्रीनाथ जी को राजभोग आयो हुतो। सो समय भयो। तब श्रीगुसाईं जी भोग सरायवे को पधारे। तब श्रीगुसाईं जी को देख के श्रीनाथ जी बहुत प्रसन्न भये और पूछो जो नीके हो। तब श्रीगुसाईं जी कहें जो तुमको देखे सोई दिन नीके हैं। पाछें परस्पर दोऊ जने मुसिक्याये। पाछें श्रीगुसाईं जी राजभोग सरायो पाछें वह पत्र हुतो सो झापी में धरयौ। पाछें रागभोग के दर्शन खुले। तब कृष्णदास ने कीये। पाछे श्रीगुसाईं जी राजभोग आरती करि अनोसरि करि नीचे पधारे। पाछे रसोई करि भोग समर्पित भोजन करि श्रीगुसाईं जी पोढे। सो उत्थापन ते घड़ी दोय पहले उठे। पाछें उत्थापन को समय भयो तब स्नान करि ऊपर पधारे। सो सखनाद करवायो। श्रीनाथ जी क उत्थापन

भये पाछें मेन आरती उपरान्त दर्शन करि कें कृष्णदास को श्रीनाथ जी के सनिधान बुलायौ और कह्यो जो कृष्णदास तुम अधिकार करो और श्रीनाथ जी की सेवा नीकी भाँति सो करियौ। तब कृष्णदास ने श्रीनाथ जी के सन्निधान एक पद गायौ। सो पद ॥

राग कान्हरौ

परम कृपाल श्रीवल्लभनंदन, करत कृपा निज हाथ दे माथे ॥
जे जन शरण आये अनुसरही गहि सो पति श्रीगोवर्द्धन नाथे ॥
परम उदार चतुर चिंतामणि राखत भव धरा[1] ते साथे ॥
भजि कृष्णदास काज सब सरहीं जो जानें श्रीविट्ठल नाथें ॥२॥

यह पद गायौ और वीनती कीनी जो महाराज मेरो अपराध क्षमा करो। तब श्रीगुसाईं जी ने कह्यौ तुमारो अपराध श्रीनाथ जी क्षमा करेंगे। पाछें कृष्णदास को बिदा कीयो। पाछे श्रीनाथ जी को पोढाय कें श्रीगुसाईं जी नीचे उतरे। श्रीगुसाईं जी परम दयाल कृष्णदास को कृत कछु मन में न आनो। श्रीआचार्य जी के सेवक जानि अनुग्रह कीयो। पाछे श्रीगुसाईं जी दिन दोय रहे पाछे श्रीगोकुल पधारे। फिर कृष्णदास श्रीगुसाईं जी की आज्ञा ते अधिकार करन लागे ॥

प्रसंग ८

सो बहुत वरस लो भली भांति सो अधिकार कीयो। पाछें

१ धारा।

एक वैष्णव ने कृष्णदास सों कही जो मोकों एक कूआ बनवा-वनो है, और मोके अपने देश को जानों है। ताते द्रव्य तुमको दे जात हैं सो तुम बनवाय दीजें। तव कृष्णदास ने कही जो आछो। तव वह वैष्णव तीन सो रुपैया देकें अपने देश को गयो। तव कृष्णदास ने उन रुपैयान मे ते एक सो रुपैया एक कुल्हरा में धरि कें आम के वृक्ष के नीचे गाड दिये। कह्यो जो दोय से रुपैया लाग चुकेंगे तव इनको काढ़ेंगे। सो आछे मुहूर्त देखिके रुद्रकुंड ऊपर कूआ खुदायो। तव कितनेक दिन मे वह कूआ मोहताई वन के तयार भयो और दोय से रुपैया लगे। मठोठा बाकी रह्यौ।

तव उत्थापन के दर्शन करिके कृष्णदास कूआ देखन को गये। सो हाथ मे आसा हुतो। सो आसा टेक के कूआ के ऊपर ठाडे भये। सो वह आसा सरक्यौ। तव कृष्णदास कूआ मे जाय परे। तव तो मनुष्य दोय कूआ मे उतरे। सो वहुतेरो ढूंढ़े परि कृष्णदास कौ शरीर हू न पायो। तव सव मनुष्य उहाँ ते फेरि आये। सो ता समय श्रीगुसाईं जी श्रीनाथजी को सेन भोग धरि कें मजूप विराजे हुते। और रामदास श्रीगुसाईं जी के पास वेठे हुते। ता समय काहू ने आय कें कह्यौ जो महाराज कृष्णदास ने कूआ वनवायौ हो। सो कृष्णदास देखन गये हुते, सो आसा टेकि कें कूआ के मोहडे ऊपर ठाडे हुते, सो आसा सरक्यौ सो कूआ मे गिरि परे। और मनुष्य दोय कृष्णदास को ढूंढवे को उतरे, सो वहुतेरो ढूंढे परि शरीरहू न पायौ, कहा जानिये कहा भयौ। तव

रामदास जो कहें जो "अधोगच्छतितामसा" तब श्रीगुसाईं जी कहे जो रामदास ऐसें न कहि ।

अब जो कृष्णदास कूआ मे गिरे सो शरीर न मिल्यौ ताको कारन कहा । सो ताको कारन यह जो कृष्णदास मे कोई अलोकिक जीव हुतो सोतो श्रीनाथ जी की सेवा में प्राप्त भयो । और कृष्णदास ने या सरीर सो श्रीगुसाईं जी की अपेक्षा करी है । जो यह शरीर अलौकिक जीव भुगतनों हो । सो कूआ में गिरत मात्र कृष्णदास को शरीर लोकिक सब होय के पूछरी को और एक वृक्ष[1] है पीपर को तहा प्रेत होय के रह्यौ भोग भुगतन को । तातें कृष्णदास को शरीर कूआ मे न मिल्यो । श्रीगुसाईं जी को अपेक्षा तें कृष्णदास की यह गति भई जो प्रेत होय के पूछरी की और पीपर के वृक्ष ऊपर बैठे रहत हैं ।

प्रसग ९

और एक समय श्रीनाथ जी की भैंस खोय गई हुती । सो गोपीनाथ ग्वाल और पांच ग्वाल पूछरी की ओर ढूढ़वे को गये हुते । सो गोपीनाथ देखें तो पूछरी की ओर श्रीनाथ जी खेलत हैं और एक पीपर ऊपर कृष्णदास प्रेत हु के बेठे हैं । तब कृष्णदास ने गोपीनाथ ग्वाल सो कही जो अरे भैया मेरी बिनती श्रीगुसाईं जी सो करियो और कहियौ जो कृष्णदास ने कह्यौ है जो हों तुम्हारो अपराधी हो तातें मेरी यह अवस्था है । हूँ श्रीनाथ जी के

---

[1] वृक्ष ।

पास हूँ तौ मेरी गति होत नाहीं ताते मेरो अपराध क्षमा करो तो मेरी गति होय। और बाग मे एक आम के वृक्ष के नीचे कुलहरा में एक सौ रुपैया गड़े हैं सो काढ़िकें या कूआ को मठोठा बाकी रह्यौ है सो बनवाओ तो मेरी गति होय। सो गोपीनाथ ग्वाल नें यह बात श्रीगुसाईं जी के आगे कही जो महाराज कृष्णदास अधिकारी ने यह बीनती करी है। तब गुसाईं जी ने आम के नीचे ते रुपैया लाय कें मठोठा कूआ को बनावायौ। तब कृष्णदास की गति भई।

कृष्णदास को प्रेत जोन में श्रीनाथ जी दर्शन देते ताको कारन यह जो श्रीनाथ जी के सन्निधान श्रीगुसाईं जी ने कृष्णदास सो कह्यो जो कृष्णदास तुम अधिकार करो और श्रीनाथ जी की सेवा नीकी भाँति सो करियो। तब कृष्णदास ने कह्यो जो महाराज मेरो अपराध क्षमा करो। तब श्रीगुसाईं जो ने कह्यो जो तुम्हारो अपराध श्रीनाथ जी क्षमा करेंगे। सो श्रीनाथ जी की कृपा ते श्रीनाथ जी ने अपराध क्षमा कर्यौ। सो प्रेत जोन में दर्शन देते। परि स्पर्श न कीयौ। जो स्पर्श होय तो उद्धार होय। सो उद्धार तौ श्रीगुसाईं जी के हाथ है। कृष्णदास श्रीनाथ जी सो कहते जो महाराज तुम मोकों दर्शन देत हौ, मो सो बोलत हौ, और मे प्रेत हौं ताते मेरा उद्धार क्यो नाहीं करत। तब श्रीनाथ जी ने कह्यौ जो हूँ तोको दर्शन देत हौं बोलत हौं सो तौ श्रीगुसाईं जी के बचन के लिये। नाहीं तो प्रेत जोन मे दर्शन नाहीं देतौ और बोलतोहू नाहीं और उद्धार तौ श्रीगुसाईं जी के हाथ है।

तेंने श्रीगुसाईं जी को अपराध कीयौ है ताते श्रीगुसाईं जी उद्धार करेंगे तब होयगो।

ता पाछें श्रीगुसाईं जी आप परम कृपाल कृष्णदास के ऊपर दया आई जो अब तौ बहुत दिन भये हैं ताते अब उद्धार होय तो भलौ। तब श्रीगुसाईं जी घुघघाट ऊपर आय कें कृष्णदास को करम करवाय उद्धार कीयौ। तब कृष्णदास को उद्धार भयौ और लीला में प्राप्ति भयौ। और श्रीगुसाईं जी कहें जो कृष्णदास ने तीन बात आछी करी। एक तौ अधिकार कीयौ सो ऐसो कियौ जो फेरि ऐसो न करो, दूसरे कीर्तन किये सो अद्भुत कीये, और तीसरे श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक होयकें सेवाहू ऐसी करीजो कोऊ न करेगो। ताते वे कृष्णदास श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता को पार नाहीं। ताते इनकी वार्ता कहां ताईं लिखिये॥ वैष्णव॥ ८१॥

इति श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक परम कृपापात्र चैारासी मुख्य वैष्णवन की वार्ता स०॥

अथ परमानन्ददास कनोजिया ब्राह्मण तिनकी वार्ता

— ० —

प्रसग १

सो परमानददास जी परम भगवल्लीला मयव्याती[1] श्रीठाकुर जी के परम सखा है। सो जब श्रीआचार्य जी महाप्रभू आप भूतल पर प्रगट भये तव श्रीगोवर्द्धन नाथ जी की आज्ञा ते दैवी जीवन के उद्धारार्थ और तैसेंई श्रीआचार्य महाप्रभून की श्रीठाकुर जी को परकार सब प्रगट भयो और आप श्रीगोवर्द्धन पर्वत मे प्रगट भये। सो गोपालदास जी वल्लभाख्यान में गाये हैं जो अनेक जीव कृपा करें "वादेशातर परवेस"। ताते परमानददास जी कैा जन्म कन्नोज में हैं कनोजिया ब्राह्मण के घर भयो। सो वे परमानददास जी वहुत योग्य भये और कवि भये, भगवदकृपा के पात्र भये। कीर्तन वहुत आछो गावते ताते परमानददास जी के सग समाज वहुत रहतो। आप स्वामी कहावते आप सेवक करते।

सो भगवद इच्छा ते एक समय परमानददास जी कन्नोज ते आप प्रयाग[2] को आये सो प्रयाग मे उतरे। सो यहाँ कीर्तन वहुत आछे

---

१ मध्य याती। २ माग।

गावते ताते बहुत लोग कीर्तन सुनिवे कों आवते । और अडेलते कार्यार्थ लोग बहुत आवते सो इनके कीर्तन सुनिकें पार अडेल में जाय कहते जो परमानददास जी इहाँ प्रयाग मे आये हैं सो कीर्तन बहुत आछे गावत हैं । सो श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जल घरिया कपूर क्षत्री, सो उनके राग ऊपर बहुत आसक्ति, परि वे अव काश नाहीं पावें जो परमानददास जी के कीर्तन सुनिवे कु आवे । सेवा मे अवकाश नाहीं जो प्राग जाय सकें ।

सो एक दिन एक वैष्णव प्राग ते अडेल में आयो । सो वाने कह्यौ जो आज एकादशी है सो परमानददास जी आज जागरन करेंगें । सो यह सुनि कें वा जलघरिया नें अपने मन मे विचार्यो जो आज परमानद जी के कीर्तन सुनिवे को चलनों । सो वे क्षत्री कपूर जलघरिया अपनी सेवा सो पहुँच कें रात्रि को अपने घर आये । सो घर आय कें अपने मन मे विचार कीयो जो या वेर नाव तौ मिलेगी नाहीं ताते कहा कर्तव्य । परि वे पेरवे में भले निपुन हुते सो मन में विचारी जो पैर कें पार जैये । पाछें अपने घर ते चले सो श्रीयमुना जी के तीर उपर आय ठाडे भये । तब पर्हनी पहर कें वस्त्र सव माँथे सो वाँधि कें श्रीयमुना जी मे पैर कें प्रयाग आये । पाछें वस्त्र पहर कें जा ठौर परमानद स्वामी उतरे हुते तहाँ आये, सो इनको कछू मिलाप तौ परमानद स्वामी सो हुतो नाहीं जहाँ और सव जने वैठे हुते तहां एऊ जाय वैठे । परि एउ श्री-आचार्य महाप्रभून के सेवक है सो सव कोऊ जानत हुते । ताते सवन नें इनको आदर कर कें वैठारे । सो ये वैठे ।

ता पाछें परमानद स्वामी नें कीर्तन को प्रारम्भ कीयो। सो परमानद स्वामी ने विरह के पद गाये। सो विरह के पद काहे को गाये सो प्रथम इनको स्वरूप कहि आये है। कहो जो यह लीला मध्यायाती श्रीठाकुर जी के परमानद स्वामी परम सखा हैं। सो उहाँ सो बिछुरे और इहाँ तो अब ही श्रीठाकुर जी को दर्शन नाहीं भयो और श्रीआचार्य जी महाप्रभून को दर्शन अब होयगो। श्रीआचार्य जी महाप्रभून के मार्ग को यह सिद्धान्त है जो भगवदीन[1] को सग होय तौ श्रीठाकुर जी कृपा करें। ताही के लिये श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने परमानद स्वामी के ऊपर अनुग्रह करिकें अपने कृपापात्र भगवदीय के अन्त करणन में प्रेरना करिकें परमानद स्वामी ये इहाँ पठाये। सो ये श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक कैसे हैं जो जिनको श्रीठाकुर जी एक छन हूँ नाहीं छोडत इनको सग ही रहत हैं। काहे तें सूरदास जी गाए है "भक्ति विरह करत करुणामय डोलत पाछें पाछें।" और जगन्नाथ जोसी की हु वार्ता में लिख्यो है जो जब राजपूत नें तलवार चलाई तब श्रीठाकुर जी नें हाथ पकर्यौ ताते श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवकन के सदा श्रीठाकुर जी निकट ही रहत है। ताते परमानद स्वामी ने विरह के पद गाये। सो पद।

राग विहागरो

ब्रज के विरही लोग विचारे।

विन गोपाल ठगे से ठाड़े अति दुर्बल तन हारे ॥ १ ॥

---

१ भगवदीयन।

मात जसोदा पथ निहारत निरखत साँझ मकारे ।
जो कोई कान्ह कान्ह कहि बोलत अखियन बहुत[1] पनारे ॥२॥
यह मथुरा काजर की रेखा जे निकसे ते कारे ।
परमानद स्वामी बिनु ऐसे जैसे चदा बिनु तारे ॥ ३ ॥
श्रौर पद गायौ सो पद ॥

राग बिहागरो

सब गोकुल गोपाल उपासी । [2]
जो गाहक साधन के ऊधो सो सब वचन ईस पुर कासी ॥ १ ॥
जद्यपि हरि हम तजी अनाथ करि अब छाँड़त क्यों रति जासी ।
अपनी सीतलता तहा छोड़त यद्यपि विधु राहु है ग्रासी ॥ २ ॥
किह अपराध जोग लिखि पठयों प्रेम भजन ते करत उदासी ।
परमानद असी को विरहन मागें मुक्ति गुनरासी ॥ ३ ॥

राग कान्हरो

कौन रसिक है इन बातन की ।
नद नदन बिन कासो कहिये सुनिरी सखी मेरे दुखिया मनको ॥१॥
कहा वे यमुना पुलिन मनोहर कहा वह चद सरद राति कौ ।
कहा वे मद सुगध अमल[3] रस कहा वे षट् पद जलजातन कौ ॥२॥
कहा वे सेज पौढ़िबो बन कौ फूल बिछौना मृदु पातन कौ ।
कहा वे दरस परस परमानद कोमल तन कोमल गात[4] कौ ॥ ३ ॥

१ बहत । २ नोट :—यह पद सूरसागर मे सूरदास के नाम से आया है ।
३ अमत । ४ गातन ।

राग कान्हेरो

माई को मिलिवे नंद किसोरे।
एक बार को नैन दिखावें मेरे मन को चोरे ॥ १ ॥
जागत जाम गनत नहीं खूटत क्यो पाऊँगी भोरे।
सुनरी सखी अब कैसें जी जे सुन तमचर खग रोरे ॥ २ ॥
जो यह प्रीति सत्य अंतर गति जिन काहू बन होरे।
परमानंद प्रभू आन मिलेंगे सखी सीस जिन ढोरे ॥ ३ ॥

इत्यादिक पद विरह के ऐसे परमानंद स्वामी ने सगरी राति गाये। पाछिली घडी चारि रात्र रही तब जो जो जागरन में आये हुते सो सब अपने घर को गये। तैसेंई श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक एक जलघरिया कपूर हूँ परमानंद स्वामी सो 'जैसी कृष्ण स्मरण' कहि कें चले। और परमानंद स्वामी के कीर्तन सुनि कें बहुत प्रसन्न भये। और परमानंद स्वामी सो कह्यो जो जैसे हमने सुने हुते ताते अधिक देखे। तुम परम भगवद् अनुग्रह पूरण हो। ये जलघरिया क्षत्री कपूर महाप्रभून के परम भगवदीय हैं। ए जो चलि आये सो परमानंद स्वामी के ऊपर अनुग्रह करिवे कों आये हैं नातर भगवदीय काहे को काहू के घर जाय।

और यह ऊपर कहि आये हैं जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू के निकट ही रहत हैं। सो याको हेत यह जो निकट रहत हैं तो इन जलघरिया क्षत्री कपूर की गोद में बैठिकें श्रीनवनीत प्रिया जी नें

परमानद स्वामी के पद सुने । जो श्रीआचार्य जी महाप्रभून के मार्ग की मर्यादा है जो श्रीआचार्य जी महाप्रभून के अनुग्रह बिना श्रीठाकुर जी कृपा न करे । सो उन जलघरिया क्षत्री कपूर ऊपर श्रीआचार्य जी महाप्रभून कौ परम अनुग्रह है । ताते श्री नवनीत प्रिया जी इनकी गोद मे बेठि के परमानद स्वामी के पद काहे को सुनने पड़े । सो ताको हेत यह जो भगवदीय परमानद स्वामी के ऊपर श्री नवनीत प्रिया जी अनुग्रह करिवे कों आप पधारे हैं तातें सुने । सो श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया क्षत्री परमानद स्वामी सो जे[1]सी कृष्ण करि के चले । सो श्री यमुना जी के तीर ऊपर आये । सो वहाँ आय के विचार कीयौ जो नाव की बाट देखै तो अवार होयगी और सेवा छूटेगी और श्रीआचार्य जी महाप्रभू भी खीजेंगे ताते जैसे पैर के आये हुते तैसे ही चले । सो पैर के पार गये । सो पार आवत ही स्नान करिकें अपनी सेवा मे तत्पर भये ।

पाछें वहाँ प्राग मे परमानद स्वामी की रात्रि कें जागरन के श्रमित सो आँखि लगी, निद्रा आई । सो इतने मे स्वप्न आयौ । सो स्वप्न में देखे जो जेसे रात्रि के जागरन मे श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया क्षत्री बेठे हैं और उनकी गोद मे श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन भये । ओर स्वप्न मे श्रीनवनीत प्रिया जी परमा नद स्वामी सों कहैं और परमानद स्वामी की निद्रा खुली सो वा

---

१ जे (जय श्रीकृष्ण) ।

श्रीमुख को कोऊ सौदर्य कोटि कदर्पलावण्य परमानद स्वामी ने देख्यौ। सो स्वप्न में तो हृदय में धरि लीयौ ओर मन मे चटपटी लगी सो यह दर्शन फेरि कब होयगो। तब्र यह मन मे बिचार्यो जो यह दर्शन उन श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक क्षत्री जलघरिया विना न होयगो, ताते होय तो उनके पास जैयै। जो उनसो मिलें तब कार्य सिद्ध होय।

ऐसो परमानद स्वामी ने अपने मन मे विचार कीयो। सो ततकाल प्राग ते अडेल कु चले। सो श्रीयमुना जी के तीर ऊपर आय ठाडे भये। सो प्रात काल को समय भयो। सो प्रथम नाव चली तापर बैठि कें पार उतरे। तब आगें जाय कें देखें तो श्रीआचार्य जी महाप्रभू जी स्नान सध्या वदन करत हैं। सो परमानद स्वामी को श्रीमहाप्रभू जी को कैसो दर्शन भयो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम श्रीकृष्णचन्द्र सो। श्रीगुसाईं जी वल्लभाष्टक मे लिख्यो है "सोवस्तुत कृष्ण एवच" ऐसो दर्शन भयो। श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया क्षत्री कपूर की गोद मे श्रीठाकुर जी काहे को बैठे यह कारण जिनके माथे ऐसे प्रभू विराजत है। पर परमानद स्वामी के मन मे यह जो क्षत्री कपूर मिले तो आछी। सो काहे ते जो जिनके माथे ऐसे प्रभू और जिनके दर्शन ते श्रीआचार्य जी महाप्रभून को दर्शन भयौ। ता पाछे श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने अपने श्रीमुख सो कह्यो जो परमानद कछू भगवदीय जस वर्णन करि। तब परमानद स्वामी नें विरह के पद गाये॥ सो पद॥

राग सारग

कोन वेर भई चलेरी गोपाले ।
हों ननसार गई हो[1] न्योते घार घार बोलत ब्रज बोले[2] ॥१॥
तेरो तन को रूप कहां गयो भामिन अरु मुख कमल सुखाय रह्यो ।
सब सोभाग्य गयो हरि के संग ह्रदय सों कमल विरह दह्यो ॥२॥
को बोले को नेन उघारे को प्रति उत्तर देहि विकल मन ।
जो सर्वस्व अक्रूर चुरायो परमानद स्वामी जीवन धन ॥३॥

राग सारग

जिय की साधन जिय ही रही री ।
वहुरि गोपाल देखि नहीं पाए विलपत कुञ्ज अहीरी ॥१॥
एक दिन सोज समीप यह मारग वेचन जात दहीरी ।
प्रीत के लिये दान मिस मोहन मेरी वाँह गहीरी ॥२॥
विन देखें घड़ी जात कलप सम विरहा अनल दहीरी ।
परमानद स्वामी विन दर्शन नेन न नींद वहीरी ॥३॥

राग सगम

यह वात कमज दल नैनन की ।
वार वार सुधि आवत रजनी वहु दुरि देनी सेनी सेन की ॥१॥
यह लीला वह रास सरद को गोरज रजली आवनि ।
अरु यह ऊची टेर मनोहर मिस करि मोह सुनावनि ॥२॥
वसन कुञ्ज में रास खिलायो विथा गमाई मन की ।
परमानद प्रभू सों क्यो जीवे जो पोखी म्न चेन की ॥३॥

१ ही । २ वाले ।

या भाँति परमानद स्वामी नें विरह के पद गाये। सो सुनिके परमानद् स्वामी सों कह्यौ जो कछू बाललीला वर्णन करि। तब परमानद स्वामी नें कह्यौ जो महाराज में कछू समझत नाहीं। तब श्रीमहाप्रभून नें कह्यौ जो स्नान करि आउ हम तोकों समझावेंगे। तब परमानद स्वामी नें श्रीमहाप्रभून सों पूछ्यो जो महाराज आपको सेवक विरक्त कहा हैं। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने कह्यौ जो कछू टहल करत होयगो।

तब परमानद स्वामी स्नान को गये। सो तब परमानद स्वामी आगे जायकें देखें तो यमुना जी की गागर लैकें वह कपूर छत्री आवत हैं। तब निकट आये सो साम्हें मिले। सो उनको देखकें परमानद स्वामी बहुत प्रसन्न भये और परमानद स्वामी नें उनको नमस्कार करी और कह्यौ, जो रात्रि को जागरन में आप पधारे हुते, सो श्रीठाकुर जी नें आपकी गोद मे बेठि के मेरे कीर्तन सुने, सो आपकी कृपा ते श्रीठाकुर जी ने मोसो कह्यौ, जो में श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया छत्री की गोद मे बेठि कें तेरे कीर्तन सुने हैं। और आपकी कृपा ते मेरो भाग्य सिद्ध भयो है सो आवत ही तुम्हारी कृपा ते मोको दर्शन भयो। इतनी बात सुनि के उन जलघरिया ने कह्यो जो ऐसे मति कहो। जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू सुनेंगे तो खीजेंगे सो सेवा छोड के क्यो गये ताते यह बात मति कहो। तब इतनी सुनिके परमानद स्वामी को आश्चर्य भयो और कह्यौ जो ए धन्य हैं जिन ऊपर श्रीठाकुर जी को ऐसो अनुग्रह है और ये अपनो स्वरूप छिपावत हैं। पाछें परमानद स्वामी तो

स्नान के गये और जलघरिया जल की गागर लेके मंदिर में गयौ।

पाछें परमानंद स्वामी श्रीयमुना जी में स्नान करिकें तत्काल आप श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगे आय ठाडे भये। तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कह्यौ जो परमानंद स्वामी आगे आउ बैठी[1]। तब परमानंद स्वामी आप आगे आय बैठे। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने परमानंद स्वामी को नाम सुनायौ। पाछें मंदिर में पधार कें श्रीनवनीत प्रिया जी के सन्निधान परमानंद स्वामी को अनुक्रमणिका सुनाई। काहे ते जो प्रथम परमानंद स्वामी सों श्री आचार्य महाप्रभून नें अपने श्रीमुख सों कह्यौ जो भगवद्यश वर्णन करि सो परमानंद स्वामी ने विरह को पद गायो। तब श्रीआचार्य महाप्रभून ने कह्यो जो परमानंद स्वामी बाल लीला गाउ तब परमानंद स्वामी ने कह्यौ जो राज में कछू समझत नाहीं। सो परमानंद स्वामी नें काहेते कह्यौ जो ऊपर कहि आये हैं। जो ये श्रीठाकुर जी सों बिछुरे हो बिछुरे के दुख की तौ स्फुर्ति रही और संयोग जो सुख भयौ ताको बिसमरन भयौ। जो काहे ते जो सब सब लीला विशिष्ट पूरण पुरुषोत्तम तौ श्रीआचार्य जी महाप्रभून के घर पधारे हैं।

सो परमानंददास को श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें अनुक्रमणिका सुनाई तब सब लीला की स्फुर्ति भई। और अनुक्रमणिका सुनाई ताको कारण कहा। जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू को नाम

---

१ बैठि।

है "श्रीभागवत पीयूष समुद्र मथन क्षम"। सो श्रीभगवत कौ श्रीगुसाईं जी अमृत को समुद्र करिकें वर्णन किये हैं। सो अनुक्रमणिका द्वारा श्रीभागवत रूपी समुद्र श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें परमानद स्वामी के हृदय में वसो। ताते वाणी तो सव अष्टकाव्य की समान है और ये दोऊ परमानद स्वामी और सूर दास जी सागर भये। सो याते जो श्रीभागवत रूपी अमृत सागर को स्वरूप इनके हृदय में श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने धरयौ। सो काहे ते जो सब कोऊ सूरसागर और परमनदसागर कहते। अब परमानददास सो श्रीआचार्य जी महाप्रभू श्रीमुख सो कहैं जो वाललीला वर्णन करि। सो परमानद जी ने तत्काल वाललीला के पद करि कें श्रीनवनीत प्रिया जी के सन्निधान गाये॥ सो पद॥

राग सामरी

माई री कमलनैन श्याम सुन्दर झूलत हैं पालना।
वाललीला गावत सब गोकुल की ललना॥ १॥
अरुण तरुण कमल नख मनि जस जोती।
कुंचित कच मकराकृत[1] लटकत गजमोती॥ २॥
अँगूठा गहि कमलपान मेलत मुख माहीं।
अपनो प्रतिबिम्ब देखि पुनि पुनि मुसिकाहीं॥ ३॥
जसुमति के पुण्य पुञ्ज वार वार लाले।
परमानद स्वामी गोपाल सुत सनेह पाले॥ ४॥

---

[1] मयराकृत।

यह पद सुनि कें श्रीआचार्य जी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये। फेरि और पद गायौ ॥ सो पद ॥

राग बिलावल

जसौधा तेरे भाग्य की कही न जाय।
जो मूरति ब्रह्मादिक दुर्ल्लभ सो प्रघटे[1] हैं आय ॥ १ ॥
शिव नारद सनकादिक महामुनि मिलि वे करत उपाय।
ते नदलाल धूर धूसर वपु रहत गोद लिपटाय ॥ २ ॥
रतन जडित पोढाय पालने वदन देखि मुसिकाई[2]।
झूलौ मेरे लाल बलिहारी परमानद जस गाई[3] ॥ ३ ॥

राग बिलावल

"मणिमय आगन नन्द के खेलत दोऊ भैया" सो ऐसें बाल लीला के पद परमानददास ने गाये। सो सुनिकें श्रीआचार्य जी बहुत प्रसन्न भये।

सो परमानददास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के पास हैं[4]। सो परमानददास को अपने कीर्तन की सेवा दीनी। सो परमानददास जी श्रीनवनीत प्रिया जी कैा नित्य नये पद करिकें भाँति भाँति के सुनावते। तब अनोसर होतो तब परमानददास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगें पदकीर्तन करे। श्रीआचार्य जी महाप्रभू नित्य कथा कहते सो परमानददास जी नित्य सुनते। सो ताही प्रसग के कीर्तन करिकें परमानददास जी

१ प्रगटे। २ मुसिकाय। ३ गाय। ४ हे।

सुनावते । सो एक दिन परमानन्ददास जी नें श्रीठाकुर जी के चरणार्बिंद को महात्म सुन्यौ । सो चरणार्बिंद के महात्म को कीर्तन करि श्रीआचार्य जी महाप्रभून को सुनायौ । सुनि के श्रीआचार्य जी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये ॥ सो पद ॥

राग कान्हरौ

चरण कमल वंदौ जगदीश गोधन के सग धाए ।
जे पद कमल धूरि लपटाने करि गहि गोपीन के उर लाए ॥ १ ॥

यह पद सम्पूरण करि के परमानन्ददास जी नें गायौ और श्रीआचार्य जी महाप्रभून के स्वरूप को और प्रार्थना को पद गायौ ॥ सो पद ॥

राग कान्हरौ

"यह मांगों गोपी जन वल्लभ" ॥

यह परमानन्द स्वामी ने सम्पूर्ण करि कें गायौ । सो सुनि कें श्रीआचार्य जी महाप्रभू अपने मन में जाने जो यह मिस कर के परमानन्ददास जी या पद को सुनाय कें व्रज के दर्शन की प्रार्थना कीनी है तातें व्रज को अवश्य चलनो ॥

प्रसग २

श्रीआचार्य जी महाप्रभू यह विचार करें जो व्रज को पधारवे को उद्यम कीयो । सो दामोदरदास हरिसानी कृष्णा मेघन परमानन्ददास जी और यादवदास हलवाई तथा रसोई की सामग्री

सग लेकें चले और सब वैष्णव सग ले आप श्रीआचार्य जी महाप्रभू व्रज को पधारे।

सो व्रज को आवत परमानददास को गाम कन्नौज आयो तब परमानददास ने श्रीआचार्य जी महाप्रभून सो वीनती कीनी जो महाराज मेरे घर पधारिये आपके अनुग्रह ते मेरौ भाग्य सिधि भयौ है अब मेरे घर हू पावन करिये। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभू आप अतर्यामी कृपानिधान भक्त मनोरथ पूरक आप कृपा करि कै पधारें। सो परमानददास के घर आछी भांति सो श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें रसोई करि श्रीठाकुर जी को भोग समर्प्यो। पाछें भोग सराय कें आप प्रसाद लीयैा पाछें आप गादी तकियान के ऊपर विराजे। तब परमानददास सो कह्यो जो कछू भगवद्यश गावैा। तब परमानददास ने मन मे विचारी जो या समय श्रीआचार्य जी महाप्रभून को मन तो व्रज मे श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के पास है ताते विरह के पद गाऊँ। सो विरह को पद ऐसो गायैा जामे छिन हूँ कलप समान जाय॥ सो पद॥

राग सोरठ

हरि तेरी लीला की सुधि आवै॥
कमल नेन मन मोहनी मूरत मन मन चित्र बनावै॥१॥
एक बार जाय मिलत माया करि सो कैसे बिसरावै।
मुख मुसिक्यान वक अविलोकन चाल मनोहर भावै॥२॥
कबहुक निबड तिमर आलिंगन, कबहुक पिक सुर गावे।
कबहुक सभ्रम क्वासि क्वासि कहि सगहीन उठि धावै॥३॥

कबहुँक नैन मूदि अंतर गति मणि माला पहरावै।
परमानद श्याम ध्यान करि ऐसे विरह गवावै ॥४॥

यह पद परमानददास ने गायो। सो सुनि कें श्रीआचार्य जी महाप्रभून को मूर्छा आई। सो जा लीला को पद परमानददास नें गायो ता लीला विषे श्रीआचार्य जी महाप्रभू मग्न भये। सो देहानुसंधान न रह्यो। सो तीन दिन लो श्रीआचार्य जी महाप्रभून को मूर्छा रही। सो सबरे सेवक दामोदरदास हरसानी प्रभृति श्रीआचार्य जी महाप्रभून के दर्शन करें सो वैसे ही बैठे रहे। चतुर्थ दिन के प्रात काल श्रीआचार्य जी महाप्रभू सावधान भये तब सब वैष्णव प्रसन्न भये। तब परमानददास जी मन मे डरपे जो फेरि ऐसो पद न गाऊँ। फेरि सूधे पद गाए। सो पद ॥

राग बिभाग

माई री हो आनद गुन गाऊँ।
गोकुल की चिन्तामणि माधौ जो मांगो सो पाऊँ ॥ १ ॥
अब[1] ते कमलनैन ब्रज आये सकल सपदा बाढ़ी।
नदराय के द्वारे देखौ अष्ट महासिद्धि ठाढ़ी ॥ २ ॥
फूले फले सदा वृन्दावन कामधेनु दुहि दीजे।
मारग मेघ इन्द्र वरषा मे कृष्ण कृपा सुख लीजे ॥ ३ ॥
कहत जसोधा सखियन आगें हरि उत्कर्ष जनावै।
परमानददास को ठाकुर मुरली मनोहर भावै ॥ ४ ॥

---

१ जब।

और हू पद गायौ। सो पद।

राग गैारी।　　"विमल जस वृन्दावन के चद्र के।"

यह पद सम्पूरण करिके गायौ। फेरि और गायौ।

राग सारग।　　"चलिरी नदगाँव जाय वसियै"

यह पद सम्पूर्ण करिकें गायौ। सो पद मे यह कह्यौ जो चलरी नदगाँव जाय वसियै।

सो श्रीमहाप्रभू जी सुनि के व्रज कों पधारे। सो श्रीगोकुल आवत ही श्रीआचार्य जी महाप्रभू श्रीयमुना जी के तीर ऊपर छोकर के नीचे वेठक मे तहाँ श्रीआचार्य जी महाप्रभू बिराजे। और एक वैठक श्रीद्वारिका नाथ जी के मदिर के पास हैं सो भीतर की वैठक है। सो रात्रि के विश्राम तथा रसोई की ठोर है। उहाँ श्रीआचार्य जी महाप्रभून के घर हुतो। जब आप श्रीगोकुल पधारते तब उहाई उतरते। सो यह भीतर की वेठक है। पाछें सव वैष्णवन ने श्रीयमुना जी स्नान कीये और परमानद दास जी हू श्रीयमुना जी के जस वर्णन कीये॥ सो पद॥

राग रामकली

श्रीयमुना जी यह प्रसाद हों पाऊँ।
तिहारे निकट रहो निसवासर रामकृष्ण गुन गाऊँ॥ १॥
मजन विमल पावन जल त्रिता कुलख वहाऊँ।
तिहारी कृपा भान की तनया हरि पद प्रीत वढ़ाऊँ॥ २॥
विनती करौं यही वर मागों अधम सग विसराऊँ।
परमानददास फलदाता मगन गोपाल लडाऊँ॥ ३॥

राग रामकी । "श्रीयमुना जी दीन जान मोहि दीजे[1]"

सो ऐसे पद सम्पूरण करिकें परमानंददास जी नें बहुत गाये । श्रीआचार्य जी आगें तीर विषें गाये ।

ता उपरांत श्रीमहाप्रभू जी नें परमानंददास को बाललीला विशिष्ट श्रीगोकुल के दर्शन करवाये । सो परमानंददास को ऐसौ दर्शन भयौ सो सब ब्रज भक्त श्रीयमुना जल की गागरि भरि ले जाते हैं और श्रीठाकुर जी मार्ग में खेलते हैं और ब्रज भक्तिन को जल की गागरि उठाय देते हैं और उनकी कचु[2]तोरे है या भाँति सो दर्शन भये । सो तैसोई पद श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगें गायौ ॥ सो पद ॥

राग विलावल

जमुना जल घर भरि चली चंद्रावलि नारी ।
मारग खेलत मिलि घनश्याम मुरारी ॥ १ ॥
नैनन सो नैना मिले मन रह्यौ है लुभाई ।
मोहन मूरत जिय बसी पग धरो न जाई ॥ २ ॥
तब की प्रीति प्रगट भई यह पहली भेंट ।
परमानंद ऐसी मिली जैसी गुड में चेंट ॥ ३ ॥

राग सारंग

लाल नेक टेको मेरी बैया ।
औघट घाट चढ्यौ नहीं जाई रपटत हो कालिन्दी महिया ॥ १ ॥

---

१ दीजे । २ कचुकी ।

यह पद सप्ररण करकें ऐसे पद गाये। ता पाछें परमानद ने बाल लीला के पद बहुत गाये और श्रीगोकुल को स्वरूप जामे आवै ऐसे पद गायो ॥ सो पद ॥

राग कान्हरो

गावत गोपी मधु व्रज वानी।
जाके भुवन वसत त्रिभुवनपति राजा नद यसैाधा[1] रानी ॥१॥
गावत वेद भारती गावत गावत नारदादि मुनि ज्ञानी।
गावत गुन गधर्व काल शिव गोकुल नाथ महातम जानी ॥२॥
गावत चतुरानन जदुनायक गावत शेष सहस्र मुखरास।
मन क्रम वचन प्रीत यह अम्बुज अब गावत परमानददास ॥३॥

यह पद परमानददास नें गायो। पाछें और पद गायो सो पद ॥

राग कान्हरो

जसुमति ग्रह आवत गोपी जन ॥
वासर ताप निवारन कारन वारवार कमल मुख निरखन ॥१॥
चाहत पकरि देहरी उलघन किलक किलक हुलसत मन हीं मन।
लोन उतारि दोऊ करि वारी फेर वारत[2] तन मन धन ॥२॥
लेन उठाय चापत हीयैा भरि प्रेम विवस[3] लागे द्रग ढरकन।
चली ले पलना पोढावन को अरुकसाय[4] पोढे सुन्दर घन ॥३॥
देत असीस सकल गोपो जन चिरजीवो लोग गज मुन।
परमानददास को ठाकुर भक्त वत्सल भक्त मनरजन ॥४॥

---

१ यशोधा। २ वारत। ३ विवश। ४ अरकसाय।

राग हमीर। "चिते चिते चित चारयौ री माई"

यह पद सपूरण करि कें गायै। सो ऐसे पद परमानन्ददास ने बहुत गाये।

ता पाछें श्रीगोकुलनाथ जी के दर्शन करि कें परमानन्ददास श्रीगोकुल ऊपर बहुत आसक्ति भये। सब ऐसे पद गायै जा मे श्रीआचार्य जी महाप्रभून की प्रार्थना कीनी मोको श्रीगोकुल मे आय कें चरणारविंद के नीचे राखो। नितप्रति प्रभून के दर्शन करों[1]। सर्व लीला विशिष्ट पूरन पुरुषोत्तम हैं। और यह पद गायो॥ सो पद॥

राग कान्हरो

यह मागैा जसोदानन्दन॥
चरण कमल मन मन मधुकर या छवि नैनन पाऊँ दर्शन॥१॥
चरण कमल की सेवा दोऊ तन राजत बिजलता घन नन्दन।
वृषभानु नन्दिनी मेरे उर बसु[2] प्रान जीवन धन।२॥
व्रज बसिबो जमुना अचिबो श्रीवल्लभ को दास यही पन[3]।
महाप्रसाद पाऊँ हरि गुन गाऊँ परमानन्ददास जीवन धन॥३॥

राग कान्हरो

"जब लगि जमुना गाय गोवर्द्धन।
तब लग गोकुल गांव गुसाईं"॥

यह पद सम्पूर्ण करिकें प्रार्थना के पद गाये। तब कितनेक दिन श्रीआचार्य जी महाप्रभू गोकुल मे बिराजे। ता पाछें

---

१ करूँ। २ सर्वस्व। ३ मम।

सब वैष्णवन कौ सग लेकें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन कों पधारे ॥

प्रसग ३

अब श्रीआचार्य जी महाप्रभू स्नान करि कें पर्वत ऊपर पधारे। सो आवत ही परमानददास नें श्रीनाथ जी कौ श्रीमुख देखि कें वहां के वहाँ रहै। तब श्रीमहाप्रभू जी नें श्रीमुख सो कह्यौ जो परमानददास कछू भगवत लीला गावो। तब परमानददास अपने मन मे विचारे जो कहा गाऊँ। तब ऐसे विचारौ जो जामे प्रथम अवतार लीला, पाछें चरणार्विंद की वदना, पाछें भगवद्वर्णन को स्वरूप, ता पाछें बाल क्रीडा, ता पाछें श्रीठाकुर जी को महात्म। ऐसौ पद परमानददास नें गायौ ॥ सो पद ॥

राग कान्हरौ

मोहन नदराय कुमार।
प्रगट ब्रह्म निकुज नायक भक्त हित अवतार ॥१॥
प्रथम चरण सरोज वन्दो श्याम घन गोपाल।
मकर कुडल गड मडित चारु नैन विसाल ॥२॥
बलिराम सहित विनोद लीला से कर हेत।
दास परमानद प्रभू हरि निगम बोलत नेत ॥३॥

और असक्ति कौ पद गायौ ॥

राग पूरवी

मेरौ माई माधो सो मन लाग्यौ।
मेरौ नेन और कमल नैन कों इकठौरौ करि मान्यौ[1] ॥ १ ॥

---

१ सान्यौ।

लोक वेद की कानि तजी में न्योती अपने आन्यों ।
एक गोविंद चरण के कारण वेर सवन सो ठान्यो ॥ २ ॥
अवको[1] भिन्न होय मेरी सजनी दूध मिल्यों जेसे पान्यो ।
परमानद मिली गिरधर सो ई पहली पहचान्यों ॥ ३ ॥

ऐसे पद परमानददास ने गाये ता पाछें श्रीआचार्य जी महाप्रभू सेन[2] आरती करि श्रीनाथ जी कों पोढाये । तब अनोसर करि आप नीचे पधारे । तब परमानददास हू नीचें आय वेठे । तब रामदास भीतरया नें परमानददास को महाप्रसाद दूध पठायो। सो दूध परमानददास जी लेवे लागे तब तातो लाग्यौ तब परमानददास जी नें सीरो करि कें लीयो । ता पाछें रामदास नें पूछी जो तुमको महाप्रसाद दूध पठायो हो सो आयो । तब परमानददास ने कही जो हां आयो परि दूध वहुत तातो हुतो सो ऐसो दूध श्रीठाकुर जी कैसें आरोगत है ताते दूध तो सुहावतो भलो । तब रामदास ने कह्यो जो वहुत आछो आप भगवदीय हो जैसे आज्ञा करोगे तेसे करेंगे । तब सकारें सव सेवक ध्यान करि कें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी की सेवा मे तत्पर भये । तव श्रीआचार्य जी महाप्रभू स्नान करि कें श्रीगिरिराज ऊपर पधारे तव श्रीगोवर्द्धन नाथ जी को जगाये । तब या समय परमानददास जी जाय कें श्रीठाकुर जी के जगायवे को पद गायो । सो पद ।

---

१ अवौं । २ सैन ।

राग विभास

जागो गोपाल लाल मुख देखों तेरौ।
पाछें ग्रह काज करो नित्य नेम मेरौ ॥ १ ॥
विगसत निसा अरुण दिसा उदित भयौ भानु।
गुजत अग पकज घन जागिये भगवान ॥ २ ॥
द्वारे ठाड़े वदीजन करत हैं पुकार।
घस प्रसग गावत हरिलीला सार ॥ ३ ॥
परमानद स्वामी दयाल जगत मगल रूप।
वेद पुराण पठत महिमा लीला अनूप ॥ ४ ॥

यह पद परमानद ने गायौ। फिर कलेऊ को पद गायौ। सो पद।

राग रामकली

पिछवारे ह्वै ग्वालन टेर सुनायौ।
कमल नेन प्यारो करत कलेऊ कोटन सुख लों आयौ ॥१॥
अरी मैया गैया एक घन व्याय रही हैं वछरा उहाँहीं बसायौ।
मुरली लई न लकुटिया न लीनो अरवराय कोउ सखा न बुलायौ ॥२॥
चकत भई नद जू की रानी सत्य आय किधों अपनो पायौ।
फूलो न अग समात रसवर त्रिभुवन पति सिर छत्र जो छायौ ॥३॥
मिलि वेठे सकेत सघन घन विविध भाँति कीयौ मन भायौ।
परमानद सयानो ग्वालनि उलटि अग गिरधर पिय प्यायौ ॥ ४ ॥

ऐसे पद परमानददास ने गायौ। ता पाछें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के मगला के दर्शन खुले तब परमानददास नें श्रीगोवर्द्धन

नाथ जी सो पूछ्रो जो आप ताते दूध क्यो आरोगत हो। तब श्रीनाथ जी ने कह्यो जो ये हमको समर्पत है सो आरोगत है। ता पाछें परमानददास जी नित्य कीर्तन करिकें सुनावते।

तब ता समय एक राजा दर्शन को आयो सो श्रीगोवर्द्धन नाथ जी कें दर्शन करे तब फेरि आयकें रानी सो कही जो श्रीगोवर्द्धन नाथ जो ठाकुर बहुत सुदर हैं ताते तू जायकें दर्शन करि आउ। तब रानी नें कही जो जैसे हमारी रीति है सो होय तो दर्शन करें। तब राजा नें कह्यो जो श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन में काहे को परदा है तब रानी ने मानी नही। तब राजा ने श्रीआचार्य जी महा प्रभून सो बीनती कीनी जो महाराज में तो रानी सो बहुत कहत हो परि वह आवत नाहीं ताते आप कृपाकरिकें दर्शन करवावो तो वह करे। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने कही जो यहां ले आवो जो प्रथम वाको एकांत मे दर्शन करवावेंगे ता पाछें और लोग दर्शन करेंगे। तब राजा अपनी रानी को लिवाय कें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी कें दर्शन करवाये सो सब लोग सरकि गये। तब रानी दर्शन करिवे लागी तब इतने में श्रीगोवर्द्धन नाथ जी ने सिंह पैार के किवाड़ खोल दिये। सो सब भीर दैार कें रानी के ऊपरि परी सो रानी के सब वस्त्र निकस परे और बहुत लज्जित भई। तब राजा ने रानी सो कही जो मैने तोसो पहिले ही कह्यो हुतो जो श्रीठाकुर जी के दर्शन में काहे को परदा है। ये ब्रज के ठाकुर हैं इननें काहू को परदा राख्यो नाहीं। तब वा समय परमानददास जी ने पद गायैा।

राग देवगधार

"ऐसनि यह खेलवे की बानि ॥
मदन गोपाल लाल काहू की राखत नाहि न कानि" ॥१॥

यह एक तुक परमानददास जी नें गाई हुती। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो परमानददास एसे कहो जो 'भली यह खेलवे की बानि'। तब परमानददास जी नें एसो ही पद गायो। सो पद ॥

राग देवगधार

भली यह खेलवे की बानि ॥
मदन गोपाल लाल काहू की नाहिन राखत कानि ॥१॥
अपने हाथ ले देत हैं चनघर दूध दही घृत सानि ॥
जो बरजो तो आँख दिखावै पर धन को दिन दान ॥२॥
सुनि री जसोधा सुत के करतब पहले माँट मथानि ॥
फोरि डारि दधि डारि आजर[1] मे कैान सहै नित हानि ॥३॥
ठाडी देखत नद जू की रानी मूदि कमल मुख हानि ॥
परमानददास जानत हैं बोलि बूझि धो आनि ॥४॥

यह पद परमानददास ने गायो। ता पाछें कितेक पद गाये। जो जो लीला श्रीठाकुर जी ने करी सो ता ता लीला के पद परमानददास नें गायो।

सो एक दिन भगवदीय रामदास जी कुभनदास जी सब वैष्णव मिलि कें परमानद जी जहाँ रहत हुते तहाँ आये। सो

१ अजर।

भगवदीय आये जानि कें परमानंददास जी बहुत प्रसन्न भये जो आज मेरे घर भगवदीय आये हैं सो मेरा वडौ भाग्य है और आज मेरा भाग्य सिद्धि भयौ है। सो काहे ते श्रीठाकुर जी भगवदीय के हृदय में सदा सर्वदा विराजत हैं। तातें भगवदीय की कृपा होय तौ श्रीठाकुर जी अनुग्रह करें। जो ये सब भगवदीय मेरे घर पधारे हैं सो प्रथम भगवदीय की न्योछावरि करौ। जब यह विचार कें परमानंददास ने ऐसे ही पद कह्यौ। सो पद।

राग हमीर

आये मेरे नंद नंदन के प्यारे॥
माला तिलक मनोहर वानो त्रिभुवन के उजियारे॥१॥
प्रेम सहित वसत मन मोहन नेकहु टरत न टारे॥
हृदय कमल के मध्य विराजत श्रीव्रजराज दुलारे॥२॥
कहा जानो कौन पुण्य प्रगट भयौ मेरे घर जो पधारे॥
परमानंद प्रभु करी न्योछावर वारवार हों वारे॥३॥

यह पद भगवदीयन की भेंट करि अपने आये भगवदीयन को विदा किये। ता पाछें ऐसी रीति सो परमानंददास नें श्रीनाथ जी की भली भाँति सो सेवा कोनी। सो वे परमानंददास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हैं सो इनकी वार्ता कहाँ ताईं लिखिये॥ प्रसंग॥ ३॥ वैष्णव॥ ६६॥

अथ कुम्भनदास गोरवा तिनकी वार्ता

— ० :—

प्रसंग १

सो वे कुभनदास जी श्रीगोवर्द्धन पर्वत के पास जमुनावनैा गांव है तामे रहते। सो जमुनावतैा नाम या गांव कैा काहे तें है जो जमुना जी को प्रवाह सारस्वत कल्प मे याके निकट हुतैा ताते जमुनावनैा नाम या गांव को है। तामे कुभनदास जी रहते और परासोली चदसरोवर के ऊपर उन कुभनदास जी की धरती हुती सो वहां खेती करते। सो कुभनदास जी श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के परम सखा हुते और कृपापात्र हुते। सो अब ही श्रीगोवर्द्धन नाथ जी प्रगट होय के श्रीमहाप्रभू जी को बुलावेंगे तब ये भगवदीय प्रसिद्ध होयगे।

सो एक समय श्रीआचार्य जी महाप्रभू पृथिवी परिक्रमा करत झारखड मे पधारे। सो झारखड मे श्रीगोवर्द्धन नाथ जी नें आज्ञा दीनी जो हम गोवर्द्धन मे तीन दमन हैं नागदमन इन्द्रदमन देवदमन। तिनके मध्य में हम देवदमन हैं सो मेरो नाम है। ताते तुम आयके हमको पधरावो और हमारी सेवा को पुकार पगट करो। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें पृथ्वी परिक्रमा उहां ही राखि कें वेग पधारे। तब दामोदरदास हरसानी, कृष्णदास मेघन, गोविंद दुबे, जगन्नाथ जोसी, रामदास ये पांच वैष्णव सग हुते। सो श्रीआचार्य जी महाप्रभू श्रीगोवर्द्धन की तरहटी आय

कें सद्दू पांडे के चोतरा ऊपर बिराजे। सो आगें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के प्रागट्य में यह सद्दू पांडे भवानी नरो श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक भये हुते तिनकी श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी की सेवा सोपी। और व्रजवासी व्रज मे श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक बहुत भये। और कुमनदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून की शरण आये।

सो श्रीआचार्य जी महाप्रभून श्रीगोवर्द्धन नाथ जी को एक छोटो सो मदिर सिद्धि करवायो। तामें श्रीनाथ जी को पधराये और रामदास चोहान कें सेवा की आज्ञा दीनी। और सब व्रजवासी लोग दूध दही माखन लावते सो श्रीगोवर्द्धन नाथ जी आरोगत हुते। और रामदास को जो भगवदीच्छा तें जो आप प्राप्त होय सो भोग धरते और आप प्रसाद लेते। और जो व्रजवासी लोग श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक भये हुते तिनकें श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने आज्ञा दीनी जो यह मेरो सर्वस्व है सो तुम सब बातन सो यत्न राखियो और सेवा में तत्पर रहियो। और कुमनदास कें और सब सेवकन को श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने आज्ञा दीनी जो तुम देवदमन के दर्शन किये बिना महाप्रसाद मति लीजियो। तब या भाँति सो आज्ञा करि कें श्रीआचार्य जी महाप्रभुन नें पृथ्वी परिक्रमा झारखंड मे राखी हुती। अब कुमनदास जी नित्य श्रीआचार्य जी महाप्रभून की कृपा तें श्रीगोवर्द्धन नाथ के दर्शन को आवते। सो कुमनदास कीर्तन बहुत नीके गावते। जो श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें

कुभनदास जी कों नाम सुनायाै ग्रौर ब्रह्म सम्बंध करवायाै। तब कुभनदास जी नित्य नये पद करि कें श्रीनाथ जी काै सुनावते। ग्रौर श्रीनाथ जी कुभनदास जी के घर पधारते, ग्रौर बहुत क्रीडा करते, खेलते वार्ता करते ग्रौर बहुत कृपा कभनदास जी के ऊपर करते। ग्रब रामदास जी श्रीगाेवर्द्धन नाथ जी की सेवा करन लागे।

साे एक समय मलेच्छ काे उपद्रव भयाे। साे यहाँ मानिकचद पांडे, सद्‌ू पाडे, रामदास चाेहान, कुभनदास सब मिलि कें विचार कियाै जाे यह मलेच्छ ग्रायाे है साे यह धर्म काे द्वेषी है साे कहा कर्तव्य है। तब सब ने ही कही जाे यामें कहा कर्तव्य कहा पूछनाे, ग्रपनाे विचार्याै कहा हाेत है, तातें श्रीनाथ जी काे पूछाै जाे महा राज कहा करें। तब श्रीनाथ जी ने ग्राज्ञा दीनी जाे हमकाे यहाँ ते ले चलाे हम यहाँ ते उठेंगे। तब सबन नें पूछाै जाे महाराज कहाँ पधारोगे। तब ग्रापनें श्रीमुख साे कह्याे जाे टाेड के घने में चलेंगे। तब एक भैसा मगायाे ता पर श्रीगाेवर्द्धन नाथ जी काे बैठाये। तब एक ग्राेर ते ताै रामदास पकरें रहै ग्रौर एक ग्राेर ते कुभनदास पकरे रहै ग्रौर सब सेवक सग चलें जात है। तहाँ घने में कांटे बहुत हुते साे उहाँ कांटेन मे बैठे साे वस्त्र सवन के फटि गये ग्रौर सरीर मे कांटे लगे दु ख बहुत पायाे। साे घने में एक तालाब हुताै तहाँ रूखन काे एक चाैक है तहाँ बड़े रूख नीचे श्रीनाथ जी बिराजे। साे कछूक सामग्री सग्रह हुती साे रामदास ने भाेग धरि जल काे करुग्रा भरि कें ग्रागे धरि कें सब वैष्णव

बेठे। तब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी नें कुमनदास सों कह्यौ जो कुमनदास जी कछू गावौ। तब कुमनदास जी तो मन में क्रुद्ध रहे हुते तब एक पद नयो करि कें गायो॥ सो पद॥

राग सारग

भावत है तोय टोड को थनौ॥
कांटे लगे गोखरू बूढे फट्यो जात यह तनौ॥१॥
सिंहो कहा लोकटी को डर यह कहा बानक बन्यौ॥
कुमनदास प्रभू तुम गोवर्द्धनधर यह कोन राड ढेडनीको जन्यौ॥

यह पद कुमनदास ने गायौ। सो सुनि के श्रीनाथ जी मुसिक्याय कें चुप करि रहे। इतने में श्रीगोवर्द्धन ते समाचार आये जो यह मलेच्छ की फोज आई हुती सो पाछी फिर गई। तब श्रीगोवर्द्धननाथ जी पर्वत ऊपर मंदिर में पधारे॥

प्रसग २

अब श्रीनाथ जी पर्वत ऊपर मंदिर मे पधारे। सो व्रज के लोगन को बहुत हर्ष भयौ जो धन्य देवदमन जो ऐसो उपद्रव आयो हुतो सो इनके प्रताप ते सब मिटि गयो। तब कुमनदास जी प्रसन्न होय के पद गाये सोपद श्रीगोवर्द्धन नाथ जी को सुनाये। राग श्रीचर्चरी॥ "जयति जयति हरिदास सर्वधर नें"॥ यह पद सम्पूरण करि कें गायौ पाछें और पद गाये सो पद॥ राग सारग "कृष्णा तनतरया तीर" यह पद सम्पूरण करि

कुंभनदास जी कों नाम सुनायौ और ब्रह्म संबंध करवायौ। तब कुंभनदास जी नित्य नये पद करि कें श्रीनाथ जी को सुनावते। और श्रीनाथ जी कुंभनदास जी के घर पधारते, और बहुत क्रीड़ा करते, खेलते वार्ता करते और बहुत कृपा कुंभनदास जी के ऊपर करते। अब रामदास जी श्रीगोवर्द्धन नाथ जी की सेवा करन लागे।

सो एक समय मलेच्छ को उपद्रव भयौ। सो यहाँ मानिकचंद पांडे, सद्दू पांडे, रामदास चौहान, कुंभनदास सब मिलि कें विचार कियौ जो यह मलेच्छ आयौ है सो यह धर्म को द्वेषी है सो कहा कर्तव्य है। तब सब ने ही कही जो यामें कहा कर्तव्य कहा पूछनो, अपनो विचारसौं कहा होत है, ताते श्रीनाथ जी को पूछौ जो महाराज कहा करें। तब श्रीनाथ जी ने आज्ञा दीनी जो हमको यहाँ ते ले चलो हम यहाँ ते उठेंगे। तब सबन नें पूछौ जो महाराज कहाँ पधारोगे। तब आपनें श्रीमुख सों कह्यौ जो टोंड के घने में चलेंगे। तब एक भैंसा मगायौ ता पर श्रीगोवर्द्धन नाथ जी को बैठाये। तब एक ओर ते तो रामदास पकरें रहै और एक ओर ते कुंभनदास पकरे रहै और सब सेवक संग चलें जात है। तहाँ घने में काँटे बहुत हुते सो उहाँ काँटेन में धेठे सो वस्त्र सबन के फटि गये और सरीर में काँटे लगे दुःख बहुत पायौ। सो घने में एक तालाब हुतो तहाँ रूखन को एक चौक है तहाँ बड़े रूख नीचे श्रीनाथ जी बिराजे। सो कछुक सामग्री संग्रह हुती सो रामदास ने भोग धरि जल को करुआ भरि कें आगे धरि कें सब वैष्णव

चलिये, हम तो आये हैं सो आपको ले जायगे। तब कुम्भनदास नें मन मे विचार कीयौ जो बिन जाये तौ निर्वाह न होयगौ सो कुम्भनदास जी तत्काल उहाँ तें पनहिं पहिर के चले।

तब कुम्भनदास जी को लेवे को आये हुते तिनने कही जो बाबा सवारी मे बेठिये। तब कुम्भनदास ने कह्यौ जो भैय्या में तौ कबहूँ बेठ्यो नाहीं। पाछें ऐसे ही चले। सो फतह[२]पुर सीकरी आय पहुँचे। सो देशाधिपति के डेरा हुते तहाँ गये। तब मनुष्यन नें देशाधिपति सो कह्यौ जो कुम्भनदास जी आये हैं। तब देशाधिपति ने कुम्भनदास सो कही जो कुम्भनदास जी आवो बेठो। सो आय बेठे। सो वह स्थल केसो है जामे जड़ाव की रावटी, तामें मोतीन की झालरी लगी है ऐसो स्थल है, तामे बेठे। तब मन मे बहुत दुःख लाग्यौ और कह्यो जो यामो तौ हमारे ब्रज के हाँसन के रूख आछे हैं सो जिनमे श्रीगोवर्द्धन नाथ जी खेलत हैं। तब इतने में देशाधिपति बोल्यौ जो कुम्भनदास जी तुमने बिसनपद बहुत कीये हैं सो मेने तुमको बुलायो है ताते तुम कछू बिसनपद गावो। तब कुम्भनदास जी तौ मन में कुढे हुते जो विचारें जो कहा गाऊँ मेरी वाणी के भक्ता तौ श्रीगोवर्द्धनधर हैं और कछू गाये बिना मेरो काम चलेगौ नाहीं ताते ऐसो गाऊँ जो कबहूँ मेरो नाम न लेय। काहे ते जो याके सग ते मेरे प्रभू छूटे हैं ताते कठोर वचन कहूँ जो बुरो मानेगौ तो कहा करेगो। तब यह मन में आई "जो जाको मन मोहन सग करे एको के सब से नहीं

---

२ फते।

कें कुभनदास ने गायौ। पाछें नित्य ऐसे पद कुंभनदास जी देव दमन को सुनावते ।

तब कुभनदास जी के पद सब जगत में प्रसिद्ध भये सो सब लोग इनके पद गावते। तब इनको पद काहू कलामत ने सीख्यौ सो फतेपुर सीकरी में देशाधिपति के आगें कुभनदास जी को पद कीयो भयौ पद वा कलामत ने गायो। सो सुनि के देशाधिपति को चित्त वा पद मे गड़ गयौ और माथो धुनौ जो ऐसेहु महापुरुष ह्वै गये हैं जिनको ऐसे दर्शन परमेश्वर के होत हैं। तब कलामत ने कह्यौ जो अजी साहब अब हूँ हैं। सो सुनि कें देशाधिपति बहुत प्रसन्न भयौ और वा कलामत से कह्यौ जो वे कहां हैं। तब वा कलामत से कही जो श्रीगोवर्द्धन के पास जमुनावतौ गांव है तहां वे रहत हैं। तब देशाधिपति ने कही जो यहाँ बुलावो हम उन्सो मिलेंगे। तब देशाधिपति ने मनुष्य और असवारो कुम्भनदास के बुलायवे को भेजे। तब कुम्भनदास जी तो घर हुते परासोली मे बेठे हुते सो मनुष्यन ने उहाँ बताय दीये। तब कुम्भनदास जी घर तो हुते नाहीं पातसाह ने याद कीये हो।[1] तब कुम्भनदास ने कही जो भैय्या मे कछू देशाधिपति को चाकर तौ नाहीं मेरो देशाधिपति सो कहा काम है। तब देशाधिपति के मनुष्यन ने कही जो बाबा हम तौ काम कछू समझत नाहीं परि हमको देशाधिपति को हुक्म है जो कुम्भनदास को ले आवो, ताते यह पालकी है यह घोडा है जापर चाहो ता पर बेठि कें

१ तब कुम्भनदास सो कही जो तुमको पातसाह नें याद कीयो है।

यह पद मार्ग में गावत आये। सो आपकें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन किये। श्रौर दोय दिन लो दर्शन न भये सो कुभनदास जी कों दोय जुग की बराबर बीतो। सो श्रीमुख देखते ही सब दुःख बिसर गयौ। तब एक पद गायौ। सो पद॥

राग धनाश्री

नेन भरि देखैा नंदकुमार।
ता दिन तें सब भूलि गयौं हो बिसरौं पन परवार॥ १॥
बिन देखे हों बिकल भयो हो अंग अंग सब हारि।
तातें सुधि है सांवरो मूरति की लोचन भरि भरि वारि॥ २॥
रूप रास पैमित[1] नहीं मानो कैसें मिले लो कन्हाई।
कुभनदास प्रभू गोवर्धन धर मिलिये बहुर री माई॥ ३॥

राग धनाश्री

हिलगिन कठिन है या मन की।
जाके लिये देखि मेरी सजनी लाज गई सब तन की॥ १॥
धर्म जाउ अरु लोग हँसो सब अरु गावो कुल गारी।
सो क्यो रहे ताहि बिन देखे जो जाको हितकारी॥ २॥
रस लुब्धक निमखन छांड़त ज्यो आधीन मृग गानो।
कुभदास सनेह परम श्रीगोवर्द्धन धर जानो॥ ३॥

ऐसे पद बहुत कुभनदास जी नें गाये। सो सुनि के श्रीनाथ जी बहुत प्रसन्न भये श्रौर कह्यौ "यह मो बिन रहत नाहीं"।

---

१ परिमित।

सिरने जो जग वैर परे"। यह विचारि के ता समय कुम्भनदास जी ने एक नयो पद करि कें गायो ॥ सो पद ॥

राग सारंग

भक्तन को कहा सीकरी काम ।
आवत जात पन्हैया टूटी विसर गयो हरि नाम ॥ १ ॥
जाको मुख देखे दुख लागै ताको करन परी परनाम ।
कुंभनदास लाल गिरधर बिन यह सब झूठो धाम ॥ २ ॥

यह पद गायो सो देशाधिपति अपने मन मे बहुत कुढ्यौ[1] और कह्यो। जो इनको काहू बात को लालच होय तो मेरो जस गावें इनको तो अपने परमेश्वर सो साँचो सनेह है। इतनो कहि कें देशाधिपति नें कुंभनदास कों सीख दीनो। तब कुंभनदास जी उहाँ ते चले सो मार्ग मे आवत अति क्लेश जो कब हों प्रभून को श्रीमुख देखो। सो ऐसो विचार के कुंभनदास जी आवत हैं ता समय पद गायो। सो पद ॥

राग धनाश्री

कबहू देख हों इन नैननु ।
सुंदर श्याम मनोहर मूरत अंग अंग सुख दैननु ॥ १ ॥
वृन्दावन बिहार दिन दिन प्रति गोप वृन्द संग लैननु ।
हँसि हँसि हरखि पतौवन पावन बाँटि बाँटि पय फैननु ॥ २ ॥
कुंभनदास किते दिन बीते किये रेणु सुख सैननु ।
अब गिरधर बिन निस और वासर मन न रहत क्यों चैननु ॥४॥

---

1 कुढ्यो ।

चलो । तब राजा मानसिंह ने कह्यौ जो यहाँ तो अवश्य चलनो ये ठाकुर सब व्रज के राजा हैं ताते इनके दर्शन तो अवश्य करने । तब तहाँ ते चले । सो गोपालपुर गाँव आये । तब आयकें पूछी जो दर्शन को कहा समय है तब काहू ने कही जो उत्थापन के दर्शन तो होय चुके हैं अब भोग के दर्शन होयगे । तह यह सुनि कें राजा मानसिंह श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन को गिरराज ऊपर आये । सो उष्णकाल के दिन, मार्ग के श्रमित, दूर के चले आये, सो गरमी में राजा बहुत व्याकुल भयो हुतो । इतने में भोग के दर्शन खुले सो राजा मानसिंह को मणिकोठा में ले गये ।

तिन दिनन में श्रीनाथ जी की सेवा वैभव सो होत हुती । बड़ो मंदिर सिद्धि भयौ हुतौ । श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के आगें गुलाब जल को शृङ्गार भयो हुतो । निज मंदिर मणि कोठा तिवारी सब जल मय होय रहे हुते । सो ता समय राजा मानसिंह दर्शन को गये हुते सो श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करिकें साष्टाग दंडवत कीनी और गरमी में राजा व्याकुल भयो हुतो सो सीतलताई भई । बड़ो चैन भयो । और श्रीगोवर्द्धन नाथ जी को श्रीमुख देख कें राजा बहुत प्रसन्न भयो और कह्यो जो साक्षात पूरण ब्रह्म श्रीकृष्ण वृन्दावन चन्द्र श्रीगोवर्द्धन नाथ जी हैं । आगें श्रीभागवत में सुन्यो हुतो सो आज देखे । आज को दिन है सो धन्य है और आज मेरे बड़ो भाग्य हैं । और मन में कह्यौ जो यह भोग को समय है सो तौ प्रभुन की राजधानी को समय है । सो वे प्रभू विराजे हैं आगे ताल मृदंग बाजत हैं कीर्तन होत है । सो कुम्भनदास जी ठाड़े ठाड़े

प्रसंग ३

और एक समय राजा मानसिंह सब ठौर ते दिग्विजय करिकें अपने देस कू चले। तब मन में विचारे जो बहुत दिन में आये हैं ताते मथुरा वृन्दावन होयकें चलनों। सो यह विचार कें आगरे ते चले सो मथुरा आये। तब विश्रात स्नान करिकें श्रीकेसो राय जी के दर्शन करिकें वृन्दावन चले। सो उष्णकाल के दिन हुते तब वृन्दावन के सब महतन ने जानी जो आज यहाँ राजा मानसिंह दर्शन को आवेगो। सो यह जानि के श्रीठाकुर जी को आछे आछे जरी के बागे बहुत आभरण पहराये पिछवाई चंदोवा सब जरीन के बांधे। इतने में राजा मानसिंह दर्शन को आयो। सो भीतरि मंदिर के आय कें श्रीठाकुर जी के दर्शन कीये। सो उष्णकाल के दिन हुते सो बहुत गरमी पड़े। सो ता समय राजा मानसिंह पे ठाडो न रह्यो गयो। सो ऐसे दर्शन चार पाँच जगह खडे हुते। सो तहाँ सब ठौर दर्शन करि सब ठौर ते विदा होयकें अपने डेरा में आये। सो डेरा आय कें मन में विचारे जो अबही कूच करें।

सो वहाँ सो असवार होय कें चले सो तीसरे पहर गोवर्द्धन गांव आये। सो मानसी गंगा ऊपर डेरा कीयै। सो तहाँ श्रीहरदेव जी के दर्शन किये। सो वहाँ वृन्दावन के महतन ने बड़े ठाठ बनाये हैं तेसोई यहाँ ठाठ बनाय राख्यौ हुतौ। सो राजा मानसिंग तहाँ ते दर्शन करि के चले। तब काहू ने कही जो महाराज यहाँ श्रीगोवर्द्धननाथ जी बहुत सुन्दर ठाकुर हैं तहाँ आप दर्शन को

श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के आगें, कोन गावत हुतो। इनने ऐसे विसनपद गाये हैं जो कछू कहिवे में नाहीं आवत। तव काहू ने कही जो महाराज एक ब्रजवासी है, कुभनदास नाम है, सो आपने सुने ही होयँगे देसाधिपति सो मिले हुते सो हैं। तव राजा मानसिंग ने कही जो हम हू इनसो मिलैं तो आछैा।

तव राजा मानसिंघ सवारे उठे सो श्रीगिरिराज की परिक्रमा को निकसे जो परासोली आये। सो परासोजी में कुम्भनदास जी न्हाय कें वैठे। इतने में श्रीगोवर्द्धन नाथ जी पधारे। श्रीमुख सों कहें जो कुम्भनदास जी हों तो एक वात कहूँगो। तव इतने में राजा मानसिंग आयो सो कुभनदास जी को प्रणाम करि कें वैठे और श्रीनाथ जी तो उहाँ ते दूर जाय ठाडे भये। सो श्रीनाथ जी तो एक कुम्भनदास जी को देखे है और इनकी भतीजी को देखे हे। तव कुभनदास जी की द्रष्टी तो श्रीनाथ जी के सग ही गई सो श्रीनाथ जी वैठे हैं तहाँ कुम्भनदास जी देखवो करे। तव भतीजी वोली जो वावा राजा वैठे हैं। तव कुभनदास जी ने कही जो मैं कहा करूँ जो वेठे हैं। तो जा[1] वात कहत हुते सो तो भाजि गये सो अव कहेंगे। तव दूर ते श्रीनाथ जी कहें जो कुम्भनदास मे वात कहूँगो। तव कुभनदास जी प्रसन्न भये और भतीजी सो कह्यो जो अमुकी आरसी लाउ तिलक करो। तव भतीजी ने कही जो वावा आरसी तो पडिया पी गई। तव राजा ने कुम्भनदास जी की भतीजी सो कही जो अरी छोरी पडिया

[1] जो।

मणि कोठा में दर्शन करत हैं और कीर्तन गावत हैं। सो राजा मानसिंग को मन या पद में गड गयौ हुतौ। तैसोंई कोटि कदर्प लावण्य स्वरूप और तैसोई कीर्तन कुंभनदास जी करत हुते। सो पद ॥

राग नट

रूप देख नैना पल लागे नाहीं।
गोवर्द्धन के अंग अंग प्रति निरखि नैन मन रहत तहीं ॥१॥
कहा कहौ कछु कहत न आवै चित्त चोरयो[1] मांगवे दही ॥
कुम्भनदास प्रभू के मिलन की सुन्दर बात सखियन सो कही ॥२॥

राग धनाश्री

आवत मोहन मन जु हरयौ है ॥
हौं ग्रह अपने सचु सो बैठी निरखि वदन अम्बरा बिसरयौ है ॥१॥
रूप निधान रसिक नंदनंदन निरखि वदन धीरज न धरयौ है ॥
कुम्भनदास प्रभू गोवर्द्धन धर अंग अंग प्रेम पियूष भरयौ है ॥२॥

ऐसे पद कुम्भनदास जी गावत हैं। इतने में राजभोग के दर्शन होय चुके। तब राजा मानसिंग दंडौत करि कें अपने डेरा में गयौ। तब कुम्भनदास जी संध्या आरती के दर्शन करि कें अपनी सेवा सों पहुँच कें अपने घर कों गये। तब राजा मानसिंह अपने डेरा मे जाय कें अपने पास के मनुष्य हुते तिनमे श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के सिंगार की वार्ता करन लागे और कह्यौ जो यह

१ चाख्यौ।

श्रीनाथ जी ने यह बात कही और बहुत प्रसन्न भयो। तब फेरि कुम्भनदास जी श्रीगिरिराज ऊपर आय कें श्रीनाथ जी की सेवा में तत्पर भये।

प्रसंग ४

और एक समय कुम्भनदास जी को मिलिबे को वृन्दावन के महंत हरिवंश भृत आये। सो यह जानि कें आये जो महापुरुष है, इनसो श्रीठाकुर जी बोलत हैं, बातें करत हैं और काव्य इनको सुनी जो कीर्तन बहुत सुन्दर कीये, तातें ऐसे पद श्रीठाकुर जी के साक्षात्कार बिना न होय। यह जानि कें कुम्भनदास सो मिलवे आये। सो कुम्भनदास जी सो मिलि कें बहुत प्रसन्न भये और कह्यौ जो कुम्भनदास जी तुमने विसनपद बहुत कीये सो हमनें आप कें सुने हैं, और आप को पद श्रीस्वामिनी जी को नाहीं सुन्यो तातें आप कोइ स्वामिनी जी को पद सुनावो। तब कुम्भनदास जी नें श्रीस्वामिनी जी को पद करि कें गायो॥ सो पद॥

राग रामकली

ताल चरचरी

कुमरि राधिका के तुव सकल सौभाग्य
की वा वदन पर कोटिस[1] चंद्रवारौ॥
खंजन कुरंग सत कोटि जघन ऊपर
सिंह सत कोटि उपरि न्योछावर उतारौ।

---

१ कोटिसत।

कहा पी गई। तब वह कठौठी मे पानी लाय के कुभनदास जी के आगें धरयौ तब कुम्भनदास जी वा मे देखि कें तिलक करन लागै।

इतने मे राजा मानसिग ने अपनी सोने की आरसी कुभनदास जी कें आगें धरी। और कह्यौ जो बावा यामें देखि कें तिलक करिये। तब कुभनदास जी बोले जो अरे भैय्या याको हाँ कहा करूँगो, हमारे तैा यहाँ छानि के घर हैं ताते कोऊ या के पाछें हमारो जीव लेवगो ताते हमे तैा यह नाहीं चाहियत है। तब राजा मानसिंग ने इनके आगें सोने की थैली धरी। तब कुभनदास ने कह्यो जो भैया हमको धन तौ चाहिये नाहीं हमारे तौ यह खेती है ताको धन आवत है सो खात हैं। तब राजा मानसिग ने कह्यौ जो भलैा आपको गाम है ताको लिखैा है[1] करि देउ। तब कुम्भनदास ने कह्यो जो भैया हो तो ब्राह्मण नाहीं जो तेरो उदक लेउ। तब फेरि राजा मानसिग ने कह्यो जो बावा कछु तौ आज्ञा करो। तब कुंभनदास ने कह्यो जो हमारो कह्यौ करोगे। तब राजा मानसिंग नें हाथ जोर कह्यौ जो महाराज आप कहोगे सो करूँगो। तब कुम्भनदास नें कह्यौ जो फेरि मेरे पास तुम मत आइयो। तब राजा मानसिंग नें कह्यौ जो महाराज धन्य है, यह माया के भक्त तो सगरी पृथ्वी मे फिरो सो बहुत देखे परि भगवद्भक्त तैा एक यही देखे। यह कहि कें राजा मानसिंग कुभनदास को दंडात करि कें उठि चल्यैा। तब फेरि आय कें कुम्भनदास सो

१ दो।

पधारे। सो श्रीगुसाईं जी नाथ जी द्वारि पधारे। सो श्रीनाथ जी कों सेवा सिंगार किये ता पाछें आप भोजन करिकें गादी ऊपर बिराजे। तब सब सेवक दर्शन के। आये। तब बात चलत में कुम्भन दास की बात चली। तब काहू वैष्णव नें कह्यो जो महाराज कुभनदास जी को द्रव्य को बहुत सकोच है सात वेटा हू हैं और उपजत तो एक खेती की है ताको धन आवत है तासो निरवाह करत हैं। सो यह बात श्रीगुसाईं जी ने अपने मन में राखी। ता पाछें उत्थापन के समय कुम्भनदास जी दर्शन को आये तब श्री गुसाईं जी अपने श्रीमुख सो कहे जो कुभनदास हम श्रीद्वारिका रणछोड़ जी दर्शन को पधारेंगे और विदेसहू होयगो। वैष्णव नें बहुत करिके लिख्यौ है ताते जो तुम सग चलो तो विदेस मे भगवदीय को ग्रहकाज बाधा न होय। तब भगवदीय को काल व्यतीत हो जाय कछु जान्यों न परे। और मे सुन्यौ है जो कछू तुम्हारें द्रव्य को सकोच है सो वहाँ सिद्धि होयगो ताते सर्वथा तुमको चलो चाहिये। तब कुभनदास जी नें कही जो आज्ञा। इतने मे दर्शन को समय भयो सो श्रीगुसाईं जी आप स्नान करिकें श्रीनाथ जी के मदिर मे पधारे। श्रीनाथ जी की सेवा सो पहुँचिकें श्रीनाथ जी को पैाढाय कें बेठक में पधारे और कुम्भन दास जी को सीख दीनी जो कुभनदास जी तुम सेवा सो पहुँचि कें वेग आईयो हम कालि आरती करिकें अपछरा कुण्ड ऊपर जाय रहेंगे।

मत्त सत कोटि चालि पर कुम्भसत
कोटि इन कुचन परि वारि डारो ॥१॥
कोर दश कोटि दशनन परि कहिन वारौं
एक कदूरबहू कसत कोटि अधरन ऊपर वारि रुचिर गर्भ टारौं ॥
नाग सत कोटि वैनी ऊपर कपोत सत कोटि
करि जुगल पर वार ने नाहिन कोऊ लोक उपमा जुधारौं ॥२॥
दासकुभन स्वामिनी सुनएसिख
अति अद्भुत सुठान कहा लगि समारौं ॥
लाल गिरधर कहत मोहितैा
हिलौजी[1] वह रूप छिन छिन निहारौं ॥३॥

यह पद कुम्भनदास ने गायो सो सुनि के महत बहुत ही रीझे श्रौर कहैं जो हमने श्रीस्वामिनी जी के पद बहुत किये हैं परि यहां उपमा दीनी ही श्रौर वारि फेरि डारी ताते कुभनदास जी श्राप बड़े महापुरुष हो श्रापकी सराहना कहाँ ताँई करिये। या महत नें कुम्भनदास की बड़ी बडाई करी बहुत रीझे। ता पाछें वे महत श्रादि सब कुभनदास जी सो विदा होयकें श्रपने घर गये।

प्रसग ५

श्रौर एक समय श्रीगुसाईं जी श्रीगोकुल मे श्रपने घरते श्रीनवनीत प्रिया जी सो श्राज्ञा माँगि कें विदेसार्थ[2] द्वारिका को

---

१ होरहिनोजी। २ विदेशार्थ।

श्याम सुन्दर संग मिल खेलन की आवत जिये अपेखें ।
कुंभनदास लाल गिरधर विन जीवन जन्म अलेखें ॥ ३ ॥

यह पद कुम्भनदास नें गायो । सो श्रीगुसाईं जी आप डेरा के भीतर सुनो । सो कुंभनदास जी को कलेश श्रीगुसाईं जी सो सह्यौ न गयो । सो श्रीगुसाईं जी आप डेरा के बाहर पधारें और श्रीमुख ते कह्यौ जो कुम्भनदास अब तुम वेगि जाउ तुम्हारो विदेस होय चुक्यो । और जो तुम्हारी अवस्था है ऐसी उनकी अवस्था है । कैसें जानिये । जो श्रीअक्का जी नें गज्जन धावन को पान लेवे को पठायो । सो गज्जन को तो भगवद आसक्ति देखें विना एक क्षण हू न रह्यो जाय । सो गज्जन धावन पान लेवे को बाहिर गये । सो थोरी सी दूर गये और ज्वर चढ़ि आयो । सो मूर्छा खायकें गिरें और श्रीअक्का जी ने श्रीनवनीत प्रिया जी को भोग समर्प्यो । तव श्रीनवनीत प्रिया जी नें गज्जन धावन को बोल न सुन्यो तव श्रीनवनीत प्रिया जी नें अपने श्रीमुख सो कह्यो जो मेरो गज्जन धावन कहां है । तव श्रीअक्का जी नें कह्यौ जो वह तो पान लेवे को गयो है । तव श्रीनवनीत प्रिया जी नें कह्यो जो मेरो गज्जन धावन आवेगो तव आरोगूंगो । सो श्रीहस्त खेंच कें वेठ रहे । तव वेगि गज्जन धावन को बुलायो । तव गज्जन धावन ने कही जो बाबा आरोगो तव श्रीनवनीत प्रिया जी आरोगे हैं । यह श्रीआचार्य जी महाप्रभू की मर्यादा है जो जितनो सेवक को स्वामी ऊपर स्नेह होय । और भगवद्गीता मे भगवान कहें हैं । श्लोक ॥ ये यथा मां प्रपद्यन्तेस्तांस्तथैव भजाम्यहं ॥ यह आधो श्लोक कह्यो ।

तब कुंभनदास जी श्रीगुसाईं जी को दंडोत करिकें अपने घर को आये। सवारे सेवा सों पहुँच कें श्रीनाथ जी के दर्शन करिकें अपछरा कुण्ड ऊपर आये और श्रीगुसाईं जी श्रीनाथ जी सों सीख मागि कें आप नीचे आये। पाछें आप भोजन किये और सब सेवकन को महाप्रसाद लिवायौ। ता पाछे समयें ताही कौ[1] महूर्त हुतौ सो श्रीगुसाईं आप पर्वत नीचे आये। सोई अपछरा कुण्ड ऊपर आये। सो तहाँ अपछरा कुण्ड ऊपर डेरा करे हुते। सब सेवक आगारु सो ठाड़े हुते। सो श्रीगुसाईं जी डेरा पधारि कें पोढे। इतने में सब सेवक सामान लेकें वेऊ आये। सो कुम्भनदास उहाँ वैठि के विचारत हुते। कहिये जो कहिवे की होय प्रान नाथ बिछुरन की विरियाँ जानत नाहि न कोऊ। यह विचार करत उत्थान को समय भयौ। तब आप गुसाईं जी आप भीतर डेरा में जागे। और कुभनदास जी कू दर्शन की सुधि आई सो यहाँ पुछरी की ओर कोनें मे जाय कें वैठि कीर्तन गावत है और आखिन मे ते जल को प्रवाह वहत है। सो कुम्भनदास ने एक पद गायौ॥ सो पद॥

राग सारग

केते है जुग रे बिन देखें।
तरुण किशोर रसिक नदनदन कछुक उठति मुख रेखें॥ १॥
यह शोभा यह काति वदन की कोटिक चद विसेखें।
वह चितवन यह हास्य मनोहर वह नटवर वपु भेषें॥ २॥

---

[1] ताही समय को।

श्याम सुन्दर सग मिल खेलन की आवत जिये अपेखें ।
कुमनदास लाल गिरधर विन जीवन जन्म अलेखें ॥ ३ ॥

यह पद कुम्भनदास नें गायो । सो श्रीगुसाईं जी आप डेरा के भीतर सुनों । सो कुभनदास जी को कलेश श्रीगुसाईं जी सो सह्यो न गयो । सो श्रीगुसाईं जी आप डेरा के वाहर पधारें और श्रीमुख ते कह्यौ जो कुम्भनदास अब तुम वेगि जाउ तुम्हारो विदेस होय चुक्यो । और जो तुम्हारी अवस्था है ऐसी उनकी अवस्था है । कैसें जानिये । जो श्रीअक्का जी नें गज्जन धावन को पान लेवे को पठायो । सो गज्जन को तो भगवद आसक्ति देखें विना एक क्षण हू न रह्यो जाय । सो गज्जन धावन पान लेवे को बाहिर गये । सो थोरी सी दूर गये और ज्वर चढ़ि आयो । सो मूरछा खायकें गिरें और श्रीअक्का जी ने श्रीनवनीत प्रिया जी को भोग समर्प्यो । तब श्रीनवनीत प्रिया जी नें गज्जन धावन को बोल न सुन्यौ तब श्रीनवनीत प्रिया जी नें अपने श्रीमुख सो कह्यो जो मेरो गज्जन धावन कहां है । तब श्रीअक्का जी नें कह्यौ जो वह तो पान लेवे को गयो है । तब श्रीनवनीत प्रिया जी नें कह्यौ जो मेरो गज्जन धावन आवेगो तब आरोगूगो । सो श्रीहस्त खेंच कें बैठ रहे । तब वेगि गज्जन धावन को बुलायो । तब गज्जन धावन नें कही जो बाबा आरोगो तब श्रीनवनीत प्रिया जी आरोगे हैं । यह श्रीआचार्य जी महाप्रभू की मर्यादा है जो जितनों सेवक को स्वामी ऊपर स्नेह होय । और भगवद्गीता में भगवान कहें हैं । श्लोक ॥ ये यथा मा प्रपद्यतेस्तास्तथैव भजाम्यह ॥ यह आधो श्लोक कह्यौ ।

तब कुभनदास जी श्रीगुसाईं जी कों दृडोत करिकें अपने घर को आये। सवारे सेवा सों पहुँच कें श्रीनाथ जी के दर्शन करिकें अपछरा कुण्ड ऊपर आये और श्रीगुसाईं जी श्रीनाथ जी सों सीख मांगि कें आप नीचे आये। पाछें आप भोजन किये और सब सेवकन कों महाप्रसाद लिवायो। ता पाछे समयें ताही कैा[1] महूर्त हुतो सो श्रीगुसाईं आप पर्वत नीचे आये। सोई अपछरा कुण्ड ऊपर आये। सो तहाँ अपछरा कुण्ड ऊपर डेरा करे हुते। सब सेवक अगारु सो ठाड़े हुते। सो श्रीगुसाईं जी डेरा पधारि कें पोढे। इतने में सब सेवक सामान लेकें वेऊ आये। सो कुम्भनदास उहाँ वेठि के विचारत हुते। कहिये जो कहिवे की होय प्रान नाथ बिछुरन की विरियाँ जानत नाहि न कोऊ। यह विचार करत उत्थान को समय भयो। तब आप गुसाईं जी आप भीतर डेरा में जागे। और कुभनदास जी कू दर्शन की सुधि आई सो यहाँ पुछरी की ओर कोनें में जाय कें वैठि कीर्तन गावत हैं और आखिन में ते जल को प्रवाह वहत है। सो कुम्भनदास ने एक पद गायो॥ सो पद॥

राग सारग

केते है जुग रो विन देखें।
तरुण किशोर रसिक नदनदन कछुक उठति मुख रेखें॥ १॥
वह शोभा वह काति वदन की कोटिक चद विसेखें।
वह चितवन वह हास्य मनोहर वह नटवर वपु भेखें॥ २॥

---

१ ताही समय को।

कृष्णदास हैं। सो श्रीनाथ जी की गायन की सेवा करत हैं तासों आधो है। कुंभनदास जी कृष्णदास सो आधो क्यों कहैं ताको हेत यह जो श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने पुष्टि मार्ग प्रगट कीयो है। सो पुष्टि मार्ग कहा है जो व्रज भक्तन को हेत यह मार्ग प्रगट कीयो है। सो भगवदीय गाये हैं 'जो सेवा रीति प्रीत व्रज जन की जन हित जग प्रगटाई'। सो व्रज भक्तन की कहा रीति है जो श्रीठाकुर जी के सन्निधान तो सेवा करे श्रौर श्रीठाकुर जी वन में पधारे तब गुणगान करें। जो ये वस्तु होय तो श्राखो श्रौर इनमें एक होय तो श्राधो। ताते चत्रभुजदास सेवा श्रौर गुणगान हैं ताते श्राखो श्रौर कृष्णदास में एक सेवा है सो श्राधो। तब श्रीगुसाईं जी श्रीमुख ते कहें जो भगवदीय है तेई वेटा हैं श्रौर बहुत भये तो कौन काम के। यह चत्रभुजदास की वार्ता में लिखे हैं॥ वैष्णव ९०॥

(कुम्भनदास के पुत्र कृष्णदास की वार्ता)

सो वे कृष्णदास श्रीनाथ जी की गायन के ग्वाल[1] हुते। श्रीगुसाईं जी ने इनको गायन की सेवा दीनी हुती। सो कृष्ण दास श्रीनाथ जी की गायन की सेवा करते। सवारे खिरक सेवा सों पहुँच कें फेर गायन चरायवे को जाते। सो सगरे दिन कृष्णदास गायन की सेवा करते। सो एक गाय चराय कें पूछरी के पोर[2] कृष्णदास गायन के सग आवत हुते। सो सगरी गाय तो खिरक में आई श्रौर गाय वडी हुती ताको श्रौन[3] बहुत भारी हुतो सो

१ ग्वार। २ पूछरी की पैार। ३ ऐन।

ताते श्रीमुख मों कहें जो इहां तुम्हारी विवस्था श्रोर उनकी विवस्था है। सो ऐसैा कुभनदास कों श्रोर श्रीनाथ जी के विरह हुतो। ताते श्रीगुसाई जी नें कुम्भनदास कों सीख दीनी। तब कुभनदास नें श्रीनाथ जी के दर्शन कीये। तव कुम्भनदास ने एक पद गायो। सो पद॥

राग सारग

जो ये चैाप मिलन की होय॥

तो क्यों रहै ताहि विन देखें लाख करो जिन कैाय॥
जो ये विरह परस्पर व्यापे जो कछू जीवन बनै॥
लैाक लाज कुलको मर्यादा एकैा चित्त न गनै॥
कुम्भनदास प्रभू जाय[1] तन लागी श्रोर न कछू सुहाय॥
गिरधर लाल तोहि विन देखे छिन छिन कलप विहाय॥

सो यह पद कुम्भनदास ने श्रीनाथ जी के सन्निधान गायो। सो सुनि कें श्रीनाथ जी बहुत प्रसन्न भये। सो कुभनदास श्रीनाथ जी कैा देख कें प्रसन्न भये॥

प्रसग ६

श्रोर एक समय कुम्भनदास जी श्रीगुसाइ जी के पास वैठे हुते। तव कुम्भनदास नें श्रीगुसाई जी सो कह्यौ जो महाराज वेटा डेढ है श्रोर हे तो सात[2]। तव श्रीगुसाई जी नें कह्यो जो कुम्भनदास डेढ कैा कारन कहा। तव फेरि कुम्भनदास जी कहें जो महाराज श्राधैा वेटा तैा चत्रभुजदास श्रोर श्राधैा वेटा

१ जादि। २ सात।

गाय उत्तम लोक कों ले जात है और कृष्णदास नें तौ श्रीनाथ जी की गाय बचाई हैं ताते कृष्णदास को गाय कैसें छोड़ि आवैगी। और गुसाईं जी ने कह्यौ कुभनदास जी कहाँ है । तब काहू वैष्णवनें कही जो महाराज कुम्भनदास जी को कलेश बहुत बाधा कियो है । जो कुम्भनदास जी ऊपर आवत हुते, सो कुम्भनदास जी के आगे काहू नें कृष्णदास के समाचार कहें, सो सुनत ही कुम्भन दास जी मूर्छा खाय कें गिरे। सो लोग बहुत ही बुलावत हैं परि आवत नाहीं।

तव श्रीगुसाईं जी ने अपने श्रीमुख सो कह्यो जो फेरि कुम्भन-दास जी की खबर लावो जो कुम्भनदास जी की देह कैसे हैं। सो वे आय कें कुभनदास जी को पुकारें। तब ये समाचार श्रीगुसाईं जी सो कहें जो महाराज कुम्भनदास जी तो कछू समझत नाहीं। तब श्रीगुसाईं जी तो सेन भोग के दर्शन करि कें श्रीनाथ को पेढाय कें आप नीचे पधारे। सो देख कें मार्ग के सामें कुम्भनदास जी परे हैं और लोग चारयो ओर ठाडे हैं सो कहत हैं जो कुभनदास जी कैसे भगवदी हैं परि पुत्र को सोक बहुत बुरे होत है, या पीरा सो कोई बच्यो नाहीं, काहे ते जो अपनी आतमा है। तब यह बात लोगन की सुनि कें श्रीगुसाईं जी मन मे विचारे जो यहाँ तो कारण कछू और है और लोगन को तो कछू और भासत है। ताते भगवदीय को स्वरूप करिबे के लिये श्रीगुसाईं जी अपने श्रीमुख सो कही जो कुम्भनदास जी सधारे तुम बेगो

यह गाय बहुत हरवे हरवे चलती। सो या गाय को आवत अँधियारो परि गयो। सो तहाँ पर्वत के नीचे अँधियारे में एक नाहर निकस्यो सो गाय पे दौरयो। तब कृष्णदास कहें जो अरे अधर्मी यह श्रीनाथ जी की गाय हैं तू भूखो हो तौ मेरे ऊपर आऊ। तब इतने मे गाय तौ भाजि खिरक में गई और नाहर नें कृष्णदास को अपराध कीयो।

और ऊपर कहि आये हैं जो गाय सब खिरक मे आई। तब श्रीनाथ जी आप गाय दुहिवे को आये। सो सब गाय ग्वाल दुहत हैं और यह बड़ी गाय खिरक मे आई सो यह गाय कों श्री[1] दुहिवे को वैठे और कृष्णदास बछरा थामें हैं और यह गाय बछरा[2] को चाटत है। सो ऐसे दर्शन कुभनदास जी को भयें। ता पाछें गोदुहन करि कें श्रीनाथ जी गिरिराज ऊपर मदिर में पधारे। तब श्रीगुसाईं जी ने भोग समर्प्यो और कुम्भनदास जी खिरक मे से आये सो दडौती सिला पास ठाडे भयें। इतने में समाचार आये जो कृष्णदास को नाहर ने मारयो। सो सुनि कें कुम्भनदास को मूर्छा आय के गिरे। सो ऐसे गिरे जो देहानुसधान भूल गये। तब कुभनदास जी कैा सब कोऊ बुलावे परि बोले नाहीं। तब यह समाचार काहू नें श्रीगुसाईं जी सो कहें जो महाराज कृष्णदास को नाहर नें मारयो और गायकों कृष्णदास ने बचाई सो कृष्णदास उहाँ ही परे हैं। तब गुसाईं जी कहें जो गाय कबहू न छोडि आवै। अत समय गाय सकल्प करत है ताको

१ श्रीनाथ जी। २ बछरा।

राग धनाश्री

अब दिन रात्रि पहार से भये ।
तब ते नियतट नाहिनि जबते हरि मधुपुरी गये ।
यह जानिये विधाता जुग सम कीने जाम नये ।
जागत जाग विहातन के पेसें प्रीत पठये[1] ।
व्रजवासी अतिपरम दीन भये व्याकुल सोच जये ।
उन प्राण दुखित जलरुह गन दारुण हेम पये ।
कुम्भनदास बिछुरत नदनदन बहुत सताप करे ।
अब गिरधर बिन रहत निरनर नैात न नीर छ्ये ॥

राग केदारा

औरन कों समीप बिछुरनो आयो मेरी हिसा ।
अब को जसोवे सुख अपने आली मोकों चाहत रिसा ।
ना जानो यह विधाता की गति मेरे आक लिखे पेसैा कैान रिसा ।
कुम्भनदास प्रभू गिरधर कहत निस दिन रह ज्यों चातक घन त्रिसा ॥

पेसे पद गाय गाय कुम्भनदास जी नें सूत ते पद कियें । पाछें शुद्ध होय कें कुभनदास जी भगवत्सेवा मे आये । पेसी जिनको दर्शन की आरति सो वे कुम्भनदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के पेसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं । ताते इनकी वार्ता को पार नहीं ताते इनकी वार्ता कहाँ ताईं लिखिये ॥ प्र० १ ॥

---

१ छ्वे ।

आईयो तुमको श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करावेंगे[1] तुम मन मे खेद मति करो। इतनो श्रीगुसाई जी श्रीमुख सो कहे तब कुम्भनदास जी उठि ठाड़े भये और प्रसन्न भये। तब श्रीगुसाई जी को दृष्टांत करिकें कुम्भनदास को जो कार्य करनो है सो सब कीयो।

पाछें सवारे कुमनदास जी दर्शन को आये। श्रीनाथ जी को सिंगार करिके श्रीगुसाईं जी सों कह्यो जो प्रथम कुम्भनदास जी को दर्शन कराउ देय। सो कुम्भनदास जी वैष्णवन के ऊपर यह कार कियो जो सूतकी को कोन मंदिर में जान देतो। सो कुम्भनदास जी के अनुग्रहते सब कोउ दर्शन करत हैं। सो कुमन दास जी नित्य एक वेर दर्शन करिकें परासोली में जाय वैठते। सो वहाँ वैठे वेठे विरह के पद गावते। सो पद॥

राग धनाश्री

तुम्हारे मिलन विन दुखित गुपाल।
अति आतुर व्रज सुन्दर प्यारे विरही वेहाल॥ १॥
सीतल चंद नयन भयो दाहत किरण कमल जनु जाल।
चदन कुसुम सुहाय घनसार लगन वदी[2] ज्वाल॥ २॥
कुम्भनदास प्रभूनधन तुम विन कनकलता मानो सूपी
जीव मा[3] काल।
अधरामृत वशी सींचि लेउ तुम गिरि गोवर्द्धन लाल॥ ३॥

१करावेंगे। २ वदी। ३ मा।

जब वा छत्रानी की जात मे बहुत चर्चा फेली तब वा छत्रानी को सुसरो तथा पती विनने विचार कीनो गाम मे रहनो नहीं। तब उहां ते घर के सगरे मनुष्य श्रीगोकुल जी कू चले कारण के सब वैष्णव हते। तब नंददास जी कू खबर भई तब नंददास जी हूं विन के पाछें गये। रस्ता मे विन से दूर दूर चले जाय और विन सें दूर डेरा करें। ऐसे कितने दिन पीछे व्रज मे पहुँचे। सो यमुना जी उतरवे के समय वा छत्री नें कछू मलाहन कु दीनो और ये कही के या ब्राह्मण कू मती उतारो ये हमकू दु:ख देत हैं। जब सब उतरके श्रीगोकुल गये। श्री गुसाईं जी के दर्शन करे। जब श्रीगुसाईं जी ने आज्ञाकरी जो या ब्राह्मण कू यमुना जी के पार क्यों बैठाय आये हो। तब वा छत्री के मन में ऐसी आई कोई ने विनकी बात कही है अथवा जान गये हैं। सो छत्री मन में बहुत पछतायवे लग्यो।

जब श्रीगुसाईं जी ने एक मनुष्य पठायके वा ब्राह्मण कू पार सो बुलाय लीनो। जब वा नंददास जी नें आयकें श्रीगुसाईं जी के दर्शन करे। साक्षात् कोटिकंदर्प लावण्य पूर्ण पुरुषोत्तम के दर्शन भये। तब नंददास जी नें साष्टांग दंडवत करी और हाथ जोर कें ठाडे रहे और जा स्वरूप के दर्शन वा छत्रानी के नेत्रन मे नंददास जी कू होत हते वही स्वरूप के दर्शन श्रीगुसाईं जी के भये। तब नंददास जी को मन वहां ते छूटके साक्षात् श्रीगुसाईं जी के चरणारविंद मे लग्यो। तब नंददास जी हाथ जोर कें ठाढे रहे। जब श्रीगुसाईं जी नें आज्ञा करी नंददास जी स्नान

श्रीगुसाईं जी के सेवक नंददास जी तिनकी वार्ता

— o —

प्रसग १

नददास जी तुलसीदास के छोटे भाई हते। सो विनकू नाच तमासा देखवे कैा तथा गान सुनवे को शोक बहुत हतो। सो वा देश मेसू एक सग द्वारका जात हतो। सो नददास जी ऐसे विचारे कें मे श्रीरणछोड जी के दर्शन कू जाऊँ तो अच्छौ है। जब विन नें तुलसीदास जी सू पूॅछी। तब तुलसीदास जी श्रीरामचद्र जी के अनन्य भक्त हते जासू विन नें द्वारका जायवे की नाहीं कही। जब नददास जी नहीं माने सो वा सग मे चले गये। सो मथुरा सूधे गये। मथुरा मे वा सग कूं बहुत दिन लगे सो नद दास जी सग कू छोड़कर चल दीने।

सो नददास जी द्वारका को रस्ता भूल गये सो कुरुक्षेत्र की आड़ी सीनद गाम मे जाय पहुँचे। सो वहाँ एक साहुकार क्षत्री रहतो हतो। तब नददास जी वाके घर भिक्षा लेवे गये। वाकी स्त्री को रूप सुन्दर हतो सो नददास जी देखकर मोहित होय गये। जब आछो दिन जाय के वाके दरवाजे पे बैठ रहते, जब वा क्षत्रानी को मुख देख लेते तब डेरा पे आवते हते। ऐसे करते बहुत दिन बीते।

हते। ऐसें श्रीगुसाईं जी की कृपा तें ऐसो मन को निरोध होय गयो हतो। जासू इनके भाग्य की बड़ाई कहा कहिये।

प्रसंग २

ता पाछें श्रीगुसाईं जी श्रीजी द्वार पधारे। सो नंददास जी कु आज्ञा करकें संग ले गये। तब नंददास जी नें जाय कर श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करे। सो साक्षात् कोटिकंदर्प लावण्य पूर्ण पुरुषोत्तम के दरशन भये। सो दर्शन करकें नंददास जी बहुत प्रसन्न भये श्रौर नंददास जी कु किशोरलीला की स्फूर्ती भई। तब उत्थापन को समय हतो। सो श्रीगुसाईं जी की श्राज्ञा पायकें यह पद गायो, 'सोहत सुरंग दुरंगी पाग कुरंग ललना केसे लोचन लोने'। यह पद गायकें श्रपने मन में नंददास जी ने बड़े भाग्य माने। फिर संध्या श्रारती समय दर्शन करे। तब ये पद गाये।

बनते सखन संग गायन के पाछे पाछे
श्रावत मोहनलाल कन्हाई॥ १॥
बनते श्रावत गावत गौरी॥ २॥
देख सेखी हरि को बदन सरोज॥ ३॥
घर नंदमहर के मिस ही मिस
श्रावत गोकुल की नारी॥ ४॥

या भाँत सु नंददास जी, ने इत्यादि श्रनेक पद गाये।

कर आओ। तब स्नान कर आये। तब श्रीगुसाईं जी नें श्रीनवनीत प्रिया जू के सन्निधान नाम निवेदन करवाये। पाछे नददास जी ने श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन सब आशयपूर्वक करे।

पाछें श्रीगुसाईं जी भोजन करके जब वैष्णवन कुं पातर धराई। तब नददास जी महाप्रसाद लेवे बेठे। तब महाप्रसाद लेत ही नददास जी कु देहानुसधान रह्यो नहीं। जब पातर पर बैठेई रहे। भगवल्लीला मे मन मग्न होय गयो। अनेक लीलान को अनुभव होवे लग्यो। भरे घर के चोर की सी नाई मोहित भये। ऐसें करते सवारो होय गयो। कछु सुद्धि रही नहीं। तब श्रीगुसाईं जी पधार कें नददास जी के कान मे कही कें नददास जी उठो दर्शन करो। जब नददास जी उठके ठाढे भये। तब नददास जी ने उठके श्रीगुसाईं जी के दर्शन करके ये पद गायो। 'प्रात समय श्रीवल्लभसुत को उठतहि रसना लीजिये नाम' इत्यादिक पद गाय के श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन करत मात्र ही भगवल्लीला की स्फूर्ती भई। जब पालने को पद गायो 'बालगोपल ललन को मोद भरी यशुमति दुलरावत'। इत्यादि भगवल्लीला सबधी बहुत नये करिके गाये।

सो नददास जी के ऊपर श्रीगुसाईं जी नें ऐसी कृपा करी तब सब ठिकानेन सो विनको मन खीचकें श्रीप्रभुन मे लगाय दीनो। सो वे क्षत्री की बहू जिनसो नददास जी को मन लाग्यो हतो सो वे क्षत्री की बहू नददास जी कुं रास्ता मे पाँच सात बार नित्य दीखती हती परन्तु नददास जी वाकी आडी देखते ही न

सके। सो रावण हर ले गये। और श्रीकृष्ण तो अनत अबलान के स्वामी हैं और जिनको पती भये पीछे कोई प्रकार को भय रहे नहीं है। एक कालावच्छिन्न अनत पत्नीन कु सुख देत हैं। जासू मैंने श्रीकृष्ण पती कीने हैं। सो जानोगे।

ये पत्र जब नंददास जी को लिख्यो तब तुलसीदासकु मिल्यो। तब तुलसीदास जी नें बात्र के बिचार कियो क नंददास जी को मन वहाँ लग गयो है। सो वे अब आवेंगे नहीं। सो उनकी टेक हमसू अधिकी है। हम तो अयुध्या छोड़ के काशी में रहे हैं और नंददास जी तो व्रज छोड़ के कहीं जाय नहीं हैं। इनकी टेक हमारी टेक सू बड़ो है। सो वे नंददास जी ऐसे कृपापात्र भगवदीय हुते।

प्रसंग ४

सो एक दिन नंददास जी के मन में ऐसी आई जो जैसे तुलसीदास जी नें रामायण भाषा करी है सो हमहूं श्रीमद्भागवत भाषा करें। ये बात ब्राह्मण लोगन नें सुनी तब सब ब्राह्मण मिल कें श्रीगुसाईं जी के पास गये। सो ब्राह्मण ने बीनती करी, जो श्रीमद्भागवत भाषा होयगो तो हमारी आजीविका जाती रहेगी। तब श्रीगुसाईं जी ने नंददास जी सु आज्ञा करी जो तुम श्रीमद्भागवत भाषा मत करो और ब्राह्मणन के क्लेश मे मत परो, ब्रह्मक्लेश आछो नहीं है और कीर्तन कर कें व्रजलीला गाओ। जब नंददास जी ने श्रीगुसाईं जी की आज्ञा मानी,

सो नददास जी कोई दिन श्रीगिरिराज जी रहते कोई दिन श्रीगोकुल आवते । जिनकू ससार ऐसो फीको लागतो जैसे मनुष्य कू उल्टी देखके बुरो लगे। जासू वे और ठिकाने जाते नाहीं हुते और श्रीमहाप्रभु जी और श्रीगुसाईं जी और श्रीगिरिराज जी और श्रीयमुना जी और श्रीव्रजभूमी इनको स्वरूप विचारयो करते। प्रभुन के दूसरे अवतारन पर्यंत कोई ठिकाने विनको मन नहीं लागतो हुतो। जासूं विननें श्रीस्वामिनी जी के स्वरूप वर्णन में कह्यो है 'चलिये कुवरकार सखी भेप कीजे'। या पद मे कह्यो है 'शिवमोहे जिन वे मोहनीजे कोई। प्यारी के पायन आज आन परे सोई'। ऐसी दृष्टी जिनकी ऊँची हती।

प्रसंग ३

सो वे नददास जी व्रज छोड़ के कहूँ जाते नहीं हुते। सो नददास जी के बड़े भाई तुलसीदास जी काशी में रहते हुते। सो विननें सुन्यो नददास जी श्रीगुसाईं जी के सेवक भये हैं। तब तुलसीदास जी के मन में ये आई के नददास जी नें पतिव्रता धर्म छोड़ दियो है आपने तो श्रीरामचद्र जी पती हुते। सो तुलसीदास जी नें ये विचार कें नददास जी कु पत्र लिख्यों जो तुम पतिव्रता धर्म छोड़कें क्यों तुमनें कृष्ण उपासना करी। ये पत्र जब नददास कु पहुँचो तब नददास जी ने बांच के यह उत्तर लिख्यो। जो श्रीरामचन्द्र जी तो एक पत्नीव्रत हैं सो दूसरी पत्नीनकु कैसे सभार सकेंगे। एक पत्नी हुं बरोबर सभार न

कू भजो। तब नंददास जो ने एक कीर्तन में उत्तर दियो। सो पद।

कृष्ण नाम जब तें मे श्रवण सुन्योरी आली
भूली री भवन हो तो बावरी भई री।
भरभर आवें नयन चितहूँ न परे चैन
मुखहूँ न आवै बेन तनकी दशा कछु श्रैार रही री ॥१॥

केतेक नेमधर्म व्रत कीने री मै
बहुविध अंगो अंग भई मै तो श्रवण मई री।
नंददास प्रभु जाके श्रवण सुने यह गति
माधुरी मूरत केधो कैसी दई री ॥२॥

ये पद सुनके तुलसीदास चुप रहे।

जब नंददास जी श्रीनाथ जी के दर्शन करवे कू गये तब तुलसीदासहूँ उनके पीछें पीछे गये। जब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करे तब तुलसीदास जी नें माथो नमायो नहीं। तब नंददास जी जान गये जो ये श्रीरामचंद्र जी बिना श्रैार दूसरे कू नहीं नमे है। जब नंददास जी नें मन में बिचार कीनो यहाँ श्रैार श्रीगोकुल में इनकु श्रीरामचंद्र जी के दर्शन कराऊँ तब ये श्रीकृष्ण को प्रभाव जानेंगे। तब नंददास जी ने गोवर्द्धननाथ जी सो बीनती करी सो दोहा।

आज की सोभा कहा कहूँ, भले विराजो नाथ।
तुलसी मस्तक तब नमे, धनुष बाण लेश्रो हाथ॥

भाषा न कर्यो। ऐसो श्रीगुसाईं जी की आज्ञा को विश्वास हतो। ऐसे परमकृपापात्र भगवदीय हुते।

प्रसग ५

सो नददास जी के बड़े भाई तुलसीदास जी हते। सो काशी जी ते नददास जी कू मिलवे के लिये व्रज में आये। सो मथुरा में आयके श्रीयमुना जी के दर्शन करे, पाछे नददास जी की खबर काढ के श्रीगिरिराज जी गये। उहाँ तुलसीदास जी नददास जी कु मिले। जब तुलसीदास जी नें नददास जी सु कही कें तुम हमारे सग चलो, गाम रुचे तो अयोध्या मे रहो, पुरी रुचे तो काशी मे रहो, पर्वत रुचे तो चित्रकूट में रहो, वन रुचे तो दडकारएय मे रहो, ऐसे बडे बड़े धाम श्रीरामचद्र जी ने पवित्र करे है। तब नददास जी ने उत्तर देव कु ये पद गायौ। सो पद ॥

जो गिरि रुचे तो बसो श्रीगोवर्द्धन,
गाम रुचे तो बसो नदगाम।
नगर रुचे तो बसो श्रीमधुपुरी,
सोभासागर अति अभिराम ॥१॥
सरिता रुचे तो बसो श्रीयमुनातट
सकल मनोरथ पूरण काम।
नददास कानन रुचे तो
बसो भूमि वृन्दावन धाम ॥२॥

यह पद सुनके तुलसीदास जी बोले जो ऐसो कोन सो पाप है जो श्रीरामचद्र जी के नाम सू न जाय। जासुं तुम श्रीरामचद्र

सो जब श्रीनाथ जी इच्छा करते तब चतुर्भुजदास कु साथ खेलवेकु ले जाते। और जैसी लीला के दर्शन करते तैसे पद गावते। सो ये चतुर्भुजदास ऐसे भगवत्कृपापात्र हते।

प्रसग २

सो एक दिन श्रीनाथ जी एक व्रजवासी के घर माखन चोरी करवेकु पधारे और चतुर्भुजदास जी कु सग ले पधारे। और उहाँ एक व्रजवासी की बेटी के चतुर्भुजदास नजर आये और श्रीनाथ जी तौ नजर नाहीं पड़े। ओर चतुर्भुजदास पकडाय गये सो विनने मार खाई। पाछें चतुर्भुजदास श्रीनाथ जी के पास गए। जब चतुर्भुजदास जी नें कह्यो जो महाराज मोकु तो आछी मार खवाई। श्रीनाथ ने कही जो तेरे मे सामर्थ्य ओछी नहीं हती जब तू क्यो न भाग आयो। सो यें चतुर्भुजदास श्रीनाथ के अतरग लीलामध्यपाती हते। ताते इनकी वार्ता कहा कहिये।

प्रसग ३

और जा दिन चतुर्भुजदास जीकु प्रथम लीला कौ अनुभव भयो वा दिनतें सर्व व्यापी वैकुठ सम्बन्धी लीला सर्वत्र दर्शवे लगी। सो ये सामर्थ्य इनके भीतर श्रीगोवर्द्धननाथ जी नें कृपा करिके धरी। जब कुम्भनदास जी कु पोढवे के दर्शन होते हते तब कुम्भनदास जी कीर्तन गायवे लगे। सो पद। "वे देखो बरत झरोखन दीपक, हरि पोढे ऊँची चित्रसारी"। सो इतनी तुक जब

श्रीगुसाईं जी के सेवक चतुर्भुजदास कुम्भनदास के बेटा तिनकी वार्ता

— ० —

प्रसंग १

सो वे कुम्भनदास जी श्रीनाथ जी के संग खेलत हते। सो एक दिन कुम्भनदास कु श्रीगोवर्द्धनाथ जी नें चार भुजा धरि के दर्शन दिये। वाही दिन बेटा को जन्म भयो जासू वा बेटा को नाम चतुर्भुजदास धरयो। ये बात कुम्भनदास जी की वार्ता में लिखी है।

सो वे चतुर्भुजदास जी ग्यारह दिन के भये ताही समय कुम्भनदास जी नें श्रीगुसाईं जी के पास ले जायके नाम सुनवाये। और चतुर्भुजदास जब इकतालिस दिन के भये तब कुम्भनदास जी नें श्रीगुसाईं जी पास ले जाय निवेदन करवाये। वा दिन तें चतुर्भुजदास में श्रीनाथ जी ने इतनी सामर्थ्य धरी जब इच्छा आवे तब मुग्ध बालक होय जाय और इच्छा आवे तो बोलने चालने सब अलौकिक बातें करवें लग जाय। जब कुम्भनदास जी एकांत में बेठे तब चतुर्भुजदास कुम्भनदास को भगवद्वार्ता करें और पूछें और पद गावें और जब लौकिक मनुष्य आय जाय तब चतुर्भुजदास मुग्ध बालक बन जाय। ऐसी सामर्थ्य श्रीनाथ जी चतुर्भुजदास मे धर दीनी।

सो जब श्रीनाथ जी इच्छा करते तब चतुर्भुजदास कु साथ खेलवेकु ले जाते। और जसी लीला के दर्शन करते तैसे पद गावते। सो ये चतुर्भुजदास ऐसे भगवत्कृपापात्र हते।

प्रसग २

सो एक दिन श्रीनाथ जी एक व्रजवासी के घर माखन चोरी करवेकु पधारे और चतुर्भुजदास जी कु सग ले पधारे। और उहाँ एक व्रजवासी की बेटी के चतुर्भुजदास नजर आये और श्रीनाथ जी तो नजर नाहीं पड़े। और चतुर्भुजदास पकडाय गये सो तिनने मार खाई। पाछें चतुर्भुजदास श्रीनाथ जी के पास गए। जब चतुर्भुजदास जी नें कही जो महाराज मोकु तो आछी मार खवाई। श्रीनाथ ने कही जो तेरे में सामर्थ्य ओछी नहीं हती जब तू क्यो न भाग आयो। सो ये चतुर्भुजदास श्रीनाथ के अतरग लीलामध्यपाती हते। ताते इनकी वार्ता कहा कहिये।

प्रसग ३

और जा दिन चतुर्भुजदास जीकु प्रथम लीला को अनुभव भयो या दिनतें सर्व व्यापी वैकुठ सम्बन्धी लीला सर्वत्र दर्शवे लगी। सो ये सामर्थ्य इनके भीतर श्रीगोवर्द्धननाथ जी नें कृपा करिके धरी। जब कुम्भनदास जी कु पोढवे के दर्शन होते हते तब कुम्भनदास जी कीर्तन गायवे लगे। सो पद। "वे देखो बरत झरोखन दीपक, हरि पोढे ऊँची चित्रसारी"। सो इतनी तुक जब

कुम्भनदास जी नें गाई तब चतुर्भुजदास जी गाय उठे। "सुन्दर वदन निहारन कारन, वहुत यतन राखे कर प्यारी"। ये सुनिकें कुम्भनदास जी ने निश्चय कर्यो जो इनकु श्रीगुसाईं जी की कृपा सों सपूर्ण अनुभव भयो। सो वड़ी दया मान के वहोत प्रसन्न भये। जा दिन तें चतुर्भुजदास कहुँ जाते अथवा नहीं जाते अथवा अवार सवार आवते सो कुम्भनदास जी कछू कहते नहीं। ऐसो जानते जो श्रीनाथ जी सग खेलत होयँगे। सो चतुर्भुजदास ऐसे भगवत्कृपापात्र भगवदीय हुते।

प्रसग ४

श्रोर एक दिन श्रीगोवर्द्धननाथ जी के शृङ्गार के दर्शन चतुर्भुजदास जी ने कीने श्रोर श्रीगुसाईं जी आरती दिखावते हुते। ता समै चतुर्भुजदास जी नें ये पद गाया।

"सुभग शृङ्गार निरख मोहन को ले दर्पण कर पियहि दिखावें। आपुन नेक निहारिये वलिजाऊँ आज की छवि कछू कहत न आवें"।

ता पीछे गोविंदकुण्ड ऊपर श्रीगुसाईं जी पधारे। तव एक वैष्णव ने पूछ्यो जो महाराज चतुर्भुजदास जी ने "आज की छवि कछु वरनि न जावै" ऐसे गायो श्रोर आपतो नित्य शृङ्गार करे हैं श्रोर आरसी दिखावें है। सो आज को अभिप्राय कछु समझ में नहीं आयो। जब श्रीगुसाईं जी ने कही सो चतुर्भुजदास सो पूछियो। तव वा वैष्णव नें चतुर्भुजदास सो पूछी। जब चतुर्भुजदास जी नें श्रोर भी पद गायो। सो पद। "माईरी आज

और काल और छिन छिन प्रति और और।" ये पद सुनिके या वैष्णव ने श्रीगुसाईं जी सो पूछ्यो जो भगवल्लीला ते। नित्य है और सर्वत्र है। जब चतुर्भुजदास जी ने और और क्यो कही।

तब श्रीगुसाईं जी ने आज्ञा करी। भगवल्लीला में विलक्षण पनो येई है जो नित्य है और क्षण क्षण मे नूतन लागत है और लीलास्थ जीवन कू और लीला के दर्शन करवे वारेन कू क्षण क्षण नूतन लगत है और नूतन रुचि उपजे है। सो गोपालदास जी नें गायो है। चोथे आख्यान में पाचमी तुक। "एक रसना किम कहूँ गुण प्रकट विविध विहार। नित्य लीला नित्य नूतन श्रुति न पामे पार।" ऐसी भगवल्लीला है। ये सुनके वो वैष्णव बहोत प्रसन्न भयो। और वे चतुर्भुजदास ऐसे कृपापात्र हुते जो जिनको नित्य लीला को अनुभव सर्वत्र होय गयो।

प्रसग ५

एक दिन श्रीगुसाईं जी श्रीगोकुल विराजते और श्रीगिरिधर जी सो लेके सब बालक श्रीजी द्वार विराजते हुते। तब उहाँ रास धारि आये। तब श्रीगोकुलनाथ जी नें श्रीगिरिधर जी सो पूछ के परासोली मे रास करायो। और रास में खूब गान भयो। जब चतुर्भुजदास जी सु श्रीगोकुलनाथ जी ने आज्ञा करी जो तुम कछु गावो। तब चतुर्भुजदास जी नें कही जो मेरे सुनवे वारे श्रीनाथ जी नहीं पधारे हैं जा सू मे कैसे गाऊँ। जब श्रीगोकुल-नाथ जी ने कही जो श्रीनाथ जी अबी पधारेंगे।

ये बात श्रीगोकुलनाथ जी की सत्य करवे के लियें श्रीनाथ जी जाग के श्रौर श्रीगिरिधर जी कु जगाय के श्रीनाथ जी परासोली पधारे श्रौर श्रीगिरिधर जी पधारे श्रौर चतुर्भुजदास कू श्रौर श्रीगोकुलनाथ जी कूं दर्शन भये। श्रौर कोई कु दर्शन भये नहीं। तब श्रीनाथजी के दर्शन करकें चतुर्भुजदास जी गावे लगे। जब श्रधिक सुख भयो रातहुं बढ गई श्रौर चतुर्भुज दास जी नें गायो सोपद। "श्रद्भुत नट भेख धरे यमुना तट श्याम सुंदर गुण निधान गिरिवर धरन रास रग राचें।" पद दूसरो। "प्यारी ग्रीवा भुजमेलत नृत्यत प्रिया सुजान." ऐसे ऐसे चतुर्भुजदास जी नें बहुत पद गाये। जब रास भयो तब परम श्रानद भयो।

फेर श्रीगिरिधर जी नें श्रीनाथ जी कु रात के जगे जान के सवारें जगाए नहीं। इतने मे श्रीगुसाईं जी गोकुल तें पधारे श्रौर पूंछी जो कहा समय है। जब श्रीगिरिधर जी नें कही जो श्रीनाथ जी जागे नहीं है। रात कु रास में जगे हते। जब श्री-गुसाईं जी नें कही जो श्रीनाथ जी तो सदैव रास करें हैं श्रौर सदैव जगें है जासू शखनाद करावो। जब शखनाद कराय के श्रीनाथ जी कु जगाए। फेर श्रीगोकुलनाथ जी कु श्रीगुसाईं जी ने श्राज्ञा करी। जो ऐसो श्राग्रह करिके श्रीनाथ जी कु पधरावने नहीं। एतो सदैव श्रपनी इच्छा तें रास करत है जासू बीनती करिके पधरावने नहीं। वे चतुर्भुजदास जी ऐसे कृपापात्र हते के श्रीनाथ जी के बिना दूसरे ठिकानें नहीं करत हते।

प्रसंग ६

एक दिन श्रीगुसाईं जी नें चतुर्भुजदास सो आज्ञा करी जो अपच्छराकुंड ऊपर जाय के रामदास भीतरीया कु बुलाय लावो और तुम फूल ले आवो। तब चतुर्भुजदास जाय के रामदास जी कु बुलाय के आप फूल बीनके आवते हते। जब श्रीगोवर्द्धन पर्वत की कदरा सू बाहेर श्रीनाथ जी श्रीस्वामिनी जी सहित पधारे और श्रीस्वामिनी जी नें मन में ये विचार कला जे यह लीला कोई जाने नहीं हैं। इतने मे चतुर्भुजदास जी नें दर्शन करिके ये पद गायो। ' गोवर्द्धन गिरि सघन कंदरा रेन निवास कियो पिय प्यारी।" और दूसरो पद गायो। "रजनी राज कियो निकुंज नगर की रानी।" ये पद सुनके श्रीस्वामिनी जी प्रसन्न भई। फेर चतुर्भुजदास जी फूल लेके श्रीगुसाईं जी के पास गए। सो वे चतुर्भुजदास जी ऐसे कृपापात्र हते जो श्रीनाथ जी के तथा श्रीस्वामिनी जी के मन की जानने वारे भये।

प्रसंग ७

सो चतुर्भुजदास की वह एक दिन श्रीनाथ जी के चरणारविंद में पहुँच गई जब चतुर्भुजदास जी कु सूतक आयो। सूतक म चतुर्भुजदास जी वन में बेठके नित्य कीर्तन करते। तब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी विाके चारो और दूर दूर खेले करते। जब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी नें आज्ञा करी जो चतुर्भुजदास तुम दूसरो विवाह करो। जब चतुर्भुजदास नें कही जो जात मे कन्या नहीं मिले है जब

श्रीनाथ जी ने कही जो तुम धरेजा करौ। जब चतुर्भुजदास जी ने धरेजा कर्यो। तब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी नित्य चतुर्भुजदास जी ऐसे अंतरंग भगवदीय हते।

प्रसंग ८

एक समय श्रीगुसाईं जी परदेस पधारे हते। तब श्रीगिरिधर जी की ऐसी इच्छा भई जो श्रीनाथ जी कु मथुरा मे अपने घर पधरावें तो ठीक। जब श्रीनाथ जी की आज्ञा लैके फागन वदी षष्ठी के दिन सैन पीछे श्रीनाथ जी कु मथुरा पधराए। और फागनवदी ७ के दिन बडो उत्सव मान्यो और जो कछु घर में हतो सो सर्वस्व अर्पण कर्यौ। और बेटी जी ने एक बीटी धर राखी हती। बेटी जी बालक हते जासू समझते नहीं हते। सो बिटी हूँ श्रीनाथ जी ने माँग लीनी। कारण जो श्रीगिरधर जी नें सर्वस्व अर्पण करबे की प्रतिज्ञा करी हती सो प्रतिज्ञा सत्य करिवे के लिये श्रीनाथ जी ने बीटी माँग लीनी।

और नित्य चतुर्भुजदास गिरिराज जी ऊपर बैठके बिरद के पद और हिलग के पद गायो करते। और श्रीनाथ जी नित्य विनकु संध्या समें गायन के संग पधारते दर्शन देते। सो वैशाख सुदि त्रयोदशी के दिन चतुर्भुजदास जी नें ये पद संध्या समें गायो। "श्रीगोवर्द्धन वासी साँवरेलाल तुम बिन रह्यो न जाय हों।" या पद की ऐसी तुक श्रीनाथ जी नें पधारतें ही सुनि तब करुणा व्याकुल भये और मन में ये विचार कर्यो जो सर्वथा काल इहाँ

पधारूँगो जासू भक्त को दुसह दुख देखके श्रीनाथ जी से रह्यो न गयो।

जब रात्र एक प्रहर रही तब श्रीनाथ जी ने वैशाख सुदि चौदस के दिन श्रीगिरिधर जी कु आज्ञा करी जो आज गोवर्द्धन पर्वत ऊपर राजभोग अरोगुगो जब श्रीगिरिधर जी नें मगला करायके श्रीनाथ जी कु पधराए। और पहेले मनुष्य पठाय के मंदिर खासा करायो और श्रीनाथ जी कु पधारते अबार होय गई। जासू राजभोग तथा शयनभोग एक समय मे आरोगे। या दिनकू आज दिन पर्यंत नृसिंह चतुर्दशी के दिन श्रीनाथ जी दोय समें राजभोग अरोगें हें। एक तो नित्य के समे और एक शयन-भोग क सग। वे चतुर्भुजदास श्रीनाथ जी के ऐसे कृपापात्र हते जो तिन बिना श्रीनाथ जी सो रह्यो न गयो।

प्रसंग ९

एक समय चतुर्भुजदास श्रीगुसाईं जी के सग श्रीगोकुल गए और श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन करे और बाललीला के तथा पालने के कीर्तन करे। और दर्शन करके फेर गोपालपुर आए जब कुम्भनदास नें पूछ्यो जो कहाँ गयो हतो। तब विननें कही श्रीगोकुल गयो हतो।

जब कुम्भनदास जी नें श्रीगुसाईं जी सो पूछी जो प्रमाण प्रकर्ण की लीला और प्रमेय प्रकर्ण की लीला मे कितनो भेद है। जब श्रीगुसाईं जी नें कही जो भगवल्लीला सब एक समान है।

कुम्भनदास जी कु किशोर लीला मे वहोत आसकी है जासू ऐसे बोले भगवल्लीला मे भेद समझनो नहीं और श्रीठाकुर जी विरुद्ध धर्म आश्रय हैं। एक कालावाच्छिन्न श्रीप्रभु सर्वत्र सब लीला करत हैं। ये सुनके चतुर्भुजदास जी वहोत प्रसन्न भए। वे चतुर्भुजदास श्रीगुसाईं जी के ऐसे कृपापात्र हते। जिनसू श्री गुसाईं जी कछु गुप्त नहीं राखते हते।

प्रसंग १०

और चतुर्भुजदास जी के पाछें चतुर्भुजदास जी के बेटा राघोदास हते। सो विनकू भगवल्लीला को अनुभव भयो जब राघोदास जी ने धमार गाई। सो धमार। "ए चल जाएँ जहाँ हरि क्रीडत गोपिन संगा।" ये धमार की जब दस तुक भई तब राघोदास की देह छूटी। सो भगवल्लीला मे प्रवेश भयो। राघोदास जी की बेटी ने डेढ तुक धर के धमार पूर करी। वे चतुर्भुज दास तथा विनके बेटा विनकी बेटी ये सब ऐसे कृपापात्र हते। ताते इनकी वार्ता कहाँ ताईं लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १० ॥ वार्ता संपूर्ण वैष्णव ॥ ३ ॥

नोट :—चतुर्भुजदास की वार्ता में तथा दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' में अन्य स्थलों पर भी गोकुलनाथ का नाम इस तरह आया है कि इस ग्रंथ के गोकुलनाथ कृत होने में सन्देह होने लगता है। 'चौरासी वार्ता में ऐसे उल्लेख नहीं मिलते।

श्रीगुसाईं जी के सेवक छीत स्वामी चौबे तिनकी वार्ता

— o —

प्रसग १

सो वे छीत स्वामी मथुरा मे रहते हते। और मथुरा जी मे पांच चौबे बडा गुडा हुते। और ठगाई करते और छीत चौबे तिन पांचन मे मुख्य हतो। सो तिनने विचार करयो जो कोई गोकुल में जाय है सो श्रीविट्ठल नाथ जी के बस होय जाय है। जासू ऐसो दीसे है जो श्रीविट्ठल नाथ जी जादू टोना बहोत जाने है। परन्तु हमारे ऊपर चले तब सांचो मानें। ये विचार पांचो चौबेन नें करयो।

तब एक खोटो नारियल और खोटो रुपैया लैके पांचो चौबे श्रीगोकुल आये। तब चार चौबे तो बाहेर बैठ रहे और मुख्य जो छीत चौबे हतो तिनकु भोतर पठायो। सो वे छीत चौबा नें खोटो नारियल तथा खोटो रुपैया जायके भेट धरयो। तब श्रीगुसाईं जी नें खवास सू आज्ञा करी जो या रुपैया के पैसा ले आव। जब रुपैया के पैसा आए और नारियल फोड्यो तब सुफेद गरी निकसी। तब छीत स्वामी देखिके मन में विचारी जो ये तो साक्षात् ईश्वर हैं। जब छीत स्वामी नें कही जो महाराज मोकु शरण लेओ। जब श्रीगुसाईं जी नें छीत स्वामी कु नाम सुनायो। पाछे श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन करवे कु गये।

भीतर देखें तो श्रीगुसाईं जी विराजे और बाहेर आयके देखे तो विराजे हैं। जब छीत स्वामी नें विचारी जो श्रीगुसाईं जी की ईश्वरता जीव सो जानी नहीं जाय है।

जब वे चार चोबे बाहर बेठे हते विनने छीत स्वामी कु बुलाये। तब श्रीगुसाईं जी नें आज्ञा करी जो तुमारे सगी वाहेर तुमकु बुलावत है सो तुम जाओ। तब छीत स्वामी नें वाहर आयके चारो चौबान से कही मोकु टोना लग गयो है तुम भाग जावो। नहि तो तुमको लग जायगो। ये सुनके चारो चौबे भाग गये। छीत स्वामी नें एक पद करिके गायो।

राग नट

भई अब गिरिधर सों पहेचान।
कपट रूप छलबे आयो पुरुषोत्तम नहि जान ॥१॥
छोटो वडो कछू नहि जान्यो छाय रह्यो अज्ञान।
छीत स्वामि देखत अपनायो श्रीविट्ठल कृपानिधान ॥२॥

ये पद सुनके श्रीगुसाईं जी प्रसन्न भए। और छीत स्वामी कु साक्षात् कोटि कदर्प लावराय पूर्ण पुरुषोत्तम के दर्शन भये। और भगवल्लीला को अनुभव भयो और श्रीगुसाईं जी तथा श्रीठाकुर जी के स्वरूप मे अभेद निश्चय भयो, दोनो स्वरूप एक हैं ऐसे जानन लगे।

तब छीत स्वामी गोपालपुर श्रीनाथ जी दर्शन कु गये। उहां श्रीनाथ जी के पास श्रीगुसाईं जी कुं देखे। जब वाहेर निकसवे

पूँछी जो श्रीगुसाईं जी कब पधारयें है। तब उहाँ के लोगन नें कही जो श्रीगुसाईं जी तो गोकुल बिराजे है। जब छीत स्वामी उहाँ ते श्रीगोकुल में आयके श्रीगुसाईं जी के दर्शन किये। जब छीत स्वामी नें ये निश्चय कियो जो श्रीनाथ जी तथा श्रीगुसाईं जी एक ही स्वरूप है। जब सू छीत स्वामी जी नें "गिरिधरन श्रीविट्ठल" ऐसी छाप के बहुत पद गाए। सो ये छीत स्वामी ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते।

प्रसंग २

सो वे छीत स्वामी बीरबल के पुरोहित हते। सो वे बीरबल के पास वर्सोंधी लेवे कु गए। तब सवार के मनमें छीत स्वामी नें यह पद गाये।

"जे वसुदेव लिये पूरण तप, सोई फल फलित श्रीवल्लभ देह।"

ये पद सुनिके बीरबल बोले जो मै तो वैष्णव हूँ परन्तु ये बात देशाधिपति सुनेंगे तो तुम कहा जवाब देओगे वे तो म्लेच्छ है। तब छीत स्वामी बोले जो देशाधिपति पूछेंगे तो मै नीके जवाब देउँगो और मेरे मनसू तो तुही म्लेच्छ है। आज पीछे तेरा मुख न देखूँ गों ऐसे कहेके छीतस्वामी स्वामी चले गए।

जब ये बात देशाधिपती नें सुनी तब बीरबल सू पूँछी जो तुमारे पुरोहित क्यों रिसाय गए। तब बीरबल नें सब बात देशाधिपति आगे कही। ब्राह्मण लोग वृथा रिस बहुत करे है। तब देशाधिपती नें कही जो तुम और हम नाव मे बेठे हते जब

दीक्षित जी नें मोकुं आशीर्वाद दियो हतो। तब मैनें मणी भेट करी हती। वे मणी कैसी हती जो पाँच तोला सोना नित्य देती हती। सो वे मणी दीक्षित जी ने श्रीयमुना जी में पटक दीनी। जब मेरे मन में बड़ो गुस्सा लग्यो तब मैनें मणी पाछी मांगी। तब दीक्षित जी नें श्रीयमुना जी मे सु खोव भरिके मणी काढ़ी तब हमकुं कही तुमारी होय सो पहिचान लेओ। जब हमकूं ये निश्चय भयो ये साक्षात् ईश्वर है, ईश्वर बिना ऐसो कारज नहीं होयगो। ये बात विचार करतें तुमारे पुरोहित की सब बात साची है सो तुमनें क्यो विचार न कलौ। ये बात सुनके बीरबल वहोत खिसातो भयो। और कछू बोल्यो नहीं।

और ये बात श्रीगुसाईं जी नें सुनी तब लाहोर के वैष्णव आये हते तिनसो आज्ञा करी जो छीत स्वामी की खबर राखते रहियौ। जब छीत स्वामी बोले जो मैंने वैष्णवधर्म विक्रय करवेकु लियौ नहीं है। मेरो तो विश्रात घाट है सो आपकी कृपा सो सब चलेगो। ये बात सुनके श्रीगुसाईं जी वहोत प्रसन्न भये।

प्रसग २

और एक दिन बीरबल देशाधिपती सों रजा लेके श्रीगोकुल में जन्माष्टमी के दर्शकु आयो। पाछे वेष पलटाय के देशाधिपती हूं छाने छाने आयो। तव जन्माष्टमी के पालना के दर्शन करे मनुष्यन की भीड़ मे। तब देशाधिपती कु श्रीगुसाईं जी बिना और कोई नें पहिचान्यो नहीं। तब छीत स्वामी कीर्तन करते हते

और श्रीगुसाईं जी श्रीनवनीत प्रिया जी कु पालना झुलावते हते। तब छीत स्वामी नें ये पद गायो।

प्रिय नवनीत पालनें झूले श्रीविट्ठलनाथ झुलावें हो।
कबहुंक आप संग मिल झूलै कबहुक उतर झुलावें हो॥ १॥
कबहुंक सुरग खिलोना लै लै नाना भांति खिलावें हो।
चकई फिरकनी ले बिंगीट्ठ झुणझुण हात बजावें हो॥ २॥
भोजन करत थाल एक झारी दोउ मिल खाय खवावें हो।
गुप्त महारस प्रकट जनावे प्रीति नई उपजावें हो॥ ३॥
धन्य (ध) न्य भाग्य दास निज जनके जिन यह दर्शन पाए हो।
छीत स्वामी गिरधरन श्रीविट्ठल निगम एक कर गाए हो॥ ४॥

ऐसे दर्शन छीत स्वामी कु भए। और देशाधिपतीकु हूँ ऐसे दर्शन भए। और मनुष्यनकु साधारण दर्शन भए। तब देशाधिपतीकु महाप्रसाद दिखाये।

तब देशाधिपती आगरे आये। फेर दूसरे दिन बीरबल हूँ आए। तब देशाधिपती नें बीरबल सू पूछी जो कहा दर्शन किये। तब बीरबल ने कही श्रीनवनीत जी पालना झूलते हते और श्रीगुसाईं जी झुलावते हते। तब देशाधिपती नें कही ये बात झूठी है। श्रीगुसाईं जी पालना झूलते हते और श्रीनवनीत प्रिया जी झुलावते हते मोकु ऐसे दर्शन भए हैं। और छीत स्वामी तुमारे पुरोहित ऐसे कीर्तन गावते हते। और मै तेरे पास ठाड़ो हते। तब बीरबल नें कही मोकु ऐसे दर्शन क्यू नहीं भये। तब

देशाधिपती नें कही तुमकु गुरू के स्वरूप को ज्ञान नहीं है और तुमारे पुरोहित छीत स्वामी जिनकु इन बात को अनुभव है ऐसेन सों तुमारी प्रीती नहीं है। जब तुमकुं ऐसे दर्शन काहेकु होवें। सो ये छीत स्वामी ऐसे कृपापात्र हते। वार्ता संपूर्ण। वैष्णव ॥ २॥

श्रीगुसाईं जी के सेवक गोविंद स्वामी सनाढ्य ब्राह्मण महावन में रहते तिनकी वार्ता

— ० —

प्रसंग १

प्रथम गोविंददास आतरी गाम मे रहते। तहाँ गोविंद स्वामी कहावते। और आप सेवक करते। गोविददास परम भगवद्भक्त नित्य याही रीतो सो रहते। जो श्रीभगवत् चरणारविंद की प्राप्ति कैसें होय याही वात की तलासी करत रहते हते।

एक समय गोविददास आतरी गाम ते व्रज को आये। और महावन मे आयके रहे। काहे तें जो यह व्रजधाम है। इहाँ भगवत् चरणारविंद की प्राप्ति होयगी। और गोविंददास कवि हते। सो आप पद करते। सो जो कोऊ इनके पद सीख कें श्रीगुसाईं जी के आगें आय कें गावें। तिनके ऊपर श्रीगुसाईं जी प्रसन्न होते। सो गावनहारे गोविंद स्वामी के आगे आयकें कहते। जो तुमारे पद सुनके श्रीगुसाईं जी बहुत प्रसन्न होत है। ये वार्ता सुनि गोविंद स्वामी नें ऐसो विचार कियो जो श्रीगुसाईं जी कूं मिलें तो ठीक।

तब एक समय श्रीगुसाईं जी को सेवक महावन गयो हतो। सो भगवदिच्छा ते श्रीगुसाईं जी के सेवक को और गोविंद स्वामी को मिलाप भयो। या वेष्णव की गोविंद स्वामी की आपस मे

बातचीत भई। जब गोविंद स्वामी नें कही कें श्रीठाकुर जी को अनुभव कैसे होय। जो मोकु बहुत दिन मों या बात की आतुरता है तातें कहो। तब वा वैष्णव नें गोविंद स्वामी की आतुरता देखिके कह्यो। जो आजकल श्रीठाकुर जी कु श्रीविट्ठल नाथ श्रीगुसाईं जी नें बसकर राखें है। तातें श्रीठाकुर जी और ठोर कहुं जाय सकत नहीं। श्रीठाकुर जी तो श्रीगुसाईं जी के हाथ हैं। सो यह सुनके गोविंद स्वामी कु अति आतुरता भई। तब गोविंद स्वामी नें उन वैष्णव सों कही। जो मोकु श्रीगोकुल में श्रीगुसाईं जी के पास ले चलो। तब उहां से उठे सो श्रीगोकुल में आये।

तब श्रीगुसाईं जी ठकुरानी घाट ऊपर सध्या तर्पण करत हते। वा वैष्णव नें गोविंद स्वामी कु श्रीगुसाईं जी को दर्शन करायो। गोविंद स्वामी दर्शन करिके मन मे समझें ये कर्म मार्गीय दीखत हैं। सो कहा कारण होयगो। तब गोविंद स्वामी कु देखके श्रीगुसाईं जो बोले जो आवो गोविंद स्वामी बहुत दिन सू देखे। तब गोविंद स्वामी नें कही महाप्रभु अब ही आयो हूँ। तब गोविंद स्वामी नें अपने मन में विचार किये की आपने मोकु कोई दिन देख्यो नहीं हैं सो कैसे जान गये। यामें कछु कारण दीसत है।

जब श्रीगुसाईं जी मदिर में पधारे। तब गोविंद स्वामी नें वीनति करी हे महाप्रभु मोकू कृपा करिके शरण लेओ। तब श्रीगुसाईं जी नें कही न्हाय आवो। तब वे न्हाय आये। तब

श्रीनवनीत प्रिया जी के सनिधि मे नाम निवेदन करायो। तब गोविंद स्वामी कु साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम कोटिकंदर्प लावण्य के दर्शन भये। और सब लीलान को अनुभव भयो। श्रीगुसाईं जी श्रीनवनीत प्रिया जी की सेवा करके बाहिर पधारे। तब गोविंद स्वामी नें वीनती करी। जो आपनें कपट रूप दिखावत हो। साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम रूप होय के वेदोक्त कर्म करत हो। सो हम जैसेन कू मोह होय है, जब श्रीगुसाईं जी ने आज्ञा करी। जो भक्ति है सो फूल को वृक्ष है, और कर्म मार्ग है सो कांटन की बार है। तासू कर्म मार्ग की बार बिना भक्ति मार्ग जो फूल को वृक्ष वाको रक्षा न होय। ये सुनके गोविंद स्वामी बहुत प्रसन्न भये। गोविंद स्वामी ऐसें कृपापात्र भगवदीय भये।

प्रसंग २

सो गोविंददास महावन के टेकरा पर रहते हते। और नये कीर्तन करके गावत हते और उहां श्रीठाकुर जी सुनवेकु पधारते हते। जब उहां मदनगोपालदास कायथ कीर्तन लिखिवेकु आवते हते। सो एक दिन श्रीठाकुरकु गोविंदस्वामी नें कही। इहां तांई आप नित्य श्रम करो हो। सो आपको गान सुनवे की बहुत इच्छा दीखे हैं। आपकु गान को अभ्यास है। यातें आपकु कछु गायो चहिये। तब आपनें कछु गान कियो। तब गान सुनके श्रीस्वामिनी जी पधारी। जब ताल स्वर बरोबर बजावे लगे तब गोविंदस्वामी धन्य धन्य कहन लगे। और आपनें भाग्य की सराहना करन लगे।

जब मदनगोपालदास कायथ बोले। जो इहाँ कोई आदमी तो दिसे नहीं है। तुम कौनसू बात करत हो। तब गोविंदस्वामी कछु बोले नहीं। बात गुप्त राखी। पाछे एक दिन श्रीगुसाईं जी नें पूँछी जो श्रीठाकुर जी कैसे गावें ह। तब गोविंदस्वामी नें कही श्रीठाकुर जी वहोत आछे गावें हैं। परतु ताल स्वर श्रीस्वामिनी जी वहोत आछो देत हैं। ये सुनके श्रीगुसाईं जी मुसकाय के चुप होय रहे।

प्रसग ३

सो गोविंदस्वामी जब श्रीगोकुल में रहते हुते। सो उहाँ आतरिगाम में पहले गोविदस्वामी के सेवक हते सो श्रीगोकुल आये। सो पूछत पूछत विनके पास गये। जायके पूँछी जो गोविदस्वामी कहा हे। तब विननें कही गोविंदस्वामी मर गये। तब तिनमे सू एक पहेचानतो हतो। जब वानें कही आप क्यों हमारी हाँसी करो हो। जब गोविंदस्वामी नें कही हमने स्वामी पनो छोड़ दियो। जासु तुम ऐसे समझो जो मर गये हैं। जब विननें वीनती करी जो अब हम सेवक कौनके होंय। जब गोविंद स्वामी नें विनकू ले जायके श्रीगुसाईं जी के सेवक कराये। सो गोविदस्वामो के सग सो विनकु भगवत्प्राप्ती भई। जिनके सग ते सहज भगवत्प्राप्ती होवै विनकी कृपातें कहा न होवै सब होवै। विनिकी वात कहा कहिये।

प्रसग ४

सो वे गोविंदस्वामी श्रीगोकुल में रहते। परन्तु श्रीयमुना जी

मे पाँव नहिं देते । श्रीयमुना जी कु साक्षात् श्रीस्वामिनी जी अष्टसिद्धी के दाता जानते । जैसे स्वरूप श्रीमहाप्रभू जी नें यमुनाष्टक में वर्णन कियो है । वैसे श्रीगुसाईं जी की कृपा से गोविंदस्वामी जानते हुते जासु श्रीयमुना जी मे पाँव नहीं धरते हुते। और श्रीयमुना जी के दर्शन करते, और दडवत करते, और पान करते।

सो एक दिन श्रीवालकृष्ण जी और श्रीगोकुलनाथ जी गोविंदस्वामीकु पकड के श्रीयमुना जी मे नहायवे लगे। जब गोविंद स्वामी नें वीनती करी जो ये मल मूत्र को भरयो देह श्रीयमुना जी के लायक नहीं है। श्रीयमुना जी साक्षात् स्वामिनी हैं। जासू ये अधम देह स्पर्श करवे योग्य नहीं है। श्रीयमुना जी कु तो उत्तम सामग्री चहिये। ये सुनके श्रीवालकृष्ण जी और श्रीगोकुल नाथ जी चुप कर रहे। सो वे गोविंदस्वामी ऐसो स्वरूप श्रीयमुना-जी को जानत हुते।

प्रसंग ५

गा गोपकैरनुवन नयतो सदार
वेणुस्वनै कलपदैस्तनुभृत्सु सख्य ।
अस्पदन गतिमतां पुलकस्तरूणां
निर्योगपाश कृत लक्षणयोर्विचित्र ॥

या श्लोक को व्याख्यान श्रीगुसाईं जी गोविंदस्वामी के आगे कहवे लगे। जब कहते कहते अर्धरात्र बीती तब श्रीगुसाईं जी पोढे। गोविंदस्वामी घरकू चले । तब श्रीवालकृष्ण जी तथा

श्रीगोकुलनाथ जी तथा श्रीरघुनाथ जी तीनो भाई वैष्णवन के मडल में विराजत हुते।

जब गोविंद स्वामी नें जायके दडवत करी। तब श्रीगोकुल नाथ जी नें पूछे जो श्रीगुसाईं जी के इहाँ कहा प्रसग चलतो हुतो। जब गोविंद स्वामी नें ये श्लोक की सुबोधिनी जी को प्रसग कह्यो। फिर कह्यो आपको व्याख्यान आप करें यामें कहा केहेनो। जाके स्वरूप को वेद हूँ नहीं जान सकें याको व्याख्यान वे आप ही करें तब होय। जब ऐंसे कह्यौ तब श्रीगोकुलनाथ जी नें दोनौ भाइन सो कही जो गोविद स्वामी नें श्रीगुसाईं जी को स्वरूप कैसो जान्यो है। श्रौर इनके ऊपर आपनें कैसी कृपा करी है सो इनके भाग्य को कहा वर्णन करिये ये कहिके श्रीगोकुल नाथ जो चुप होय रहै॥

प्रसग ६

सो गोविंद स्वामी श्रीनाथ जी के सग खेलते हुते। सो एक दिन अपछरा कुण्ड सो गोवर्द्धन पर्वत ऊपर होय कें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के सग गोविंददास आवते हुते। उहाँ से राजभोग की आरती भई ऐसी आवाज सुनी। जब गोविंद स्वामी नें कहि श्रीनाथ जी तो अबी आवत हैं। राजभोग कैान नें अरोगे हैं। गोविंद स्वामी नें जायके श्रीगुसाईं जी सो बीनती करी। जब श्रीगुसाईं नें दूसरो राजभोग सिद्ध कराय के धरायो।

श्रौर गोपालदास भीतरिया नें श्रीगुसाईं जी सो बीनती करी। जो एक दिन पूछरी की श्रौरतें गोविंददास श्रीनाथ जी के

संग आवते मैंने देखे हते। जब श्रीगुसाईं जी नें कही। जो कुम्भनदास तथा गोविंद स्वामी तथा गोपिनाथ दास ग्वाल ये तीनो श्रीनाथ जी के एकांत के सखा हैं। सो इनकु अधिकार श्रीमहाप्रभू जी नें दियो है। ये बात सुनके गोपालदास जी बहुत प्रसन्न भये और अपने मन मे कहवे लगे। जो हम भितरिया भये तो कहा भयो। सो वे गोविंद स्वामी ऐसे भगवदीय कृपा पात्र हते।

प्रसंग ७

सो एक दिन गोविंद स्वामी उत्थापन के समे श्रीनाथ जी के दर्शन कु गये। जब देखें तो श्रीनाथ जी के पाग के पेच खुल रहे हते। तब गोविंद स्वामी नें कही कें पाग के पेच क्यौ खोल डारे हे। जब श्रीनाथ जी नें कही तू पाग के पेंच सवारि दे। तब गोविंद स्वामी नें भीतर जाइके पाग के पेंच सवार दिये। तब भीतरिया नें श्रीगुसाईं जी सो कही जो गोविंददास नें अपरस छिवाय दीन्ही है। पाछें श्रीगुसाईं जी नें आज्ञा करि जो गोविंददास सें श्रीनाथ जी नहीं छुआय जाय। ये तो श्रीनाथ जी के संग सदैव खेलें हैं। सो गोविंद स्वामी ऐसे कृपापात्र हते।

प्रसंग ८

एक दिन श्रीगुसाईं जी श्रीनाथ जी को शृङ्गार करत हते। तब गोविंदस्वामी जगमोहन में कीर्तन करत हते। तब श्रीनाथ जी नें गोविंददास कु आठ काकरी मारी। जब गोविंदस्वामी नें

एक कांकरी मारी। तब श्रीनाथ जी चमक उठे। जब श्रीगुसाईं जी नें कही गोविंददास यह कहा किया। तब गोविंदस्वामी नें कही। हे महाराज आपको तो पूत और को मूली कर। जो आठ घखत मोकु काकरी मारी जब आप कछु नहीं बोले। ये सुनके श्रीगुसाईं जी चुपकरि रहे। सो गोविंददास जी कु ऐसो सखा भाव सिद्ध भयो हतो।

प्रसंग ९

एक दिन गोविंददास की बेटी देस में सो आई। परन्तु गोविंदस्वामी कोई दिन वा बेटी सु बोले नहीं। जब कान्हबाई नें कही जो बेटी सु एक दिन तो बोलो। तब विननें कही जो मन तो एक है इनको लगाऊँ के उनको लगाऊँ। फेर कछू दिन रहिके बेटी देसकु जावे लगी। जब वहु बेटिन नें साड़ी चोली पठाई। तब गोविंद स्वामी के मन मे दया आई। जो गुरु के घर को अनप्रसादी लेवेगी तो याको बिगार होयगो। वे गोविंद स्वामी कोई दिन बेटी से बोलते न हते। तो परन्तु दया के लिये बोले जो तु ये लेवेगी तो तेरो बुरो होयगो। जब बेटी नें कही मोकुं समज नहीं हती। तो मोकु तुमनें बड़ी कृपा करिके रस्ता बतायो। तब वे सब कपडा पाछे पठाय दिये। बेटी अपनें घर को गई। सो वे गोविंद स्वामी गुरु की अश सो ऐसे डरपत हते।

प्रसंग १०

और फागन के दिन हते। सो सेन भोग सरायकें श्रीगुसाईं जी बीडी अरु गावत हते। तब गोविंद स्वामी धमार गावत हते।

सो धमार श्रीगोवरधनराय लाला। ये धमार पूरी करे विना गोविंद स्वामी चुप कर रहे। जब श्रीगुसाईं जी ने आज्ञा करी गोविंददास धमार पूरी करो। तब गोविंद स्वामी नें कही महाराज धमार तौ भाज गई है। वे तो घर में जाय घुसे। खेल तो वद भयो अब कहा गावू। ये सुनके श्रीगुसाईं जी चुप कर रहे। पाछे वैठक में पधारे। जब एक तुक आपनें बनाय के गोविंद स्वामी के नाम की था धमार में धरी। वा दिन सू गोविंद स्वामी की धमार लोक मे साढ़े बारह कही जाय है। सो गोविंद स्वामी ऐसे कृपापात्र हते। जो लीलो के दर्शन करिके गान करते हते॥

प्रसंग ११

सो वे गोविंद स्वामी महावन के टेकरा पर नित्य गान करते हते। श्रीनाथ जी नित्य सुनिवे कु पधारते हते। श्रीर श्रीनाथ जी संग गानहूँ करते हते। श्रीर वे गोविंद स्वामी भगवल्लीला मे अष्ट सखान में हते। सो कोई समे श्रीनाथ जी चूकते सो गोविंद स्वामी भूल काढते। श्रीर गोविंद स्वामी चूकते जब श्रीनाथ जी भूल काढते। श्रीनाथ जी तथा गोविंद स्वामी के गान सुनिवे के लिये श्रीगोकुलनाथ जी नित्य पधारते श्रीर एक मनुष्य बैठाय राखते। जो श्रीगुसाईं जी भोजन करवें कु पधारें तव मोकु बुलाय लीजो।

एक दिन था मनुष्य के मन में ऐसी आई। जो श्रीगोकुल नाथ जी नित्य श्रीगुसाईं जी सो छाने पधारते है। एक दिन जो मे

न बोलाओ तो गुसाईं जी सब जान जाएगे। जब श्रीगोकुल नाथ जी तो नित्य जाते बंद होय जाएगे। ये समझके वे मनुष्य एक दिन बुलायवे न गयौ। जब श्रीगुसाईं जी भोजन को पधारवे लगे। तब सब लाल जी आए। श्रीगोकुल नाथ जी न आए। तब श्रीगुसाईं जी नें दूसरे मनुष्य कुं आज्ञा करी जो गोविंद स्वामी के पास वल्लभ जी बैठें हैं तिनको बुलाय लाव।

जब दूसरो मनुष्य लायो तब वे मनुष्य जो जान के बोलावे नहीं गयो हतो सो पश्चात्ताप करने लग्यो। जो श्रीगुसाईं जी तो सब जानते हैं मैंने काहे को श्रीगोकुल नाथ जी सो कुटिलता करि ऐसो पश्चात्ताप भयौ। सो वे गोविंद स्वामी ऐसो कृपापात्र हते। जो तिनके संग श्रीनाथ जी क्षण क्षण आयके बिराजते हते।

प्रसंग १२

वे गोविंद स्वामी पाग आछी बाधते हते। सो टूक टूक पाग होती तब कोई कु खबर न हती। जब एक दिन एक ब्रजवासी नें गोविंद स्वामी की पाग आछी जान के उतार लीनी। तब गोविंद स्वामी नें कही सारे यें टूक सभार के घर राखियो काल तेरे घर कु आयके ले जाऊंगो। वे ब्रजवासी नें पाँव पर के पाग पाछी दीनी। वे गोविंददास कु पाग बाधवे की ऐसी चतुराई हती।

प्रसंग १३

सो गोविंददास नित्य जसोदा घाट पर जाय बैठते। सो उहाँ एक दिन एक वैरागी गायवे लग्यो। सो राग ताल स्वर हीन

हतो। जब गोविंद स्वामी नें कही जो तु मत गावे या गायिवे सो कहा होत है। तब वा वैरागी नें कही मे तो मेरे राम को रिझावत हो। जब गोविंद स्वामी नें कही राम तो चतुर शिरोमणी है सो कैसे रीझेंगे। जो तेरो साचो भाव होय तो मन में नाम लिये सो रीझेंगे। सो वे गोविंद ऐसे नि शक हते।

प्रसंग १४

सो एक दिन श्रीनाथ सामढाक के ऊपर चढिके विराजते हते और मुरली बजावत हते, और गोविंददास दूर सो टेकरा के ऊपर बैठे देखते हते। और वाही समय श्रीगुसाईं जी न्हाय कें उत्थापन करवे के लिये श्रीगिरिराज ऊपर पधारे। श्रीनाथ जी ने सामढाक पैं सु देखे और उतावल सो कूदे और वागा को दावन फट गयो और लीर झाड पैं रहि गई। तब श्रीगुसाईं जी नें केवार खोलि के उत्थापन करे देखें तो वागा को दावन फट्यो है। जब मनुष्यन सो पूछी जो इहाँ कोई आयो तो नहीं हतो। तब सबनें नाहीं कही। जब आप विचार करवे लगे।

तब गोविंददास नें कही जो आप या बात को विचार कहा करे हे। लरिका को सुभाव जाने नहीं हे। जो बहुत चचल है स्याम ढाक पे सू कूदि के वागा को दामन फाड्यो हैं। सो आप चलो तो दिखाऊँ ऐसे लीर लटक रही है। जब श्रीगुसाईं जी पधार के वा लीर उतारि लाये। तब श्रीगुसाईं जी श्रीनाथ जी सो पूछी जो आपने उतावल काहें को करी। तब श्रीनाथ जी

जी नें कही जो उत्थापन को समय भयो हतो। श्रौर आप न्हाय के पधारे हते जासूं उतावल भई। वा दिन तें ऐसौ वदो वस्त कस्रौ जो तीन वेर घंटानाद तथा तीन वेर शखनाद करि के श्रौर वीस पल रहिके मंदिर के किंवार खोल के उत्थापन करनें। सो वे गोविंददास ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते।

प्रसंग १५

एक दिन आगरे मे अकबर पातशाह नें सुन्यो जो गोविंद स्वामी बहुत आछे गावत हैं श्रौर निरपेक्ष हे श्रौर नि.शक हैं। जब इनके मुख को राग कैसे सुन्यो जाय। ये विचार करिके पात शाही वेष पलटके श्रीगोकुल में इकेले आए। जब गोविंददास जसोदा घाट पर भैरव राग अलापत हते तब वा पातशाह नें वाहवा वाहवा करी। जब गोविंददास नें कही ये राग छी गयो। जब वानें कही जो मै पातशाह हूँ। जब विनने कही जो तुम पात शाह हो तो पातशाही करो। परन्तु ये राग तो तुमारे सुनबे सू छिवाय गयो। जब पातशाह नें विचार कस्रो एक देस को मै राजा हूँ श्रौर इनको तो त्रिलोकी को वैभव फीको लगे है। जासू ये काहे कू आपने हुकुम में रहेंगे। ये विचारिके पातशाह चले गये। श्रौर गोविंद स्वामी नें वा दिन सू भैरव राग गायो नहीं। वे गोविंद स्वामी ऐसे टेकी भगवदीय हते।

प्रसग १६

श्रौर वे गोविंद स्वामी के सग श्रीनाथ जी नित्य वन में

खेलते। और कोई दिन गोविंददास को घोडा करते और कोई दिन हाथी करते। ऐसे नित्य क्रीडा करते। सो एक दिन श्रीनाथ जी ने गोविंद स्वामीकु घोडो करयो हतो और ऊपर आप असवार भये हते। सो गोविंद स्वामी नें घोडा की सी न्याई लघुशंका करी। ये वातें एक वैष्णव नें देखी। सो श्रीगुसाईं जी सो जाय के कही। जब श्रीगुसाईं जी नें आज्ञा करी जब गोविंद स्वामी हाथी घोडा होते हैं सो हाथी घोडा को स्वाग पूरो न करें तो कैसे होवै। और इन वातन मे तुम मत पडो। ये वात सुनके वे वैष्णव चुप करि गयो। सो वे गोविंद स्वामी ऐसे कृपापात्र हते।

प्रसंग १७

एक दिन गोविंददास श्रीगुसाईं जी के संग मथुरा जी मे केशवराय जी के दर्शन कूं गये। तब उष्णकाल हतो। और सब जरी को वागा जरी की ओढ़नी देख के गोविंददास नें केशवराय जी सो पूंछो जो नीके तो हो। सो सुनके केशवराय जी मुसकाये। जब श्रीगुसाईं जी नें कही जो गोविंददास ऐसे न वोलिये। तब गोविंददास नें कही महाराज मादी मनुष्य को पोसाक पहेरयो है जब कैसे न पूंछो जाय। ये सुनिके श्रीगुसाईं जी चुपकर रहे।

प्रसंग १८

और एक दिन श्रीनाथ जी के राजभोग आवते हते। तब भीतरिया सो गोविंददास स्वामी नें कही जो राजभोग धरे पहिले

मोकू प्रसाद लेवाव। जब भीतरिया नें थार पटिक दियो और श्रीगुसाईं जी कू पुकार करि। जब श्रीगुसाई जी ने गोविंददास सों पूछी यह कहा। जब गोविंद स्वामी ने कही जो आप सग में मोकु खेलवे कु ले जाए हैं। और जो पाछे प्रसाद लेवेकू रहि जाऊँ तो वन मे पाछे मोकु श्रीनाथ जी मिले नहीं हैं जब कैसे करूँ। ये सुनके श्रीगुसाईं जी नें ऐसी बदोबस्त करी जो राजभोग आवे के समय गोविददासकु प्रसाद लेवावनो ऐसी भडारी सो आज्ञा करि। सो वे गोविद स्वामी ऐसे कृपापात्र हते जिन विना श्रीनाथ जी रहि नहीं सके॥

प्रसंग १९

एक दिन श्रीनाथ जी गोविंद स्वामी सग खेलते हते। तव श्रीनाथ जी के ऊपर दाव आयो। तव उत्थापन को समय भयो। तव श्रीनाथ जी भाग के मदिर मे घुस गये। तब मदिर में भीतर जायकें श्रीनाथ जी कु गीली मारि। तव सेवक टहेलवान नें गोविददास कु धक्का मार के बहेर काढ दिये और उत्थापन भोग धरयो। तव गोविंद स्वामी जाय के रास्ता मे बैठे और कहे जो अवि गायन के सग श्रीनाथ जी ये रास्ता पर आवेंगे और याको मार देउगो।

पीछे श्रीगुसाईं जी न्हात के मदिर में पधारे। देखें तो श्रीनाथ जी अनमने होय रहे हैं और उत्थापन कि सामग्री अरोगें नाहीं है। तव श्रीगुसाईं जी ते श्रीनाथ जी सो पूछे जो कैसे हो। तव

श्रीनाथ जी नें कहि जे। जहां सुधि गोविंददास कु नहिं मनावोगे तहां सुधि मोकु कछू आवेगो नहीं, काहे ते मोकु रस्ता चले बिना और वाके संग खेले बिना सरेगो नहिं। अबि रस्ता में जाउ तो आनगिनतोल कि मार देवेगो। या चिंता के लिये मोकु कछू भावे नहि है। गोविंददास आवेगो जब कछु भावगा।

ये बात सुनके और श्रीनाथ जी को भक्त वत्सलता देखके श्रीगुसाईं जी को हृदय भर आयो। तब गोविंददास कु बुलाय के और मनायके श्रीनाथ जी सु बीनति करि जो ये हाजिर हैं अब आय गये हैं। तब श्रीनाथ जी आरोगे। सो वे गोविंददास ऐसे कृपापात्र हते। प्रसंग १६ ॥ वार्ता संपूर्ण ॥

Printed by PANZAN ALI SHAH at the National Press Allahabad